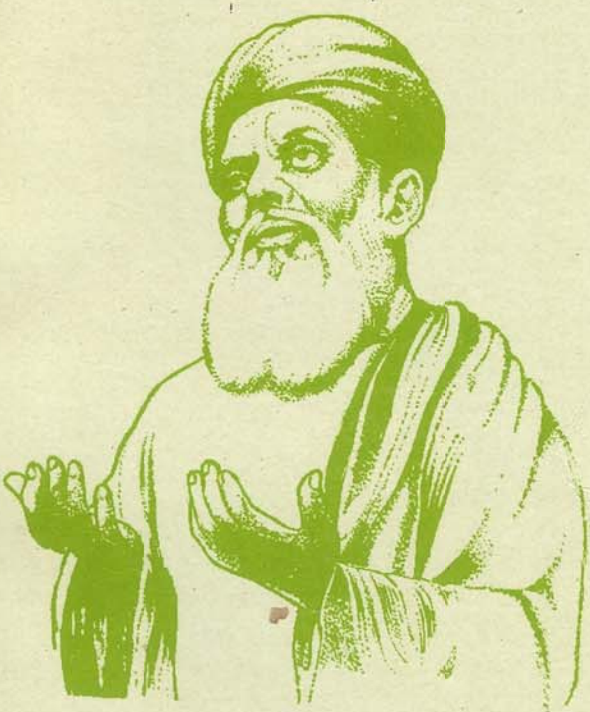
सूफी साधक : शेख फरीद



डॉ. निर्मल कौशिक
कामायनी कौशिक

BVP-2198
2/8/18

6/11

SUFI SADHAK : SHEIKH FARID

BY : DR. NIRMAL KAUSHIK
KAMAYANI KAUSHIK

सूफी साधक : शेख फरीद

लेखक : डॉ निर्मल कौशिक
कामायनी कौशिक

प्रथम संस्करण : 2002

प्रस्तुत पुस्तक 'सूफी साधक : शेख फरीद' लिखने में अगर कोई भूल हो गई हो अथवा त्रुटि रह गई हो तो लेखकद्वय क्षमायाचक हैं ।

प्रकाशक : रोटरी कल्ब, फरीदकोट (पंजाब)
मुद्रक : मंदाला आर्ट प्रिंटरज, फरीदकोट –151203
फोन : 250121 , 55777

मंगलकामनाएँ



मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि रोटरी कल्ब, फरीदकोट द्वारा एक परियोजना के अन्तर्गत बाबा शेख फरीद जी के जीवन दर्शन व वाणी पर आधारित डॉ. निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक द्वारा रचित पुस्तक 'सूफी-साधक : शेख फरीद' प्रकाशित की जा रही है । निश्चय ही यह एक प्रशंसनीय कार्य है । मैंनें शेख फरीद स्मारिकाओं में डॉ. निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक के शेख फरीद सम्बन्धी कई आलेख पढ़े हैं । मेरी दृष्टि मैं दोनों निष्ठावान् एवं समर्पित लेखक है । उनकी इस पुस्तक सूफी साधक शेख फरीद से पाठक निश्चय ही लाभान्वित होगें । विशेष रूप से हिन्दी पाठक शेख फरीद के जीवन दर्शन और वाणी से परिचित हो सकेंगे ।

मैं डॉ. निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक की इस नवप्रकाशित कृति 'सूफी साधक : शेख फरीद' का हार्दिक स्वागत करता हूँ और भविष्य में भी ऐसे सद्साहित्य की रचना करते रहने के लिए मंगलकामनाएँ देता हूँ ।

शुभाकांक्षी

ए. वेणु प्रसाद, आई.ए.एस.
उपायुक्त,
ज़िला फरीदकोट ।

समर्पण

बहुआयामीय व्यक्तित्व के स्वामी,
सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के धनी,
साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक,
कलात्मक एवं क्रीड़ा के क्षेत्र में
समान अभिरुचि से परिपूर्ण,
दया, परोपकार, स्नेह, सहानुभूति,
सद्भावना एवं त्याग जैसे
मानवीय गुणों से अलंकृत,
जनसेवा में प्रवृत्त, लब्धप्रतिष्ठ,
कर्मठ एवं कर्त्तव्यनिष्ठ, कुशल प्रशासक,
श्रद्धेय श्रीयुत श्री ए. वेणु प्रसाद,
आई.ए.एस.

उपायुक्त जिला फरीदकोट को
सादर समर्पित ।

शुभसंकल्प



मुझे इस बात की हार्दिक खुशी हैं कि रोटरी कलब फरीदकोट को सूफी साधक बाबा फरीद जी के सन्देश को विश्व के कोने कोने तक फैलाने के लिए इस परियोजना का श्रेय प्राप्त हुआ है । फरीदकोट नगर के लोग इस दृष्टि से सौभाग्यशाली है कि यहां जिला प्रशासन की ओर से प्रति वर्ष शेख फरीद आगमन पर्व मनाया जाता है । इसी कड़ी के रूप में प्रतिवर्ष एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाती है । जिसमें हिन्दी,पंजाबी,उर्दू, व अंग्रेजी भाषाओं में लेख प्रकाशित होते है । डॉ. निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक के आलेखों को इन स्मारिकाओं में पढ़ने का मौका मिलता रहा है । इन के आलेख शेख फरीद जी के जीवन और सन्देश को आम जनता तक पहुँचाने में काफी हद तक सहायक हुए हैं । मैं आशा करता हूँ कि उनकी यह पुस्तक भी आम पाठकों को शेख फरीद व उनके सन्देश को समझने में सहायता करेगी ।'सूफी साधक शेख फरीद' जिला प्रशासन के इस शुभ संकल्प का ही एक सफल प्रयास हैं । मैं सूफी दरवेश बाबा फरीद जी के जीवन ओर सन्देश पर प्रकाश डालने वाली इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करता हूँ ।

हरिन्द्रा नगर,
फरीदकोट,पंजाब

स्वर्णजीत सिंह गिल
प्रधान (2002-2003)
रोटरी कलब, फरीदकोट
रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय जिला-3090



मंगलाकाँक्षाएँ

मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि रोटरी कलब फरीदकोट द्वारा आयोजित शेख फरीद जी के साहित्य व सन्देश का प्रचार प्रसार करने के लिए मुझे 'सूफी साधक शेख फरीद' पुस्तक प्रकाशन की परियोजना के रूप में कार्यभार सौंपा गया है। विकास कार्यो व अपंग व्याक्तयों की सहायता हेतु किए गए पुण्य कार्यो के कारण अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त माननीय श्री ए. वेणु. प्रसाद आई.ए.एस. डिप्टी कमीशनर, फरीदकोट के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने इस परियोजना हेतु अनुदान प्रदान कर कृतार्थ किया। अन्यथा इस परियोजना का सफल हो पाना संभव न था। शेख फरीद जी के सन्देश को आम जनता तक पहुँचाने का अवसर प्रदान करने की दृष्टि से डॉ. निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक बधाई के पात्र है जिन्होने प्रस्तुत कृति 'सूफी साधक शेख फरीद' के माध्यम से साकार रूप प्रदान किया है। मैं इस अवसर पर दोनो को हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएँ देता हूँ।

विजय सदन
ओल्ड जेल रोड,
फरीदकोट, (पंजाब)

रमेश चन्द्र जैन
परियोजना अध्यक्ष
जिला गर्वनर नामांकित
वर्ष 2004-2005
रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय जिला - 3090

प्राक्कथन

आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण भारत विश्व–संस्कृति में सदैव अग्रणी रहा है । यहाँ के पीरों – पैगम्बरों, सन्तों–भक्तों, ऋषियों और गुरुओं ने अपनी सतत साधना एवं आध्यात्मिक चिन्तन से सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर लाभान्वित किया । शिक्षा के क्षेत्र में तो भारत विश्व गुरु रहा है । ईश्वरीय निष्ठा और सत्य की खोज को अपने जीवन का लक्ष्य मान कर सम्पूर्ण जीवन को लोकार्पित करने वाले भारतीय मनीषियों ने अपने अर्जित ज्ञान को लोकोपकार की भावना से चतुर्दिक् बिखेर दिया ।

पंजाब की धरती साहित्यिक दृष्टि से सदैव उर्वरा रही है । महर्षि बाल्मीकि से लेकर स्वामी श्रद्धाराम फिल्लौरी तक की इस विशद साहित्यिक परम्परा पर पंजाब को ही नही सम्पूर्ण भारत को गर्व है । पंजाब वैदिक काल से ही आध्यात्मिक शिक्षा का केन्द्र रहा है । पंचमेश श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने समस्त भारत के कोने कोने से महान गुरुओं सन्तों सूफियों और भक्तों की वाणियों को बिना किसी साम्प्रदायिक जातीय एवं प्रान्तीय भेदभाव के आदि ग्रन्थ में संकलित कर राष्ट्रीय एकता का पुष्ट प्रमाण दिया । यह ग्रन्थ विश्व भर में पूजनीय तो है ही साथ ही साथ एक प्रामाणिक दस्तावेज भी है । प्रसिद्ध सूफी साधक शेख फरीद जी के 112 श्लोक और 4 शब्द (दो राग आसा और दो राग सूही) इसी ग्रन्थ में संकलित हैं ।

शेख फरीद जी की वाणी मानव मन को

संतृप्त तो करती ही है साथ-ही-साथ आज के युग में तनावग्रस्त एवं अज्ञानता के अन्धकार में भटके मानव का मार्ग भी प्रशस्त करती है । नैतिकता फरीदवाणी का प्रमुख गुण है । फरीद जी के अनुसार मानव जीवन में उदारता पूर्ण व्यवहार करना प्रत्येक जीव के लिए अनिवार्य है । फरीद जी ने अपने अनुभवों के अनुसार ही मानव का मार्गदर्शन किया है । यही कारण हैं कि उनकी वाणी में कहीं भी जटिलता की अनुभूति नहीं होती । लोक संस्कृति के उन्नायक और मानवता के पक्षधर शेख फरीद की वाणी सदा मधुरता का ही संदेश देती है । आखिर गंज-ए-शकर शेख फरीद की वाणी हैं । गंज-ए-शकर शकर का अर्थ हैं कि मिठास का खजाना । यही कारण है कि शेख फरीद की वाणी आज प्रत्येक समुदाय के लिए समान रूप से आदरणीय एवं लोकप्रिय है ।

शेख फरीद जी की अमूल्य वाणी आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उनके अपने युग में थी । फरीद वाणी के माध्यम से दिए गए फरीद जी के अमूल्य सन्देश को भावी पीढ़ी तक विरासत के रूप में पहुँचाना हमारा दायित्व है क्योंकि फरीदवाणी हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक निधि है । शेख फरीद सूफी सम्प्रदाय के शिरोमणि कवि हैं तथा पंजाबी साहित्य के 'पितामह' कहे जाते हैं । उनकी वाणी का प्रत्येक शब्द 'गुरुमन्त्र' के समान मार्गदर्शक हैं । उनका सन्देश सम्पूर्ण विश्व के लिए है । उनके जीवन के कटु अनुभव आज के भटके हुए मानव का दिशा-निर्देश कर उसे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते है ।

शेख फरीद जी के चरण-स्पर्श से हुई पावन धरती फरीदकोट का निवासी होने का अवसर पा कर हम अपने

को गौरवान्वित समझते हैं । लगभग 15 वर्षो में फरीदवाणी का अध्ययन कर विभिन्न विषयों पर आलेख रचना का कार्य कर रहें हैं । शेख फरीद आगमनोत्सव स्मारिकाओं में भी इन आलेखों के प्रकाशित होने के माध्यम से हमने फरीद जी के जीवन व दर्शन से जुडे विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं । इन आलेखों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि निश्चय ही फरीद वाणी अज्ञानान्धकार में भटकते हुए मानव के लिए प्रकाश स्तम्भ के समान है तथा संतप्त मानवता के लिए वरदान है । लोकोपकार की भावना से फरीद जी ने जिन जीवन मूल्यों को अपनी वाणी में चित्रित किया है । वे निस्सन्देह इहलोक और परलोक दोनो ही दृष्टियों से मानवोपयोगी है ।

सूफी साधक : शेख फरीद पुस्तक प्रकाशन का उद्देश्य फरीद जी की वाणी को उन लोगो तक पहुँचाना है जो केवल हिन्दी भाषा का ज्ञान रखते है और हिन्दी भाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा नही जानते । इस पुस्तक में शेख फरीद जी के जीवन व दर्शन से जुड़े अनेक आयामों पर आधारित आलेखों को प्रकाशित किया गया है । हिन्दी में शेख फरीद जी पर बहुत कम पुस्तके मिलती है । पंजाब के बाहर रहने वाले लोग भी शेख फरीद जी के सन्देश से लाभान्वित हो सके इसी भावना से हमने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया । इस पुस्तक का प्रकाशन कदापि सम्भव न था अगर गुणीजन गणना अग्रगण्य, सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के धनी, लब्धप्रतिष्ठ, उदारमना, लोकप्रिय एवं कुशल प्रशासक महामना श्रीयुत श्री ए. वेणु प्रसाद, आई.ए.एस., उपायुक्त, फरीदकोट का वरद हस्त हमारे सिर पर न होता । आपके सहयोग, प्रेरणा, सामर्थ्य, उत्साह, सम्बल व मार्गदर्शन के बिना प्रस्तुत पुस्तक का अस्तित्व में आना असम्भव ही होता । कहा भी है 'परोपकाराप सतां विभूतयः' अर्थात् सज्जनों

के ऐश्वर्य परोपकार के लिए होते है । जिला फरीदकोट के विकास कार्यों के साथ-2 आपने शैक्षणिक, कलात्मक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास कार्यो में भी विशेष रुचि दिखाई है । आपने फरीदकोट के सभी क्षेत्रों के विकास कार्यो में अनन्य एवं अभूतपूर्व उपलब्धि अर्जित की है । लेखक द्वय आपके प्रति हृदय से आभार अभिव्यक्त करता है ।

हमारे इस प्रस्ताव को परियोजना का रूप प्रदान करने का श्रेय रोटरी कल्ब, फरीदकोट को जाता है । इसके लिए हम रोटरी कलब की कार्यकारिणी एवं समूह सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हैं ।

अन्त में मंदाला आर्ट प्रिंटरज, फरीदकोट के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न करना धृष्टता होगी जिन्होंर्ने दिन रात परिश्रम करके पाण्डुलिपि को सुन्दर पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया । अस्तु ।

5 सितम्बर, 2002
अध्यापक-दिवस

विदुषामनुचरौ
डॉ. निर्मल कौशिक
कामायनी कौशिक

अनुक्रम



सूफी साधक शेख फरीद जी

शेख फरीद : जीवन व दर्शन

भारत आरम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में विश्व- गुरु रहा है । ज्ञान के पुंज अनेक ऋषि-मुनियों, पीरों पैगम्बरों एवं सिद्ध-साधकों नें अपने अनुभवों से मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया हैं ।

पंजाब की धरती को इस बात का गर्व हैं कि ऋग्वेद से लेकर 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' जैसे विश्व. विख्यात पावन ग्रन्थों का सम्पादन इसी पुण्यशालिनी धरती पर हुआ । आदि कवि महर्षि बाल्मीकि से लेकर 'श्रद्धाराम फिल्लौरी' जैसे साधकों ने इसी धरती पर भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया । समय-समय पर अनेक साधकों ने इसी पंजाब की धरती पर जन्म लेकर अपने जीवन के अमूल्य अनुभवों से उपलब्ध अमरत्व प्रदान करने वाले संदेश विश्व को प्रदान किये ।

मानव जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष को सुदृढ़ करने हेतु इन महापुरुषों ने अपनी दार्शनिक दृष्टि एवं समन्वयवादी चिन्तनधारा के द्वारा व्यष्टि से समष्टि तक का मार्ग प्रशस्त किया । आत्मोन्नति एवं सामाजिक चेतना पर आधारित राष्ट्रीय एकता के लिए इन्होंने आजीवन संघर्ष किया । इन्हीं के सद्प्रयत्नों से स्थापित मानव मूल्यों से आज भी मानव जीवन आलोकित हो रहा हैं । 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' का सम्पादन और

उसे 'गुरु स्वरूप की स्वीकृति इस बात का पुष्ट प्रमाण है और राष्ट्रीय एकता का प्रामाणिक दस्तावेज है । 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज अनेक सन्तों, गुरुओं की वाणी आज के संतप्त तथा मार्ग से भटके हुए मानव को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती है । यही कारण है कि आज इसका अमर सन्देश विश्व भर में व्याप्त हो रहा है ।

बारहवीं शताब्दी में पैदा हुए 'शेख फरीद' के नाम से प्रसिद्ध सूफी कवि की वाणी 1518 ई में श्री गुरु नानक देव जी उनकी गद्दी पर विद्यमान तत्कालीन 12 वें उत्तराधिकारी शेख इब्राहीम से ग्रहण की गई । परम्परागत ढंग से यह वाणी पंचमेश श्री गुरु अर्जुन देव जी के पास पहुंची । श्री गुरु अर्जुन देव जी ने 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन करते समय फरीद जी के 112 श्लोक तथ चार शब्द (2 राग सूही तथा 2 राग ललित में) सम्मिलित किए ।

शेख फरीद का जन्म शेख जमालुदीन सुलेमान के घंर बीबी कुरशूम की कोख से 571 हिजरी (1175 ई.) में हुआ । कुछ ग्रन्थों में इनका जन्म 569 हिजरी (1173 ई.) भी बताया गया है । उस समय रमजान की पहली रात्रि थी । आकाश बादलों से घिरा होने के कारण चांद साफ दिखाई नहीं दे रहा था ।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' उस रात लोग परेशान थे कि चाद दिखाई न होने की सूरत में क्या किया जाए ? इतने में एक महापुरुष ने आकर उन्हें सूचना दी कि शेख जमालुदीन सुलेमान के घर एक पुत्र

ने जन्म लिया हैं । अगर उसने अपनी माता का दूध पी लिया है तो हम रोजा नही रखेगे । पता चला कि फरीद ने अपनी माता का दूध नही पीया हैं । कहा जाता है कि फरीद जी ने पूरा रमजान का महीना दिन में अपनी माता का दूध नही पीया । केवल रात्रि के समय ही वे अपनी माता का दूध पीते थे ।

फरीद जी के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग हमें उनके महान होने का पुष्ट प्रमाण प्रदान करते हैं ।पांच वर्ष की अवस्था में उनकी माता ने उन्हे नमाज पढ़ने की प्रेरणा देने के लिए कहा बेटा, अल्लाह नमाज अदा करने वालों को शक्कर देता है । उनकी माता हर रोज शक्कर की पुड़िया मुसल्ला (चटाई) के नीचे रख देती । फरीद जी उसे नमाज पढ़ने के बाद अल्लाह की दी हुई पुड़िया समझ कर खा लेते ।

एक दिन किसी कार्यवश उनकी माता शक्कर की पुड़िया रखना भूल गई । फरीद जी ने नमाज अदा करने के बाद शक्कर की पुड़िया उठा कर खा ली । जब उनकी माता ने आकर पूछा तो फरीद जी ने कहा मैने हर रोज की तरह ही चटाई के नीचे से पुड़िया उठा कर खाई है तो उनकी माता को अत्यन्त आश्चर्य हुआ । उस दिन से फरीद को फरीद-उ-दीन मसऊद (गंज-ए-शक्कर) अर्थात 'मिठास का भंडार' कहा जाने लगा । कुछ विद्वान इनकी वाणी की मिठास के कारण भी इन्हे 'गंज-ए-शक्कर' कहा जाना मानते हैं ।

फरीद जी ने आरम्भिक शिक्षा अपने पैतृक गांव में प्राप्त करने के बाद मुलतान के एक मदरसे में औपचारिक शिक्षा ग्रहण की । इस समय तक आपको 'कुर्आन शरीफ' ज़बानी याद हो गया था । आप 24

घन्टे मे एक बार 'कुर्आन शरीफ' का सम्पूर्ण अध्ययन कर लेते थे ।

आपके हृदय में ईश्वरीय प्रेम और अद्‌भुत दिव्य ज्योतिं को महापुरुष शीघ्र ही भांप लेते थे । इसी बीच आपका सम्पर्क एक योग्य मुरशद ख्वाजा बख्तयार काकी से हुआ । फरीद जी ने उनके पवित्र चरणों में स्वयं को समर्पित कनते हुए उन्हें अपना गुरु धारण कर लिया । आपने अनेक सन्तों, सूफियों के साथ रह कर आत्मिक तृप्ति का मार्ग प्रशस्त किया ।

प्रसिद्ध सूफी ख्वाजा मुइनुदीन चिश्ती ने आप पर अपार कृपा करके आपको असीम ज्ञान का भण्डार दिया । आपके गुरु ने आपको और अधिक साधना करने के लिए प्रेरित किया । साधना करने के लिए आपको हांसी का स्थान अधिक उपयुक्त लगा । आप लगभग 19. 20 वर्ष हांसी में रहें और साधना करके ज्ञान-ज्योति अर्जित की ।

आपकी तप-साधना और योग्यता के कारण आपको मुरशद बख्तयार काकी के परलोक सिधारने के बाद चिश्ती सम्प्रदाय का नेतृत्व सम्भाला गया । अब आप हांसी छोड़कर अपने पैतृक गांव कोठीवाल आ गए । कुछ समय वहां रहनें के बाद आप अयोधन जिसका नाम आजकल 'पाकपटन' (पाकिस्तान) आ गए । यह स्थान आपको भजन.बन्दगी के अनुकूल लगा ।

दैवी प्रेरणा से प्रेरित होकर फरीद जी ने 12 वर्ष तक कठोर तप किया । एक दिन फरीद जी समाधिस्थ होकर तप में लीन थे कि चिड़ियों ने शोर मचाना आरम्भ कर दिया ।. फरीद जी ने क्रोधित होकर कहा 'तुमने मेरी समाधि भंग की है । चिड़ियो तुम मर जाओ ।'

इतना कहते ही सारी चिड़ियाँ मर गई । यह देखकर फरीद जी बहुत दुःखी हुए । फरीद जी ने अल्लाह से प्रार्थना की 'इन्हें जीवित कर दो ।' देखते ही देखते चिड़ियां जीवित हो उठीं ।

एक दिन फरीद जी तप करके अपने निवास की ओर लौट रहे थे कि उन्हे प्यास लगी । उन्होनें देखा कि एक औरत कूएं से पानी भरकर ज़मीन पर उड़ेलती जा रही है । फरीद जी ने उसे पानी पिलाने के लिए कहा । उस औरत ने कहा 'मेरी बहन के घर को आग लगी है मैं पहले वह आग बुझा लूँ फिर पानी पिलाती हूँ । यह सुनकर फरीद को क्रोध आ गया । वह औरत जोर-2 से हँसने लगी। उसने फरीद जी से कहा 'क्रोध न करें मै कोई चिड़िया नहीं हूँ जो आपके कहने से मर जाऊँगी ।यह सुनकर फरीद जी को आश्चर्य हुआ ।

उस औरत ने फरीद जी को बताया कि वह एक पतिव्रता स्त्री है । उसने अपने पति की सेवा द्वारा ही सतीत्व की शक्ति अर्जित की है । उसने फरीद जी को अपने अनुभव के आधार पर बताया कि श्रद्धा और निष्ठा से की गई सेवा वर्षो की साधना से कहीं श्रेयस्कर होती है । प्रेम और नम्रता ही मानव के सर्वोत्तम आभूषण हैं । दुब अर्थात् घास के समान होने से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।

एक बार 1215 ई में बाबा फरीद जी दिल्ली से पाकपटन जाते हुए रास्ते में कई स्थानो पर रुके । यह मार्ग हांसी, हिसार, सिरसा, कोटकपूरा, फरीदकोट, कसूर से होकर लाहौर जाता था । उस समय फरीदकोट एक छोटा सा गांव था । इस गांव का नाम मोकलहर था

और यहां का शासक राजा मोकल एक राजपूत शासक था । राजा मोकल इन दिनों एक किले का निर्माण करवा रहा था । राह जाते लोगों कों पकड़ कर उनसे अवैतनिक मजदूरी करवाई जाती थी ।

फरीद जी गांव के बाहर एक घने पेड़ की छाया में आराम करने लगे । उन्होनें अपने गुरु बख्तयार काकी द्वारा दी गई गोदड़ी को पेड़ पर लटका दिया । बाद में बिना गोदड़ी के ही वे थोड़ी दूर बसे गांव मोकलहर पहुंचे तो राजा के सिपाहियों ने फरीद जी को पकड़ कर अवैतनिक मजदूरों में शामिल करके मिट्टी का टोकरा उठाने को कहा ।

फरीद जी ने टोकरी तो उठाई लेकिन टोकरी उनके सिर से एक हाथ ऊपर हवा में तैरती रहती थी । जब राजा को इस बात का पता चला तो उसने फरीद जी के चरणों में गिर कर क्षमा मांगी और उन्हीं के नाम पर अपने गांव का नाम फरीदकोट रखा । यह स्थान आज कल चिल्ला (टिल्ला) बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

उधर गोदड़ी की याद आने पर फरीद जी जब उस पेड़ के पास पहुंचे तो कुछ लड़के उस गोदड़ी की गेंद बनाकर खेल रहे थे । फरीद जी ने उन बच्चों से गोदड़ी लेकर अपनी छाती से लगाया और मन ही मन क्षमायाचना की । इस स्थान घर आजकल 'गुरुद्वारा गोदड़ी साहिब' बना हुआ है । 23 सितम्बर को प्रतिवर्ष यहां भारी मेला लगता है ।

कहा जाता है कि फरीद जी ने अपनी मृत्यु से दो माह पूर्व अपने प्रिय और सुयोग्य शिष्य निजामुदीन औलीया को अपने पास बुलाकर अपना कम्बल और

खड़ाऊँ देकर आलिंगनबद्ध करके अपना उतराधिकारी बना दिया । लगभग 90 वर्ष की आयु में मुहर्रम की पांचवी तिथि मंगलवार 667 हिजरी (1265 ईसवी) को ईशा की नमाज अदा करते-करते आप उस परमपिता-परमात्मा के स्वरूप में समा गए ।

कहा जाता हैं कि केवल 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में संकलित वाणी ही शेख फरीद 'गंज-ए-शकर' की प्रामाणिक वाणी हैं । इस वाणी में उनके दो शब्द राग सूही और दो शब्द राग ललित में तथा 112 श्लोक है । इसके अतिरिक्त गुरु साहिबान के 18(अठारह) श्लोक भी स्थान-स्थान पर अंकित हैं जो फरीद जी के श्लोको का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने हेतु रचे गए है ।

फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से अपने जीवन के मौलिक अनुभवों को भूले भटके लोगों तक पहुचांया । मानव को नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी । उन्होने सामाजिक विषमता दूर करने के लिए मनुष्य को सावधान करते हुए कहा है कि ईश्वर के दिये हुए पर ही सन्तोंष करो । दूसरे की समृद्धि देखकर ललचाना नहीं चाहिए ।

फरीद जी ने कहा है दूसरो को सुधरने का उपदेश देने की बजाय अपने आपको सुधारना चाहिए । आदर्श मानव ही दूसरे को सन्मार्ग दिखा सकता है । मनुष्य को सर्वप्रथम अपने अवगुणो को दूर करना चाहिए ।

काले मैंडे कपडे़ काला मैंडा वेसु ।।
गुनही भरिया मै फिरा लोग कहे दरवेसु ।।61।।

मनुष्य को लम्बी आयु की कामना करने की अपेक्षा सत्कार्यो में प्रवृत्त होना चाहिए । अच्छे कर्मो से ही पुण्य प्राप्त होता है । गुणहीन बुरे कर्मो का परित्याग

करना चाहिए अन्यथा ईश्वर के सम्मुख लज्जित हाना पड़ता है ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ।।
मतु सरमिंदा थीवहि साई दे दरबारि ।। 59 ।।

सारा संसार ही दुःखो का घर है । मनुष्य को कभी भी इस भ्रम में नही रहना चाहिए कि केवल मै ही दुःखी हूँ । प्रत्येक प्राणी अपनी अपेक्षा दूसरे को सुखी समझता हैं। फरीद जी मानव को आश्वस्त करते हुए कहते हैं ।

फरीदा जे जाणा दुख मुझ कू , दुख सभाइए जगि ।।
उचे चढ़ि के देखिया तां घरि घरि एहा अगि ।।8।।

इस दुख से मुक्त होने के लिए फरीद जी ने संसार के भोग विलासों में लिप्त न होने का सन्देश दिया है। फरीद जी ने स्वयं गृहस्थी होकर भी आजीवन दरवेश का जीवन व्यतीत किया । वे जल में कमल के समान निर्लेप भाव से अनासक्त रहे यही उनका वैराग्य सम्बन्धी सन्देश है ।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीया ऐतु न लाए चितु ।।
मिटी पइ अतोलवी कोई न होसी मितु ।।57।।

सभी प्राणियों में उस ईश्वर का निवास है । वह सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है अतः उसे कहीं भी अन्यत्र ढूंढने की आवश्यकता नही है । उसे पाने का मार्ग अत्यन्त सरल है । किसी भी जीव से दुर्व्यवहार न करो ।

इकु फिका न गालाइ सभना मे सचा धणी ।।
हिआउ न कैही ठाहि मानक सभ अमोलवे ।।29।।

फरीदवाणी बुरे का भी भला करने का सन्देश देती है । इससे बदले की भावना समाप्त होगी । अहम् का नाश होगा । विश्वबन्धुत्व की भावना को बल मिलेगा । युद्धों का निराकरण हो सकेगा और विश्व-शान्ति की

स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा ।

फरीद्दा बुरे का भला करि गुसा मनि न हड़ाइ ।।
देही रोगु न लगई पलै सभ किछु पाइ ।। 38 ।।

'आत्मवत्सर्वभूतेषु' सभी प्राणियों को अपने ही समान समझो । किसी को बड़ा-छोटा, ऊँच नीच न समझो । फरीद जी के अनुसार हमें खाक की भी निन्दा नही करनी चाहिए ।

फरीदा खाकु न निंदीअै, खाकु जेडु न कोइ ।।
जीवदिया पैरा तले मुइआ उपरि होई ।।17।।

फरीद जी ने अपने इन अमूल्य उपदेशो के द्वारा जीवन के शश्वत मूल्यों को प्रतिपादित कर मानवतावाद का धरातल सुदृढ़ किया है उनकी वाणी आज के सन्तप्त और भटके हुए मानव के लिए आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके अपने समय में थी । मानव कल्याण हेतु रची गई उनकी यह वाणी आज के अज्ञानान्धकार में पथभ्रष्ट मानव का मार्गदर्शन करने में सक्षम सिद्ध होगी ।

कतिपय प्रेरक प्रसंग

प्राय: कहा जाता है ''होनहार बिरवान के होत चीकने पात'' अर्थात् महान व्यक्ति के लक्षण बचपन में ही प्रकट हो जाते है । इतिहास साक्षी है कि जितने भी गुरु, भक्त, सन्त, महात्मा, नेता, योद्धा,पीर अथवा मार्गदर्शक हुए है, उन सबके बचपन से ही उनके महान बनने के लक्षण स्पष्ट हुए हैं । आध्यात्मिक साधकों के बचपन में भी बहुत सी ऐसी असाधारण एवं अलौकिक घटनाएँ घट जाती हैं । जिससे उनके महान होने का परिचय मिल जाता है। बाबा शेख फरीद भी उन्ही महान विभूतियों मे से एक थे जिनके जन्म से ही इस महान आत्मा के जीव के रूप में अवतरित होने का आभास हो गया था । वैसे भी फरीद शब्द का अर्थ होता है – अनुपम अर्थात बेजोड़।

इन्होंने साधु सन्तों एवं फकीरों की संगति में रहना शुरू किया । उनसे इन्होनें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातें सीखी । एक बार फरीद जी कुछ सूफी सन्तों के साथ बुखारा से वापिस आ रहे थे । रास्ते में सिन्ध प्रान्त के एक गांव के पास इन्हें रात बितानी पड़ी । फरीद जी के पास कुछ जुआर थी । सूफी सन्तों ने इन्हें गांव से इसे पीस कर आटा बना लाने के लिए भेजा । फरीद जी ने एक घर में आवाज़ दी एक औरत बाहर आई । उसने उन्हें आटा पीसनें की अनुमति दे दी । घर में उस औरत का एक तीन महीने का बच्चा भी पालने में सो रहा था ।

जब फरीद जी चक्की में आटा पीस रहे थे तो इनके यौवन और रंग रूप पर वह औरत मुग्ध हो गई और फरीद जी को लुभाने का प्रयत्न करने लगी । फरीद जी ने बड़ी कठिनाई से अपना पिंड छुडाया । बाद में उस औरत ने गांव में शोर मचा दिया कि इस नौजवान ने मेरी इज्जत लूटने की कोशिश की है । फरीद जी को गिरफतार कर लिया गया और काजी के समक्ष घटना कह सुनाई । काजी ने कहा आप के पास कोई गवाह है । तो फरीद जी ने कहा कि 'सिवा अल्लाह के मेरे पास कोई गवाह नहीं है । अचानक फरीद जी को ध्यान आया कि उस घर में पालने में एक तीन माह का बच्चा भी मौजूद था । फरीद जी के कहने पर उस बच्चे को पालने सहित काज़ी की अदालत में लाया गया । फरीद जी ने अल्लाह से प्रार्थना की कि 'हे खुदा अगर मैं सच्चा हूं तो इस बच्चे को जुबान दे ताकि यह मेरी गवाही दे सके । कहा जाता है कि खुदा ने फरीद जी की प्रार्थना सुन ली और उस बच्चे ने बोलकर फरीद जी की निर्दोष होने की गवाही दी और उसकी मां को काज़ी ने सख्त सजा दी ।

कहा जाता है कि एक बार पाकपटन के काज़ी ने फरीद जी की बढ़ती हुई प्रसिद्धि को देखकर मुलतान के सूबेदार के माध्यम से बादशाह को यह बात पहुंचा दी कि फरीद मुसलमान नहीं है । वह तो मस्जिद में नाचता गाता रहता है । बादशाह ने सूबेदार से यह बात सुनकर हुक्म लिख भेजा कि इस फकीर को शहर से निकाल दो । लेकिन जब यह हुक्म सूबेदार के पास पहुँचा तो उसमें लिखा हुआ था कि 'काजी को इस नौकरी से निकाल दो ।'' जब काजी को इस हुक्म के

बारे में ज्ञात हुआ तो वह फरीद जी के पास आया और उनके चरणो के गिर पड़ा और क्षमायाचना करने लगा । फरीद जी उसे क्षमा ही नही किया बल्कि उसकी लड़की से अपने लड़के मखदूम बदर–उ–दीन की शादी भी कर दी ।

एक बार किसी जादू टोने करने वाले ने फरीद जी को शारीरिक कष्ट देना आरम्भ कर दिया ताकि उनकी भक्ति में बाधा उत्पन्न हो । इससे फरीद जी को एक बीमारी ने आ घेरा । कुछ समय पाकर फरीद जी के शिष्यो ने इसका कारण ढूँढना शुरु किया । एक व्यक्ति में उन्हें बताया कि फरीद जी पर जादू चलाने के लिए एक जादू करने वाले ने आटे के पुतले मे सूईयाँ गाड़ रखी हैं । इनके शिष्यो ने उस पुतले को ढूंढ कर उसमे से सूईयों को निकालना आरम्भ किया । ज्यो–2 सूईयाँ निकलती गई फरीद जी का रोग भी कम होता गया । फरीद जी के शिष्यो ने उसकी शिकायत अयोधन के शासक के पास की । शासक ने उसे गिरफतार करके फरीद जी से आज्ञा मांगी कि क्यों न इसे फांसी की सजा दे दी जाए । मगर फरीद जी ने उस जादू करने वाले को शासक की सजा से मुक्त कराया और भविष्य मे ऐसे कर्म न करने की शिक्षा दी ।

फरीद जी अपने गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा भाव रखते थे । वे गुरु की आज्ञा के प्रति नतमस्तक हो कर उनकी आज्ञा का पालन करते । उनके मन में गुरु सेवा का दृढ़ संकल्प इस घटना से स्पष्ट झलकता है । उनके गुरु सर्दियो में प्रातःकाल उठकर हाथ,पाव,मुंह आदि गर्म पानी से धो कर नमाज़ अदा करने जाया करते थे । एक दिन गुरु जी ने फरीद जी को आदेश दिया कि "आस

पडौस कही से आग जलाने के लिए दहकता कोयला लेकर आओ ।" फरीद जी ने थोड़ी दूर एक घर में जलती हुई अग्नि देखी और आवाज देकर आग मांगी । इस घर मे औरत अकेली थी । वह फरीद जी की सुन्दरता को देखकर उन पर डोरे-ड़ालने का प्रयास करने लगी । फरीद जी ने उसके घर से आग लेना उचित न समझा और आगे निकल गए । मगर उस दिन किसी घर से भी आग न मिली । अन्ततः फरीद जी उसी औरत के घर में पुनः लौट आए । उस औरत ने अपनी उस पराजय का बदला लेने हेतु फरीद जी को आग के बदले अपनी एक आंख निकाल कर देने को कहा । गुरु भक्ति के प्रभाव के कारण फरीद जी ने झट से अपनी एक आँख निकाल कर उस औरत को दे दी । जब उनके गुरु को इस बात का पता चला कि फरीद जी अपनी आँख के बदले पानी गर्म करने के लिए आग लेकर आए हैं तो उन्होंने अल्लाह से फरीद जी की आँख ठीक हो जाने के लिए सच्चे मन से दुआ की । फलस्वरूप फरीद जी की आँख ठीक हो गई और फरीद जी अपनी गुरु भक्ति के कारण गुरु जी की कृपा के पात्र बन गए ।

दैवी प्रेरणा से फरीद जी ने बारह वर्ष तक कठोर तप किया । कठिन साधना करके आप ईश्वरीय रंग में रंग गए । एक दिन आप समाधिस्थ हो कर एक पेड़ के नीचे बैठे थे कि उस पेड़ पर एक चिड़ियों के झुंड ने शोर करना आरम्भ कर दिया । फरीद जी की समाधि भंग हो गई । फरीद जी ने क्रोधित हो कर कहा " तुमने मेरी समाधि भंग की है , तुम मर जाओ " इतना कहते ही सारी चिड़िया वहीं मर गई । ऐसा देखकर

फरीद जी को अत्यन्त दुःख हुआ । आपने अल्लाह से सच्चे मन से प्रार्थना की कि इन चिड़ियों को पुनः जीवित कर दें । दरगाह मे फरीद जी की प्रार्थना स्वीकृत हुई । देखते ही सारी चिड़ियां पुनः जीवित हो उठीं । इसी धारणा को आधार पर शायद यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हुई होगी कि "चिड़ियो मर जाओ चिड़ियो जीवित हो जाओ ।"

एक बार फरीद जी तप करके अपने निवास की और लौट रहे थे । रास्ते में उन्हें अति तीव्र प्यास लगी । उन्होनें देखा कि पास ही एक औरत कूएं से पानी निकाल कर बाहर उंडेल रही थी । फरीद जी ने उस औरत से कहा "मुझे प्यास लगी है, कृपया पानी पिला दो ।" उसने कहा "जरा ठहरें, पहले मैं अपना काम कर लूँ फिर पानी पिलाती हूँ । काफी देर तक फरीद जी प्रतीक्षा करते रहे मगर वह औरत कूँए से पानी निकाल कर बाहर गिराती रही । अन्ततः फरीद जी को क्रोध आ गया । उस औरत ने फरीद जी की अवस्था को जान लिया । फरीद जी को क्रोधित देखकर वह औरत हँसने लगी । फरीद जी ने आवेश मे पूछा । "तुम हँस क्यों रही हो ?" उस औरत ने कहा" हे दरवेश ! तुम मुझ पर व्यर्थ ही क्रोध कर रहे हो मैं कोई चिड़िया नहीं हूँ जो आपके क्रोध की अग्नि में जल कर भस्म हो जाऊँगी ।" फरीद जी एकदम चकित रह गए कि इसे चिड़ियों वाली बात कैसे मालूम हुई है । उस औरत ने कहा "आप पहले पानी पी लें । मैं आप को सब कुछ बता दूंगी ।" उस औरत ने फरीद जी को पानी पिलाया और इस प्रकार सारी जानकारी दी । उस औरत ने कहा" मैं एक पतिव्रता स्त्री हूँ और अपने पति

की सेवा करके मैने सतीत्व की शक्ति अर्जित की है । मैं अपने पति की सेवा के फल स्वरूप ही दूर दूर तक घटने वाली घटनाओं को जान लेती हूँ । आपको कुछ देर पानी पीने के लिए प्रतीक्षा इस लिए करनी पड़ी क्योंकि यहाँ से कुछ ही दूर मेरी बहन के घर को आग लगी हुई थी । मैं अपनी सतीत्व को शक्ति से कूँए से पानी निकाल कर उसकी अग्निशमन हेतु भेज रही थी । उसके घर की अग्नि बुझ जाने के बाद ही मैने आपको पानी पिलाया था । इस प्रकार मैंने अपकी चिड़ियों मर जाओ, चिड़ियो जीवित हो जाओ' वाली घटना को भी सतीत्व की शक्ति से ही जान लिया था । श्रद्धा और निष्ठा से की गई सेवा वर्षो के तप और साधना से कहीं अधिक श्रेयस्कर होती है । प्रेम और नम्रता ही मानव के सर्वोत्तम आभूषण है ।

एक बार बाबा फरीद जी दिल्ली से पाकपटन की ओर जाते हुए रास्ते में कई स्थानों पर रुके । उस समय दिल्ली से लाहौर जाने के लिए रास्ता हाँसी, हिसार, सरसा, कोटकपूरा, फरीदकोट, कसूर से होते हुए लाहौर तक जाता था । उस समय फरीदकोट एक छोटा सा गाँव था जिसका नाम मोकलहर था । यहाँ पर मोकलसी नाम का एक राजपूत शासक था । जिसने कोशिश की कि यह गाँव समृद्ध हो जाए । उन दिनों मोकलहर गाँव में एक किले का निर्माण हो रहा था । उस किले के निर्माण के लिए उस समय का शासक इस राह से गुज़रने वाले किसी भी व्यक्ति को पकड़ कर उससे अवैतनिक मजदूरी का काम लेता था । फरीद जी जब अपनी यात्रा के दौरान इस गाँव में पहुँचे तो उन्होने

एक पेड़ के नीचे आराम करना चाहा । फरीद जी ने गाँव के बाहर एक शान्त स्थान पर घनी छाया देखकर अपनी गोदड़ी जो उन्हें उनके गुरु बख्तयार काकी ने उनकी सेवा से प्रसन्न हो कर प्रदान की थी और जिसे हमेशा वे अपने साथ रखते थे उसे एक पेड़ पर लटका कर आराम करने लगे । थोड़ी देर के बाद फरीद जी को भूख ने सताया तो वे अपनी गोदड़ी वहीं टंगी हुई छोड़ कर भोजन की तलाश में निकल पड़े । लगभग एक मील चलने के बाद वे गाँव मोकलहर पहुँचे तो राजा मोकलसी के सिपाहियों ने फरीद जी को पकड़ कर अवैतनिक मजदूरों में शामिल करके किले के निर्माण कार्य के लिए भेज दिया । जहाँ फरीद जी अपनी गोदड़ी पेड़ पर टाँग कर आये थे वहाँ आजकल गुरुद्वारा गोदड़ी साहिब बना हुआ है ।

कहा जाता है कि जब मोकलहर गाँव में किले का निर्माण कार्य चल रहा था और सभी अवैतनिक मजदूर उसके लिए मिट्टी ढ़ो रहे थे तो उनमे फरीदजी भी शामिल थे । लेकिन ईश्वरीय कृपा से और फरीद जी के तप के प्रभाव से मिट्टी की टोकरी उनके सिर से एक हाथ ऊपर तैर रही थी । एव वहां उपस्थित लोगो ने देखा कि मिट्टी की भरी टोकरी उनके सिर पर हवा मे लहरा रही है तो उन्हें संदेह हुआ कि यह अवश्य कोई महान पुरुष है । उन्होने फरीद जी के आगे सिर झुकाया और उनसे पूछा हे महात्मा आप कौन हैं ? तब आप ने अपना नाम 'फरीद' बताया । जब यह बात राजा मोकलसी के पास पहुँची तो उसने फरीद जी के सामने उपस्थित हो कर, उनके चरणों में गिर कर क्षमा मांगी । वह अपनी भूल के लिए अत्यन्त शर्मिन्दा हुआ ।

फरीदजी ने राजा मोकलसी को क्षमा कर दिया और आगे अपनी यात्रा के लिए निकले ।

फरीदजी की गोंदड़ी से सम्बन्धित एक अन्य घटना थी किंवदन्ति के रूप में प्रचलित है । कहा जाता है जब फरीद जी अपनी गोदड़ी को पेड़ पर लटका कर भोजन की तलाश में चल दिये तो उन्हें राजा के सिपाहियों ने पकड़ लिया था । यह भी कहा जाता है कि उस गोदड़ी को कुछ लड़कों ने उतार कर उसे टुकड़े -2 कर दिया । गोदड़ी के अभाव में फरीद जी को बहुत कष्ट हुआ । गोदड़ी के अभाव असहाय और एकाकी महसूस कर रहे थे क्योंकि अपनी गुरु-प्रदत्त गोदड़ी को वे सदा अपने सीने से लगाए रखते थे । उधर गोदड़ी ने भी फरीद जी से बिछुड़ कर बहुत कष्ट सहा । भेड़ बकरियां चराने वाले कुछ लड़कों ने गोदड़ी का कुछ हिस्सा फाड़ कर उसकी गेंद बना कर इधर उधर उछालने लगे । उधर राजा मोकलसी को क्षमा करने के बाद फरीद जी को जब गोदड़ी की याद आई तो वे अतिशीघ्र उस स्थान पर लौटे जहां पर वे पेड़ की शाखा से अपनी गोदड़ी लटका गए थे । मगर गोदड़ी गायब थी । अन्ततः उन्होने लड़कों से अपनी फटी हुई गोदड़ी प्राप्त कर अपने सीने से लगाया । आपने उसके प्रायश्चित के रूप में जिस स्थान पर चालीस दिन तक कठिन तपस्या की । फल स्वरूप इस पवित्र स्थान का नाम चिल्ला (वर्तमान रूप टिल्ला) बाबा फरीद के रूप में प्रसिद्ध है । गोदड़ी वाले स्थान को गुरूद्वारा गोदड़ी साहिब कहा जाता है । फरीदजी के आगमन के कारण ही इस स्थान का नाम फरीदकोट पड़ा होगा ऐसा इतिहासकारों का अनुमान है । बाबा फरीद जी ने इस

स्थान को वरदान दिया कि जो भी श्रद्धालु इस स्थान पर शीश झुकाएगा उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी । शायद इसी लिए आज लाखों की संख्या में श्रद्धालु इस स्थान पर शीश झुका कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिए यहां आते हैं । प्रत्येक वर्ष जिला प्रशासन के सहयोग से इस स्थान पर 23 सितम्बर को बाबा फरीदजी के फरीदकोट आगमन की स्मृति को बनाए रखने के लिए आगमनोत्सव मनाया जाता है ।

फरीद जी की अपने प्रियतम (इष्ट) से मिलन की अभिलाषा की तीव्रता को दर्शाने वाली एक घटना इस प्रकार बताई जाती है । कहा जाता है कि फरीदजी तप करते अत्यन्त दुर्बल और कृशकाय हो गए थे । रोज़े (उपवास) करते उनकी शारीरिक क्षमता इतनी कम हो गई कि वे स्वयं उठने बैठने में भी असमर्थ हो गए थे । आपका ध्यान सदा परम पिता की ओर लगा रहता था । आप अर्धचेतन अवस्था में लेटे रहते । आप की इस अवस्था को देखकर कौए भ्रमवश आपको मृतक समझ कर आप पैरों के तलवों पर चौंच मार-मार कर मांस निकालने का प्रयास करते । कभी सिर पर तो कभी उनकी छाती पर बैठ कर कौए उन्हें नोचते रहते । कभी कभी तो कौए उनकी अर्धनिमीलित आंखों में भी चौंच मारने का प्रयास करते । मगर फरीदजी को तो अपने इष्ट के दर्शनों की अभिलाषा और प्रतीक्षा थी । फरीदजी अपने चाहते थे कि में अपने इन नेत्रों से अपने प्रियतम के दर्शन कर सकूँ । उन्होने अपने शरीर के अन्य अंगों की परवाह नहीं की । वे कौओ को सम्बोधित करते हुए अपनी वाणी में कहते हैं कि 'हे कौओ भले ही मेरा सारा मांस चुन-चुन कर खा लेना मगर मेरे इन दो नेत्रों को

मत छूना क्यों कि मेरी प्रियतम को देखने की अभिलाषा निरन्तर बनी हुई है ।

फरीद जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक साधकजन इनके शिष्य बन गए । इन शिष्यों ने फरीदजी के मानवतावादी सन्देश को जन-जन तक पहुंचाया लेकिन हांसी के शेख जमालुदीन तथा दिल्ली के शेख निजामुदीन औलीया के नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है । फरीदजी ने शेख निजामुदीन औलीया के गुणों एवं श्रद्धा भाव की परीक्षा भी ली थी । इस कारण वे शेख निजामुदीन को वे प्रभु का सच्चा भक्त मानते थे । कहा जाता है कि फरीद जी ने अपनी मृत्यु से दो मास पूर्व शेख निजामुदीन औलीया को अपने पास बुलाया और उन्हें अपना कम्बल और खडाऊं देकर आलिंगन बद्ध करके अपना उत्तराधिाकारी बना दिया । फरीद जी अन्तिम दिनों में ज्यादा समय बन्दगी में ही लगाते । लगभग 90 वर्ष की आयु में मुहर्रम की पांचवी तिथि दिन मंगलवार 664 हिजरी (1265 ईस्वी) को आपने ईशा (अर्थात् रात की नमाजं) अदा करते-करते बेहोश हो गए । जब होश आया तो पुनः नमाज अदा करनी आरम्भ कर दी । नमाज अदा करने के बाद आप सदा के लिए शान्त हो गए । आप उस परम-पिता परमात्मा के स्वरूप मे समा गए ।

आपने अपने अनुभवों, जीवन-आदर्शो एवं जीवन-दर्शन के माध्यम से लोगों को प्रेम, दया, सन्तोष एवं सद्भावना का सन्देश दिया । आपने अपने अनुभवों को अपनी वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त किया । कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी अपनी तीसरी उदासी लगभग 1518 ईस्वी (भ्रमण) के दौरान भाई मरदाना को

साथ लेकर कसूर से होते हुए पाकपटन पहुंचे । उस समय फरीद जी के उत्तराधिकारी के रूप में बारहवें फरीद शेख इब्राहीम गद्दी पर विद्यमान थे । श्री गुरु नानक देव जी ने उनसे फरीद जी की रची हुई वाणी प्राप्त की । उनकी इस पावन वाणी को पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित किया । फरीद जी के 112 श्लोक दो शब्द राग आसा में तथा दो शब्द राग सूही में रचे हुए सम्मिलित हैं । इसके अतिरिक्त गुरु साहिबान के 18 ऐसे श्लोक भी फरीद वाणी के साथ ही अंकित हैं जो फरीद जी के श्लोकों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने हेतु रचे गए हैं ।

फरीद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को अपनी वाणी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा कर भूले भटके लोगों का मार्गदर्शन किया । नैतिकता का पाठ पढ़ाया । मानवतावाद का धरातल सुदृढ़ किया । उनका जीवन सादगी और सरलता पूर्ण था । उनकी वाणी में जीवन के शाश्वत मूल्यों का प्रतिपादन हुआ है । इसमें विश्वबन्धुत्व की भावना झलकती हैं । उनकी वाणी और उनके जीवन के कतिपय प्रेरक प्रसंग मानव के लिये आज भी उतने ही सार्थक और महत्त्वपूर्ण है जितने उनके अपने युग में थे । मानव कल्याण हेतु उनका समर्पित जीवन और उनकी रची हुई वाणी आज के भूले भटके और तनावपूर्ण जीवन जी रहे मानव को मार्गदर्शन करने में पूर्णतया सक्षम है।

सामाजिक संरचना का कवि शेख फरीद

संस्कृत में चेतना शब्द को इस प्रकार पारिभाषित किया गया है चेतयतेनया इति चेतना अर्थात वह शक्ति जिस से कुछ जाना जाए । गीता में भी इसे ज्ञानात्मक शक्ति के रूप में ही बताया गया है आत्म चैतन्यामासरा विद्या । मानक हिन्दी कोष में इसे मानस की आन्तरिक अनुभूतियों को तथा बाह्य घटनाओ को जानने वाली वृत्ति कहा गया है । सामान्य अर्थ में इसे संज्ञा–
सुधि आदि ही कहा गया है । अन्त में हमें विश्वकोश को परिभाषा को चेतना का सही अर्थ मानकर ही अपनी बात को आगे बढाने का प्रयास करेंगे । चेतना जीवों में विद्यमान वह तत्त्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थो से भिन्न बताता है । यह तत्त्व में अचेत (सुप्तावस्था) से जागृति अथवा चेतना में लाने का कार्य करते है ।

सामाजिक चेतना से अभिप्राय है किसी अज्ञात वस्तु अथवा तत्त्व से समुदाय विशेष का ज्ञान कराना । समुदाय के रूप में मनुष्य स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है और अपने जीवन को सुख शान्ति से व्यतीत करता है । समय–समय पर उत्पन्न सामाजिक कुरीतियां एवं विसंगतियां मानव के जीवन में अव्यवस्था एवं दुराचार फैलाती है ।

मानव समाज को सुचारू एवं अनुशासित ढंग से निर्वाह करने हेतु किसी ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता होती है जो समाज विरोधी तत्त्वों का विरोध करके उसमें सुन्दरम् एवं शिवम् की स्थापना कर सके । तब वह लोगों में जन शक्ति का संचार करके उन्हें बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है । वास्तव में सामाजिक संरचना के प्रति सजग एवं प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण ही व्यक्ति की सामाजिक चेतना है ।

एक आदर्श समाज की स्थापना ही सामाजिक चेतना का मुख्य लक्ष्य होता है । मध्ययुगीन सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में इसी प्रकार की सामाजिक चेतना लाने का सफल प्रयास किया है । सन्तों और सूफियों की रचनाओं में आध्यात्मिक बोध के साथ साथ सामाजिक चेतना की भावना भी परिलक्षित होती है । बारहवी शती में अवतरित बाबा शेख फरीद जी की वाणी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

आदर्श समाज की स्थापना के लिए समाज में सदाचार और नैतिकता का होना आवश्यक है । अच्छे आचरण वाला व्यक्ति ही दूसरों को कुछ सिखा सकता है । इसी से दया, क्षमा, शील, संयम, धैर्य, सहिष्णुता और त्याग की भावना से पारस्परिक सद्भाव उत्पन्न होता है । मानव उदार होकर सर्वे भवन्तु सुखिनः की कामना करने लगता है । अपने पराए का भेद समाप्त हो जाता है और मानव मानव से मिलकर विश्व बन्धुत्व की कल्पना साकार करता है । शेख फरीद जी ने अपनी कविता के माध्यम से इन्हीं आदेशों का प्रचार एवं प्रसार किया । उन्होंने सामाजिक चेतना की ऐसी लहर चलाई

जिसके बल पर मानव निर्विरोध सारे विश्व को जीत सकता है ।

सामाजिक चेतना गुण के परिप्रेक्ष्य में सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है आत्मसंयम । आत्म संयम के लिए जब और सँतोष की आवश्यकता होती है । मनुष्य के दुःखी होने का कारण है सामाजिक विषमता । दूसरों की सुख समृद्धि मनुष्य से सहन नहीं होती । दिन रात इसी चिन्ता में रहता है कि मैं (बड़ों)दूसरों के बराबर कैसे बनूं ? फरीद जी ने मनुष्य को सावधान करते हुए कहा है कि तुझे जो कुछ ईश्वर ने दिया है उसे स्वीकार करके सब्र और सन्तोष से काम लें । दूसरों के सुख साधन ऐश्वर्य देखकर तुझे अपने मन को तरसाना नहीं चाहिए । इसी से मन को दुख होता है ।

रूखी सुखी खाइके ठंडा पानी पीउ ।।
फरीदा देख पराई चोपड़ी न तरसाए जीउ ।।29।।

फरीद जी आत्मसन्तोष एवं संयम का फल आनन्द मानते हैं और ऐश्वर्य सुख सुविधाएं भोगने वालों का कष्ट भोगना ही पड़ेगा ऐसा उनका विश्वास है । इसी लिए वे कहते हैं ।

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ।।
जिना खाधी चोपड़ी घने सहिणगे दुख ।।28।।

फरीद जी ने समाज में दूसरों को उपदेश देने की अपेक्षा स्वयं का विश्लेषण करने पर बल दिया है । अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने अवगुणों को दूर करने का प्रयत्न करे तो सम्भवतः पूरा समाज एक आदर्श समाज बन सकता है । फरीद जी कहते हैं अपने ज्ञान पर गर्व करने की अपेक्षा अपने अवगुणों की और देखो ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ।
आपनड़े गिरीवान महि सिरू नीवा करि देख ।।6।।

फरीद जी ने आत्म निरीक्षण का यह शुभ कार्य आपने शुरू किया है वे लिखते है आत्म निरीक्षण से ही आत्मिक शुद्धि होती है । उनकी सामाजिक चेतना स्वं से पर की और चलती है ।

काले मैडे कपड़ काला मैंडा वेसु ।।
गुनही भरिया मै फिरा लोक कहे दरवेसु ।।61।।

आज प्रत्येक मानव समुदाय में से अपने को अलग पाता है । उसके पास किसी से बात करने का भी समय नहीं है । वह तनावयुक्त होकर नम्रता और मधुर जैसे अमूल्य मानवीय गुणों को भूल चुका है । जब तक मानव में नम्रता का गुण नहीं आता तब तक उसकी वाणी में मधुरता आ ही नहीं सकती । मधुरता से पारस्परिक वैमनस्य की भावना वैसे ही दूर हो जाती है । फरीद जी ने सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए सभी जीवात्माओं में उसी ईश्वर के स्वरूप की विद्यमानता दर्शाते हुए कहा है कि किसी जीव से भी कटु वचन नहीं बोलने चाहिए । उनका कथन है ।

इक फिका न गालाइ सभणा में सचा धनी ।।
हिआउ न कैही ठाहि मानक सभ अमोलवे ।।29।।

फरीदजी ने उन मानवीय गुणो का बहिष्कार किया है जिन से मानव को ईश्वर के समक्ष शर्मिन्दा होना पड़े । अतः मनुष्य इस बात को ध्यान में रखेगा और कोई ऐसा काम नहीं करेगा तो उसका आचार व्यवहार स्वतः शिष्टाचार पूर्ण होगा । मानव को दुर्गुणों को छोड़ कर सद्गुणों को अपनाना चाहिए । इससे श्रेष्ठ समाज की

स्थापना को बल मिलेगा । फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से इस बात को इस प्रकार स्पष्ट किया है ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कमड़े बिसारि ।।
मतु शरमिंदा थीवहि साई दे दरबारि ।।59।।

फरीद जी ने समाज से बुराइयों के उन्मूलन के लिए बुरे को दण्ड देने की अथवा घृणा की नीति न अपना कर उसपर क्रोध करने की अपेक्षा उसका भी भला करने (सोचने) की बात कही है । इसमे समाज में वैर विरोध की भावना भी समाप्त हो जाएगी और क्रोध से होने वाला तनाव भी कम हो जाएगा । इसे समाज में शान्ति और उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त हो सकेगा ।

फरीदा बुरे दा भला करि, गुसा मनि न हडाइ ।।
देही रोगु न लगई, पलै सभु किछु पाई ।।78।।

सूफी मत के सिद्धान्त के अनुसार मानवीय प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम है । वैसे भी यह मत प्रेम पर ही आश्रित था । हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने इसे प्रेम मार्गी शाखा का नाम दिया है । भक्ति का यह अद्‌भुत मार्ग लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करता है । प्रभु से प्रेम करने वाले हृदय में ही सामाजिक जीवों के प्रति प्रेम की भावना पनप सकती है । प्रभु–प्रेम मे मस्त व्यक्ति ही निस्वार्थ भावना से प्रबल होकर समाज मे विचर सकता है क्योकि प्रभु–प्रेम के समक्ष ही धन, यौवन और ऐश्वर्य सब व्यर्थ हो जाते है । आपने प्रेम के महत्व को दर्शाते हुए कहा है ।

जोवन जांदे न डरा, जे सह प्रीति न जाई ।।
फरीदा किती जोबन प्रीत, बिन सुक गए कुमलाइ ।।

प्रेम की अनँन्यता मे फरीद सब से आगे है। उनके

प्रेम की तीव्रता एवं उत्सुकता उन्हें अपने प्रियतम से मिलने को आतुर कर देती है । यह प्रेम अगर लोक मे व्याप्त हो लाए तो यह धरती स्वर्ग हो जाए और लोग देवता । उनका प्रेम अटल है उनमे प्रेम की परिपक्वता है, शान्ति, स्निग्धता एवं कोमलता है । ऐसा प्रेम भौतिक अथवा लौकिक बाधाओं की परवाह नही करता ।

फ़रीदा गलीए चिकड़ु दूर घरि नालि पिआरे नेहु ।
चला ता भिजै कंबली रहा ता तुटै नेहु ।।

लेकिन इस कठिन प्रेम परीक्षा की घड़ी में फरीद जी तनिक भी विचलित नही हुए उन्होने बाधाओ तथा आपदाओं की तनिक भी परवाह नहीं की । उन्हे प्रेम की ललक मे इतनी शक्ति दी कि वे अपने प्रियतम के अटूट प्रेम मे खिंचे चले गए ।

भिजउ सिजउ कंबली अलह बरसउ मेहु ।।
जाइ मिला तिना सजना तुटउ नाहीं नेहु ।।25।।

फरीद जी ने समाज में परिव्याप्त ऊँच-नीच, अमीर-गरीब की समता को स्वाधीनता और पराधीनता के माध्यम से आँका है । जब ईश्वर ने हम सब को स्वतन्त्र पैदा किया है तो कोई भी किसी के पराधीनता क्यों हो ? पराधीन सपनेहु सुख नाही । अतः कोई भी व्यक्ति पराधीन नही रहना चाहता । फरीद जी ने भी मानव को पराधीता को नकार कर स्वाधीनता के लिए ही चेताया है । वे तो पराधीन जीवन को अपेक्षा मृत्यु को बेहतर मानते हैं ।

फरीदा बारि पराइऐ बैसना साई मुझे न देहि ।।
जे तू ऐवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ।।42।।

इसी प्रकार फरीद जी समाज में निम्नजातियों के प्रति उपेक्षा भाव को दूर करने के लिए जनजागृति लाना चाहते है। जीव तो क्या कोई भी वस्तु इस संसार मे तुच्छ या हीन नही है । उदारता से ही व्यक्ति दूसरों के प्रति समता भाव रख सकता है । वह किसी को बडा–छोटा नही समझता । उनके विचार में हर व्यक्ति उसके कर्मो का फल मिल जाता है । अगर कोई व्यक्ति किसी से विषमता का भाव रखता भी है तो उसे उसका फल अवश्य मिलेगा फरीद जी तो खाक को भी महान मानते हैं ।

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकु जेडु न कोई ।।
जीवदिया पैरा तले मुइआ उपरि होई ।।17।।

सभी प्राणियों को एक समान जान लेने के बाद समाज मे समभाव पैदा हो जाता हैं तो वह समाज एक आदर्श समाज बन जाता हैं । तब सामाजिक चेतना का कार्य निष्पन्न हो जाता है ।जब समाज मे ऐसी चेतना अथवा जागृति पैदा हो जाए तो कोई किसी का बुरा क्यो सोचेगा ? फिर तो मानव मे ऐसे गुण स्वत: आ जाते हैं कि अगर उस पर कोई प्रहार भी करता है तो वह उसका उत्तर देना भी ठीक नही समझता । वह महानता की उस अवस्था को पा लेता है जहा क्षमा उसका आभूषण बन लाती है । वह प्रहारकर्त्ता को अज्ञानी समझ कर क्षमा कर देता है । फरीद जी ने कहा है ।

फरीदा जो तै मारनि मुकीयां तिना न मारे घुमि ।।
आपनड़े घरि जाईऐ पैर तिना दे चुमि ।।7।।

उपरोक्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर हम

देखते है कि फरीद काव्य में वे सभी अनिवार्य तत्व विद्यमान है जो किसी भी समाज मे सामाजिक चेतना लाने के लिए अनिवार्य होते हैं । जनसुधार अघवा जनजागृति लाने के लिए जिस प्रेरणा, सम्बल अधवा उद्घोष को आवश्यकता होती है वह फरीद काव्य सहज ही उपलब्ध करा देता है । फरीद जी ने अपनी कविता के माध्यम से उस कट से कटु सत्य को भी इतनी नम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कही भी कोई उपदेशात्मकता का आभास नही होता । वे व्यक्तिगत चेतना से सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर होते है । उनके अनुसार व्यक्तिगत चेतना ही सामाजिक चेतना का मूल स्रोत है । पंजाबी साहित्य के पितामह बाबा फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से सामाजिक चेतना की ऐसी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है जो उस समय के शासक की तलवार भी न कर सकी । वे समाज सुधार के संकल्प को आत्मविश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत करते है । उनकी कथनी और करनी की समानत ने लोगों को प्रभावित ही नही आकृष्ट भी किया । उनकी वाणी का एक एक शब्द मार्गदर्शक 'गुरु मन्त्र' के समान है । उनकी वाणी जन–चेतना को तरंगित करने मे सक्षम है । यह कहना अनुचित न होगा कि बाबा फरीद जी की वाणी एक आदर्श समाज की स्थापना हेतु सामाजिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है ।

फरीद–वाणी में अनासक्ति भाव

हिन्दी काव्य परम्परा मे सूफी काव्यधारा का अपना विशिष्ट स्थान है । आसक्ति अथवा प्रेमप्रधान होने के कारण हिन्दी साहित्येतिहासकारो ने इसे 'प्रेममार्गी' शाखा का नाम भी दिया है । इन सूफी कवियों ने लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम का माध्यम माना है । इन्हाने कुछ लौकिक पात्रों के द्वारा कथानक रूढ़ियो को प्रयुक्त करके अपने महाकाव्यो की रचना भी की है । मगर शेख फरीद जैसे आध्यात्मिक अभिरुचियों वाले सूफियों ने इस प्रेम को प्रवृत्तिमूलक रूप में न अपनाकर इसे निवृत्तिमूलक स्थिति में ही अपनाया है । ऐसा लगता है कि फरीद वाणी श्रृंगार रस के संयोग पक्ष की अपेक्षा वियोग पक्ष के अधिक निकट है । इससे उनकी प्रवृत्ति अनासक्ति को ओर उन्मुख हुई है । हो सकता है जामी तथा अलगजाली जैसे साधको के समान ही फरीद जी की साधना पद्धति भी भारतीय धर्मसाधना के 'वैराग्य–भाव' से प्रभावित हो । भारतीय धर्मग्रन्थो मे इसे ही अनासक्ति भाव कहा गया है ।

अलगजाली के अनुसार "संसार का प्रेम और परमात्मा का प्रेम दोनो एक साथ नही रह सकते । जो अन्यथा करता है, वह असत्य है ।" वैराग्य वास्तव

में भक्ति का पूरक तत्त्व है । फरीद जी ने जिस वैराग्य की बात की है वह कायरतावादी अथवा पलायनवादी नही बनाता । वे तो संसार त्यागने वाले को फटकारते हुए कहते हैं

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोडेहि ।
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूंढेहि ।।19।।

संसार के अन्य मतो में संसार से सम्बन्ध विच्छेद को ही विरक्ति कहा गया है । मगर फरीद जी का वैराग्य तो मानव में सांसारिकता के प्रति अनासक्ति पैदा करता है संसार के प्रति नही । संसार और शरीर के भौतिकतावादी मिथ्यात्व नश्वरता, क्षणभंगुरता, सारहीनता आदि को फरीद जी ने अपनी वाणी का विषय बनाया है ।

बुडा होइया शेख फरीद कंबन लगी देह ।।
जे सौ वरिया जीवणा भी तन होसी खेह ।।41।।

धन जोड़ने, महल आदि से मोह भंग करते हुए फरीद जी मानवमन मे अनासक्ति का भाव पैदा करने हेतु कहते है

फरीदा कोठे मंडप माडीयां उसारदे भी गए ।।
कूडा सउदा कर गए गोरी आए पए ।।46।।

फरीद जी ने इस अनासक्ति पैदा करने हेतु मानव को मृत्यु तक का भय दर्शाया है । उनका उद्देश्य प्राणी को मृत्यु से डराना नही बल्कि मृत्यु का स्मरण करते हुए उसके मन में भौतिकता से अनासक्ति तथा ईश्वर के प्रति आसक्ति पैदा करना है ।

फरीदा कोठे मंडप माडिया ऐतु न लाए चित्त ।।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मित्त ।।57।।

बडे-बडे छत्रधारी भी इस से बच नही सके है फिर आम आदमी को क्या बिसात है ? यह सब यही रह जाना है तो फिर इससे मोह क्यो ?

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ।
जाई सुते जीराणि महि थीए अतीमा गड़ ।।45।।

सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य के साथ-साथ फरीद जी ने शारीरिक सौन्दर्य, शक्ति एवं आकर्षण को भी उस ईश्वर के प्रेम के बिना व्यर्थ माना है । यह शरीर भी व्यर्थ हो जाता है ।

फरीदा जिनि लोइण जगु मोहिया से लोइण मै डिठु ।।
कजल रेख न सहदिया से पंखी सूइ बहिठु ।14।।

फरीद वाणी में यत्र-तत्र वृद्धावस्था का चित्रण भी इसी पर्याय का द्योतक है । वृद्धावस्था भी मानव को सांसारिकता से विमुख करती है और ईश्वरोंन्मुखी बनाती है । इसी से अनासक्ति भाव भी उत्पन्न होता है ।

देख फरीदा जु थीआ दाढ़ी होई भूर ।।
अगहु नेड़ा आइया पिछा रहिया दूर ।।9।।

तथा

फरीदा सिर पलिया दाढ़ी पली मुच्छा भी पलिया ।।
रे मन गहिले बावले माणहि किया रलीया ।।55।।

सांसारिक विषयों से विरक्ति ही मानव मन में अनासक्ति का भाव पैदा करती है यही फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । उन्होने मानव को उसकी वस्तु स्थिति से अवगत कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी । लेकिन इस सब के पीछे फरीद जी का एक ही लक्ष्य रहा है कि मनुष्य अपने जीवन में अच्छे कॅर्म करे और संसार में रहकर भी उस

ईश्वर के प्रति प्रेम भाव रखे । सांसारिक नश्वरता, वृद्धावस्था, मृत्यु का चित्रण, वैराग्यभाव, प्रियतम का स्नेह, विरह की तड़प के सब विषय उनके इसी सन्देश के पोषक तत्त्व हैं । वे प्रियतम के प्रति अपनी ललक की इस प्रकार प्रकट करते हैं ।

कागा करंग ढढोलिया सगला खाइया मासु ।
ऐ दुई नैना मति छुइयों पिर देखन की आसु ।।91।।

फरीद जी ने अपनी वाणी में उन सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख किया है जो मानव जीवन को सांसारिकता से अनासक्त करके ईश्वर प्रेम में आसक्त कर सकते है । इसके लिए उन्होने मानवता के उन आधार भूत गुणो को धारण करने पर बल दिया जो एक मानव के लिए अनिवार्य है । अहम् का नाश नम्रता,सत्य, त्याग, उदारता, भ्रातृभाव, प्रेम, दया, सहिष्णुता सहयोग, सहानुभूति आदि अनेक गुण हैं जो मानव जीवन को सार्थक बनाते है । फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से इन्ही गुणो का विस्तार करने को प्रेरणा दी है । उनका कथन है कि दुर्गुणों को त्याग देना ही बेहतर है अन्यथा इहलोक के साथ–साथ मनुष्य को परलोक मे भी शर्मिंदा होना पड़ता है ।

फरीदा जिनी कमी नाहि गुण ते कमड़े बिसारि ।।
मतु सरमिंदा थीवही साई के दरबारि ।।59।।

इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे कर्म करने से मना करते है । वह तो अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देते है । मनुष्य को अपने अवगुणो का विश्लेषण करना चाहिए । अपने गुणो को प्रशंसा नही करनी चाहिए ।

फरीदा जे तु अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ।।
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवा करि देख ।। 6 ।।

सूफीवाद में अनासक्ति की भावना को आध्यात्मिक रहस्यवाद की विरह की अवस्था से भी जोड़ा जा सकता है । इसी अवस्था मे आत्मा को परमात्मा से मिलन की इच्छा और अधिक प्रबल हो उठती है । वियोगावस्था में संसार की कोई भी वस्तु अच्छी नही लगती इसी से संयोग का मार्ग प्रशस्त लेता है । यही प्रवृत्ति मानव मन मे अनासक्ति को जन्म देती है । इसीलिए शायद फरीद जी 'विरह' की स्थिति को अधिक अच्छा मानते है । वे विरह रहित प्राणी को निकृष्ट मानते हुए कहते हैं ।

बिरहा बिरहा आखीऔ बिरहा तू सुलतानु ।।
फरीदा जितु तनि बिरह न उपजै, सो तनु जानु मसानु ।।36।।

फरीद जी ने वैराग्य अथवा अनासक्ति हेतु इच्छाओं पर संयम रखने सरलतम मार्ग माना है । संसार में रह कर भी सांसारिकता से निर्लेप रहना ही आत्म संयम है । इच्छाएं ही मनुष्य को माया के भ्रम जाल में भटकाए रखती हैं । अगर मनुष्य सांसारिक विषय विचारो और इच्छाओ पर नियन्त्रण करे तो संसार में रहकर भी ईश्वरोन्मुखी हो कर अपने जीवन को सफल बना सकता है ।

संसार के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण ही मानव अपने आप को भोग विलासो से मुक्त नहीं कर पाता है । फरीद जी के अनुसार यही आसक्ति का मूल कारण है और इसी लिए मनुष्य दुख भोगता है । जो इन सब से अनासक्ति रहते है वे ही अपना जीवन सफल कर पाते है । वे कहते है ।

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ।
जिन्हा खाधी चोपड़ी घणे सहिनगे दुख ।।28।।

फरीद जी ने अपनी सम्पूर्ण वाणी में दुखो से मुक्त होने के लिए भौतिक पदार्थो से मोह भंग करने का सन्देश दिया है । गृहस्थी होते हुए भी उन्होने आजीवन दरवेश हो कर निर्वाह किया । वे जल मे कमल की भाँति रह कर अनासक्त होने का सन्देश देते हैं । संसार से सन्यास लेना अथवा कायरता दिखाना तथा जंगलों में जा कर भक्ति करना उनके अनुसार पलायन करना है । फरीद जी के अनुसार मनुष्य उदार भावना से संसार मे रहते हुए सांसारिक बुराइयो से दूर रहकर ईश्वर का स्मरण करे और अपने जीवन को लोकहित कें लगाए । उन्होने संसार में रहते हुए सांसारिकता के त्याग को ही अनासक्ति माना है । उनकी वाणी के माध्यम से यही सन्देश मानव का मार्गदर्शन करता है और भविष्य मैं भी करता रहेगा ।

फरीदवाणी में कर्म-सिद्धान्त

संस्कृत में एक उक्ति है जो व्यक्ति को उद्यम करने की ओर प्रेरित करती है ।

उद्येमन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

अर्थात कार्य परिश्रम से सिद्ध होते है केवल इच्छाओं से नहीं । सोए हुए सिंह के मुख मे हरिण अपने आप प्रविष्ट नही होते । रामचरितमानस में भी तो स्वामी तुलसीदास ने भाग्यवादियों को आलसी कह कर सम्बोधित किया है । दैव दैव आलसी पुकारा ।

इसी प्रकार कवि दिनकर ने भी परिश्रम न करने वालो को ही भाग्यवादी कहा है ।

'ब्रह्म का अभिलेख पढ़ा करते निरुद्यमी प्राणी है ।'

वेदान्त अर्थात उपनिषदो का सार कही जाने वाले भगवान श्री कृष्ण द्वारा उच्चरित श्री मद्भगवद्गीता मे भी कर्म को अत्यन्त महत्ता प्रदान की गई है।'

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते संगोऽस्तव कर्मणि ।।

अर्थात् कर्म करने मे ही तेरा अधिकार होवे फल में कभी नही और तू कर्म के फल की वासना वाला भी मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न होवे । कर्म के विषय में प्रायः दो अवधारणाएँ व्यक्त की जाती हैं । आस्तिक लोग ईश्वर द्वारा प्रेरित किए जाने पर ही कर्म का अस्तित्व मानते हैं ।

मनुष्य केवल निमित्त मात्र ही है । ऐसे लोगो का मत है कि जो ईश्वर करता है वही होता है या होकर रहता है । बाकौल उर्दू शायर ।

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है ।
वही होता है जो मन्जूरे खुदा होता है ।

दूसरी विचारधारा के लोग पुरुषार्थ को अत्यन्त महत्त्व देते है । उनका मानना है कि पुरुषार्थ से भाग्य भी बदला जा सकता है । लेकित भाग्य भी तो हमारे पूर्व संचित कर्म ही है जो हम भोगते है । भाग्यवादी कहते है । भगवान राम ने चौदह वर्ष बनवास काटा, श्री कृष्ण ने अर्जुन का रथ हाँका, सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने शमशान मे मुर्दे जलाए, यह सब भाग्य ही का तो खेल है । भर्तृहरि ने एक श्लोक में कहा है

'भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् ।

दूसरी ओर देखने में आता है कि कर्मवीर अपने पौरुष से असभ्भव को भी सम्भव कर दिखाते है । इसी लिए शायद किसी विद्वान ने भाग्य और पुरुषार्थ दोनो को ही कर्म गति के लिए अनिवार्य माना है ।

'यथाह्योकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत ।
एवं बिना पुरुषार्थेन न दैव सिद्धयति ।।

अर्थात् जिस प्रकार एक चक्र (पहिए) से रथ नही चल सकता ठीक उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना भाग्य की सिद्धि नही होती ।

सभी महापुरुषों ने कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत

कर्मठता अर्थात पुरुषार्थ को ही महत्त्व दिया है । फरीद वाणी में भी फरीद जी ने कर्म सिद्धान्त के अपने दृष्टिकोण को कई स्थानो पर स्पष्ट किया है । सर्वप्रथम फरीद जी ने मनुष्य को सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है । उनका कहना है कि सदाचार ही मानव को महान बनाता है । सदाचार मानव को सद्कार्य की ओर प्रेरित करता है फरीद जी के अनुसार मानव को दुष्कर्मो की ओर प्रवृत्त नही होना चाहिए अन्यथा उस परम पिता परमात्मा के सम्मुख शर्मिन्दा होना पड़ेगा । अत: फरीद जी ने मानव को सदाचार के मार्ग पर चलने और सत्कर्म करने के लिए ही कहा है । वे अपनी वाणी मे लिखते है ।

'फरीदा जिन्ही कम्मी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि।।
मतु सरमिन्दा थीवहि साई दे दरबारि ।।59।।

फरीद जी ने अच्छे कर्मो का मार्ग बताते हुए मानव को यह समझाने की कोशिश भी की है कि अच्छे कर्मो का फल अच्छा ही होता है और बुरे कर्मो का फल बुरा होता है । फरीद जी ने अपनी वाणी में स्पष्ट किया है । उन्होने मानव को अहम् के वशीभूत दुष्कर्मो से दूर रहने का सन्देश दिया है ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफ, काले लिखु न लेख ।
आपनड़े गिरीबान महि सिरु नीवा करि देख ।।6।।

अपने दुगुर्णो को अपने आत्मालोचन द्वारा देख कर उन्हे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । अपने अवगुणो से सदा परहेज करना चाहिए क्योकि बुरे कर्म का फल भी बुरा ही होता है और अच्छे कर्म का फल भी अच्छा ही होता है । इसे फरीद जी ने अपनी वाणी मे एक

सरल उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया है कि हे फरीद अगर कोई किसान कीकर का बीज बो कर अंगूर के फल की उम्मीद करे तो उसकी अवस्था ठीक वैसी ही है जो उम्र भर ऊन कातने के बाद रेशमी वस्त्र पहनने की इच्छा करे । फरीद ज़ी कहते है ।

फरीदा लोड़े दाख बिजउरीयां किकर बीजै जटु ।। ।।
हंढै उन्न कताइदा पैधा लोड़े-पटु ।।23।।

फरीद जी ने अपनी वाणी में इस बात की पुष्टि कर दी हैं कि मृत्यु के पश्चात् भी मनुष्य के अच्छे बुरे कर्मो का हिसाब पाप-पुण्य के रूप में किया जाता हैं । अधिकाँश लोग इस बात की परवाह किए बिना ही संसार में कुकर्म करते फिरते है । इसका फल भी उन्हें नरक मे भुगतना पड़ता है । लेकिन कुछ लोगों को इस सत्य का आभास हो जाता है । वे लोग सत्कर्म की ओर प्रवृत्त हो कर अपना जीवन सफल कर जाते है । इसी लिए फरीद जी ने सांसारिक कर्म करते हुए बुरे कर्मो से परहेज करने की चेतावनी दी है । फरीद जी कहते है ।

फरीदा मउते का बन्ना ऐवे दिसै जिउ दरयावै ढाहा ।। ।।
अगै दोजुक तपिया सुणीऔ हूक पवै काहाहा ।।
इकना नो सब सोझी आई इक फिरदे बेपरवाहा ।।
अमल जे कीतिया दुनी विचि से दरगह उगाहा ।।98।।

फरीद जी ने एक महत्त्वपूर्ण बात यह कही है कि उन्होने कर्म को अमल का नाम दिया है । वास्तविकता यह है कि लोग वेदों, पुराणो, उपनिषदो की बात तो करते है । सत्कर्म के उदाहरण भी देते है । दूसरो को उपदेश भी करते हैं । मगर स्वयं उस आदर्श मार्ग का

आचरण नही करते । फरीद जी ने कर्म को अमल का नाम इस लिए दिया है कि जो यथार्थ मे मनुष्य क्रियात्मक रूप से करता है वही वास्तव में कर्म है अन्यथा कथनी और करनी मे अन्तर रखने वाला व्यक्ति भी दुष्कर्म ही करता है । किसी भी सच्चाई को जीवन में उतारना ही सत्कर्म है । यह अमल है । फरीद जी के अनुसार किए हुए कर्म अर्थात अमल ही अन्त में दरगाह मे उस ईश्वर के समक्ष काम आते है ।

फरीद जी मानव को संकेत करते हुए कहते हैं कि यह शरीर नाशवान है और अनेक आशाएं अपूर्ण रह जाती हैं जब मनुष्य इस संसार से कूच कर जाता है । अपने सगे सम्बन्धी भी साथ छोड़ देते हैं और कन्धों पर उठा कर आगे (दूसरे लोक) में भेज देते हैं । अन्ततः इस संसार में किए हुए कर्म (अमल) ही उस लोक में काम आते हैं अर्थात इस लोक में किए हुए सत्कर्म ही मनुष्य का साथ देते हैं । अतः मनुष्य को इस लोक में रहते हुए सत्कर्म (अमल) करना चाहिए । फरीद जी कहते हैं ।

साढे त्रै मन देहुरी चलै पाणी अन्नि ।।
आइउ बन्दा दुनी विचि वति आसूणी बन्नि ।।
मलकल मउत जा आवसी सब दरवाजे भन्नि ।।
तिना पिआरियां भाईया अगै दिता बन्नि ।।
वेखहु बन्दा चलिया चहु जनिया दे कन्नि ।।
फरीदा अमल जि कीते दुनी निचि दरगह आए कमि ।।100।।

इस पुण्य कार्य के लिए अर्थात् सत्कर्म करने और दुष्कर्म से बचने के लिए फरीद जी ने एक मूल मन्त्र दिया है ।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हडाइ ।।
देही रोगु न लगई पलै सभ किछु पाई ।।78।।

बुराई करने वाले से भी सद्व्यवहार करो । सदाचार और सत्कर्म का ऐसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है । इससे क्रोध एवं द्वेष की भावना से बचा जा सकता है और शारीरिक रोगों का निवारण हो सकता है क्योंकि क्रोध ही शारीरिक और मानसिक रोगों का कारण बनता है । फरीद जी ने बदले की भावना को नकार कर सद्भावना का पाठ पढ़ाया है । नम्रता सदाचार का प्रथम गुण है क्योंकि दूसरे के प्रति सद्भावना ही हमें परोपकार की और उन्मुख करती है । अतः अगर कोई तुम्हें प्रताड़ित करता है तो भी उसके प्रति नम्रता का भाव ही दर्शाना चाहिए । इससे आपके अन्दर सहिष्णुता की भावना पैदा होगी । अपनी वाणी में लिखते है ।

फरीदा जे तै मारनि मुकीयां तिनां न मारे घुमि ।।
आपनड़े घरि जाइये पैर तिना दे चुम्मि ।।7।।

इतना ही नहीं फरीद जी बार बार मनुष्य को यह कह कर यथासमय कर्म करने की प्रेरणा भी देते है कि सत्कर्म के लिए समय की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए दुनियां के झंझटों में उलझ कर तू अपना समय क्यों नष्ट कर रहा है । इसलिए समय रहते तुझे यह काम करना चाहिए था अन्यथा समय बीत जाने पर मृत्यु आ जाने पर कुछ भी कर पाना सम्भव नहीं होगा । क्योंकि मृत्यु के आगे अन्ततः झुकना ही पड़ता है । अतः समय की महत्ता को जानकर तुझे अपने अच्छे कर्मो को करना चाहिए ।

फरीदा जा तउ खटण वेल ता तूं रता दुनी सिउ ।।
मरग सबाइ नीहि जा भरिया तां लदिया ।।8।।

इतना ही नहीं फरीद जी मनुष्य को स्मरण दिलाते है कि हे मनुष्य! ईश्वर ने तुझे इस धरती पर जिस काम के लिए भेजा है वह तो तुमने किया ही नहीं अर्थात् तुझे मानव जन्म का उद्देश्य ही नहीं मालूम । तुझे ईश्वर का नाम जपने के लिए यह जन्म मिला था मगर तुमने इधर उधर भटक कर और सोकर यह जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया । अब मरने के बाद जब ईश्वर तुझसे हिसाब मांगेगा तो तू क्या उत्तर देगा ? जिस काम के लिये मुझे भेजा गया था वह काम कहाँ तक पूरा किया है ? फिर तू क्या उत्तर देगा ?

फरीदा चारि गवाइया हढ़िके चारि गवाइया संमि ।।
लेखा रबु मंगेसिया तू आहो केरे कंमि ।।38।।

एक तरफ फरीद जी ने अच्छे कर्म करने की ओर इन्सान का ध्यान दिलाया है वहीं दूसरी ओर बुरे कर्म करने का परिणाम भी दर्शाया है ताकि इन्सान कुछ सबक सीख सके और मंदे अमल (कर्म) करने से बच सके । फरीद जी ने कपास, ईख, कागज और मिट्टी की हांडी और कोयले की उदाहरण प्रस्तुत कर बुरे कर्म करने वालों को अपने कर्मो का परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने को कहा है । फरीद जी का आशय है कि बुरे कर्मो का परिणाम भी बुरा ही होता है अतः बुरे कर्म करने वाले को अन्त में कष्ट ही सहने पड़ते हैं । फरीद जी लिखते है ।

फरीदा वेखु कपाहे जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ।।
कमादै अरू कागदै, कुन्नै कोई लिआह ।
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ।।49।।

फरीद जी ने मनुष्य को अपनी वाणी के माध्यम से सत्कर्म करने और बुरे कर्मो से बचने की प्रेरणा दी है । उनके अनुसार मनुष्य को ईश्वर का स्मरण करना चाहिए, नम्रता, दया, सहयोग, सेवा, सदाचार आदि मानवीय गुणों को अपने जीवन में अमल के रूप में धारण करना चाहिए । बुरे से भी बुराई का भाव त्याग कर भलाई करनी चाहिए । क्योंकि मनुष्य संसार को अपनाना चाहता है मगर ईश्वर का ध्यान नहीं करता । अच्छे कर्मो से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है । ईश्वर अच्छे गुणो और अच्छे कर्मो (अमल) को धारण करने से मिलता है । फिर ईश्वर की भी प्राप्ति हो जाती है और पूरा विश्व तुम्हारा गुणगान करने लगता है । तभी फरीद जी कहते हैं

आपु सवारहि मै मिलहि मैं मिलिया सुखहोई ।।
फरीदा जे तू मेरा होई रहे सभु जगु तेरा होई ।।

इस प्रकार फरीद जी मनुष्य को संसार में आदर्श मानवीय गुणों की स्थापना का सन्देश देते है और सदैव मानव कल्याण की भावना से जुड़े सत्कर्म करने की प्रेरणा देते हैं । ताकि मनुष्य का लोक और परलोक दोनो में कल्याण हो ।

फरीद-काव्य में भाषागत सौन्दर्य

जब फरीद जी का जन्म हुआ उस युग को भाषाओं के उद्‌भव और विकास का काल कहा जाना चाहिए । साहित्येतिहास की दृष्टि से तो उस समय की भाषा अपभ्रंश थी लेकिन अपभ्रंश के विभिन्न रूपो से ही आधुनिक भारतीय भाषाओ का प्रादुर्भाव हुआ । पैशाची अपभ्रंश से काश्मीरी, ब्रांचड अपम्रंश से सिन्धी का, कैकेय अपभ्रंश से लहँदा का (कुछ विद्वान पंजाबी का विकास भी कैकेय अपभ्रंश मानते है) शैरसेनी अपभ्रंश से पंजाबी, इसके एक रूप नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी, मागधी अपभ्रंश से बिहारी, तथा अर्धमाग्धी अपभ्रंश से अवधी, बघेली, छतीसगढ़ी आदि भाषाओ का निकास एवं विकास हुआ । अपभ्रंश के इस विकास क्रम तथा वर्तमान हिन्दी के बीच की भाषा प्राचीन हिन्दी कहलाती है । कवि चन्दबरदाई का पृथ्वीराज रासो इसी प्राचीन हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाना है । पंजाब में तथा इसके

आस पास सभी कवि इसी भाषा में काव्य रचना कर रहे थे । इसका एक कारण यह था कि अपभ्रंश प्राकृत की अपेक्षा सरल थी । और दूसरे यह जन भाषा के रूप में जनता मे प्रचलित थी महर्षि पतंजलि ने अपने भाष्यों में भी इसी भाषा का उल्लेख किया है । कवि विद्यापति ने अपने पदों की रचना भी अपभ्रंश में की है ।

डा. सुरेन्द्र कोहली के अनुसार ''बारहवी तेरहवी शताब्दी मे अपभ्रंश समूचे उतरी भारत की साहित्यिक भाषा थी । आरम्भिक और मुख्य रूप से तो अपभ्रंश भले ही पश्चिमी भारत की बोली थी लेकिन जहां मुलतान के कवि अब्दूर्रहमान ने इसे अपनाकर साहित्य रचना की वही बंगाल के सिद्धों सरहप्पा और मण्हप्पा ने भी इसी भाषा मे अपने 'दोहा कोषों की रचना की । हिन्दी साहित्येतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि कवि अब्दूर्रहमान ने बारहवी शती मे मुलतान में अपने ग्रन्थ 'सन्देश रासक' की रचना अपभ्रंश में की । इसी शती के अन्त में बाबा शेख फरीद शिक्षा प्राप्त करने हेतु मुलतान में रहें थे । सम्भव है कि इन दोनों कवियो का कभी संयोगवश मिलन भी हुआ हो । यह भी सम्भव हे कि बाबा फरीद ने साथ-साथ अपभ्रंश भाषा का भी ज्ञान अर्जित किया हो । भाव यह है कि उस समय की प्रचलित साहित्यिक भाषा का ज्ञान प्राप्त किए बिना फरीद जी की रचना 'सन्देश शसक' का साम्य परिलक्षित नही हो सकता ।

बाबा शेख फरीद जी की भाषा के विपय में डा. विजयेन्द्र स्नातक का कथन है । ''लोक भाषा (मुलतानी अथवा हिन्दी) का प्रयोग करने वाले बाबा फरीद से पूर्व

साहित्य में अपभ्रंश का प्रयोग हो रहा था । परन्तु हिन्दी में निश्चित रूप से रचना करने वाले बाबा शेख फरीद शकर गंज का नाम सबसे पहले आता है । यदि शेख फरीद की वाणी को प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) का रूप माना जाए तो हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना परम आवश्यक होगा । और यदि इनकी वाणी को प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) का गौरव प्राप्त हो सका तो इतिहास लेखकों को नए सिरे से अपनी स्थापनाओ पर विचार करना होगा ।''

बाबा फरीद-उ-दीन मसउद का जन्म 5 अप्रैल 1173 ई में गांव खोतवाल, जिला मुलतान में हुआ था।बाद मे इनके जीवन की एक महत्त्वपूर्ण धटना के कारण इनके नाम के साथ शकरगंज जुड़ गया । फारसी भाषा में 'शकर गंज' का अंर्थ है मिठास का भंडार । वास्तव मे इनकी वाणी मे इतनी मधुरता और नम्रता थी कि ये सब को अपना बना लेते थे । यही बात इनकी रचित वाणी से भी प्रामाणित होती है । फरीद जी भाषा की मधुरता के कारण ही 'शकरगंज' कहलाए । एक अन्य कथा इस प्रकार प्रचलित है। ।जब फरीद जी पांच छः वर्ष के थे तो उनकी माता ने उन्हे नमाजं पढ़ने की आदत डालने के लिए फरीद जी से कहा कि नमाज पढ़ने वाले को अलाह शक्कर देता है । इनकी माता रोज स्वयं मुसल्ला (चटाई) के नीचे शक्कर की पुडियां रख देती थी । एक दिन वह शक्कर की पुड़ियां रखना भुल गई । वे फरीद जी को नमाज पढ़ने का आदेश देकर स्वयं किसी कार्यवश घर से बाहर चली गई । फरीद जी ने नियम पूर्वक नमाज पढ़ी और बाद में मुसल्ला(चटाई)

इकट्ठी की तो नीचे से पहले की तरह ही शक्कर की पुडिया मिली । उनकी माता जी ने वापिस आकर पूछा तो उन्होने बताया कि उन्होने शक्कर खाई है तो उन की माता जी हैरान रह गई । उनकी वाणी में मधुरता है । उनकी रचना जनसाधारण की भाषा मे हैं और इतनी लोक प्रिय हैं कि आज तक लोगो की जुबान पर मुहावरो और लोकोक्तियों की तरह चढ़ी हुई है । फरीद काव्य गीत और संगीत के गुणसे से समृद्ध काव्य है ।

इतना तो निश्चित ही हे कि शेख फरीद ने जो रचना की उसका मूलरूप आदि ग्रन्थ 'श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब' में सुरक्षित है । यही फरीद काव्य का प्रामाणिक स्रोत है ।पन्द्रहवी शती के अन्त में श्री गुरुनानक देव जी ने फरीद जी के अनुयायी बारहवें शेख इब्राहीम (फरीद) से बाबा फरीद-उ-दीन मसउद गंज-ए-शकर की वाणी प्राप्त की और उसे अपनी 'पोथी'मे संकलित किया । बाद में इसी वाणी को पंचम गुरु अर्जुन देव जी ने 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब मे सम्मिलित कर इसे गौरवान्वित किया । वास्तव में फरीद जी के 112 श्लोक, दो शब्द राग आसा तथा दो शब्द राग सूही में श्री गुरु ग्रंन्थ साहिब में उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त बीच-2 में वाणी की स्पष्टता व्याख्या हेतु 18 श्लोक गुरु साहिबान के भी संकलित है।फरीद वाणी आकार की दृष्टि से भले ही कम है मगर गुणवत्ता की दृष्टि से मानव जीवन का मार्गदर्शन करने में सक्षम है ।

फरीदवाणी का रचनाकाल भले ही अपभ्रंश युग के तथा आधुनिक आर्य भाषाओं के उद्गम काल के संक्रातिकाल के अन्तर्गत आता है तो भी फरीद जी ने

जिस भाषा का प्रयोग किया है वह जनमानस के सर्वथा अनुकूल है । फरीद जी अरबी, फारसी, अपभ्रंश का ज्ञान रखते हुए भी इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि मानवता का सन्देश जनभाषा में ही दिया जा सकता हे । लहंदा इस समय उनके आस पास के लोगों की जन भाषा के रूप में विकसित हो रही थी । अतः उन्हे उसी भाषा में अपनी बात कही ।

भाषा के विकास का एक शाश्वत नियम है कि जब कोई भी जनभाषा साहित्यिक रूप धारण करती है तो लोक बोली जो उस समय में प्रचलित होती है उसका स्थान ग्रहण कर लेती है । साहित्यिक भाषा व्याकरण-सम्मत होकर जटिल हो जाती है और जनमानस उस समय की प्रचलित लोक-बोलियों का प्रयोग कर विचार विनिमय का साधन बना कर उसे व्यवहारानुकूल बना देता है । यही आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास की भी कहानी है । जब अपभ्रंश ने साहित्यिक भाषा का रूप धारण किया इसमें सिद्धो आदि ने अपने ''दोहे' रचे तथा अब्दुर्रहमान ने 'सन्देंश-रासक की रचना की तब लहंदा आदि लोक बोलियों का विकास आरम्भ हुआ । शेख फरीद ने अपनी काव्य रचना इसी युग में की है । भले ही फरीद जी ने अपनी बात कहने के लिए उस समय के समाज की प्रचलित भाषा पंजाबी का प्रयोग किया हे तो भी कहीं कहीं उनकी भाषा संस्कृत, अपभ्रंश तथा प्राकृत से प्रभावित हुई है । डा. धर्मेन्द्र गुप्त के अनुसार ''ध्वनि, रूपरचना, वाक्य रचना, अर्थतत्त्व तथा शब्दकोश इन सभी दृष्टियों से इस भाषा में प्राचीन तथा नवीन का मेल देखा जा सकता है । इस भाषा का प्राचीन तत्त्व

मुख्यत: अपभ्रंश मूलक होते हुए भी कुछ स्थितियों में प्राकृत अथवा उससे भी पूर्ववर्ती ती भाषा से प्रभावित प्रतीत होता है । दूसरी और इसका नवीन तत्त्व आज की पंजाबी भाषा और विशेषत: उसका लहिंदी उपभाषा के पुराने अथवा प्रारम्भिक रूप का प्रतिनिधित्व करता है ।'' फरीद जी की इस भाषा में अपभ्रंश से पूर्ववर्ती समृद्ध भाषाओं तथा उस समय की पंजाबी विशेषत: लहिदीं जो कि मुलतान के आसमास प्रचलित थी का मिला जुला रूप उपलब्ध होने का विशेष कारण यह है कि फरीद जी सूफी, दरवेश थे । भ्रमण उनकी मूल प्रकृति थी । विभिन स्थानों पर, विभिन्न लोगो से सम्पर्क में आने के कारण उनकी भाषा में अनेक भाषाओ के शब्द स्वाभाविक रूप से ही आ गए हैं । मूल रूप से फरीद की भाषा का आधार मुलतान की साहित्यिक परम्परा से सम्बद्ध प्रौढ़ भाषा पंजाबी ही माना जाता हैं ।जिस पर लहंदी का विशेष प्रभाव है । अन्य भाषाओं के शब्दो का तद्भव रूप भी उनकी भाषा को समृद्ध करता है । अरबी, फारसी, प्राकृत अपभ्रंश,संस्कृत के तद्भव शब्दो का फरीद काव्य में मणिकांचन योग हुआ है । प्रो. प्यारा सिंह पदम लिखते है । ''शेख फरीद सारा पंजाब घूमे थे । काफी समय 15-20 वर्ष हांसी, हिसार की ओर भी रहे । इसी लिए उनकी भाषा अधिकतर केन्द्रीय ढंग की हो गई थी । लेकिन इतना तो हमें स्वीकार करना ही होगा कि लहन्दी को प्राप्त प्राचीन नमूना केवल फरीद जी के श्लोक ही है। इनका भाषागत चरित्र सचमुच भिन्न है ।''

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि पंजाबी

भाषा का उद्भव और विकास अपभ्रंश से ही हुआ है अतः अपभ्रंश भाषा का पंजाबी पर प्रभाव स्वाभाविक ही है बारहवी- तेरहवी सदी के आस-पास यह उस समय के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र मुलतान मे अत्यधिक लोकप्रिय थी । यही कारण रहा होगा कि फरीद जी ने इसी लोक प्रचलित पंजाबी भाषा को अपनी वाणी का माध्यम बनाया । साहित्यिक रूप में आ जाने के कारण पंजाबी भाषा का व्याकरणसम्मत हो जाना स्वाभाविक ही था । यही रूप भाषा को शाश्वत रूप और उसमे रचित साहित्य को अमरत्व प्रदान करता है । इसमें मानव जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की झलक विश्व-बन्धुत्व की भावना को उजागर करती है । इसीलिए साहित्य व्यष्टि से समष्टि तक व्याप्त हो जाता है । यही साहित्य सद्साहित्य और कल्याणकारी हो जाता है । उसमें सत्यम्, शिवम् सुन्दरम् की भावना समाहित हो जाती है । फरीद वाणी भी इसी कोटि में आती है । इसे आदि ग्रन्थ में संकलित किए जाने का गौरव भी इसी विशेषता के कारण प्रदान किया गया । यही वाणी आज भी जन-जन को प्राभवित करती है । भाषा की समृद्धता के कारण ही फरीद काव्य आज भी उतना ही सार्थक और महत्त्वपूर्ण है जितना फरीद जी के अपने युग में था ।

भाषा का व्याकरणसम्मत होना और समृद्ध भाषा में सद्साहित्य की रचना करना फरीद-काव्य को साहित्यिक दृष्टि से भी श्रेष्ठ काव्य घोषित करता है । फरीद वाणी में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है एक तरफ वह साहित्यिक भाषाओं से जुड़ी है दूसरी ओर लोक भाषा की छाप लिए हुए है । लगता है भाषा फरीद जी के

भावों की अनुगामिनी है । फरीद जी उसे जैसा चाहें अपने भावानुकूल ढांल सकते है । यहाँ हम उनकी भाषा की सामान्य-प्रवृतियों का सोदाहरण अध्ययन करेगें । अपभ्रंश भाषा के साहित्यिक रूप धारण कर लेने के पश्चात संस्कृत और प्राकृत भाषाओं की संयोगात्मक प्रवृत्ति का विघटन होने लगा था । लेकिन यह विघटन अभी पूरी तरह नही हुआ था । कुछ गुण ज्यों के त्यो पंजाबी भाषा मे आ गए थे । यही कारण है कि फरीद की भाषा में सम्बन्ध कारक और सम्प्रदान कारक सम्बन्धी कुछ परसर्ग भी उपलब्ध हैं । यथा

नो - केल करेंदे हंस नो अचिंते बाज पए। (99)
सिउ-फरीदा जा तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ।
की-रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ।।28।।
नालि.फरीदा गलीए चिकडु दूरि घरू नालि पिआरे नेहु ।।24।।
सेती-फरीदा डुखा सेती दिन गइआ, सूली सेता राति ।।85।।
हेति-लंमी लंमी नदी वहै कंधी करे हेति ।।86।।

फरीद जी ने अधिकांशत अपभ्रंश और प्राकृत परम्परा के विभक्ति रूपो का ही प्रयोग किया है ।आपने कर्ता कारक एकवचन के साथ 'उ' का प्रयोग करके संस्कृत के विसर्ग, प्राकृत के ओ तथा अपभ्रंश के उसे रूप को प्रतिपादित किया हे यथा

दभु-फरीदा थीउ पवाही दभु जे साई लोडहि सभु ।।
चितु-फरीदा कोठे मंडप माडिया ऐतु न लाए चितु ।
लोकु-गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ।।

कर्ता कारक बहुवचन के कुछ रूप 'आ' के साथ मिलते है जो संस्कृत के सर्वे तथा प्राकृत के सब्बे का आभास कराते है। यथा

कागा-कागा चूंडि न पिजरा बसै त उडती जाहि ।।92।।

सभे-सभे वस्तु मिठिआ रब न पुजनि तुधु ।।

अपादान और अधिकरण कारको का प्रयोग भी यत्र तत्र उपलब्ध है निम्नलिखित श्लोक मे बारि शब्द अधिकरण कारक तथा सरीरहु शब्द अपादान का द्योतक है ।

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साई मुझे न देहि ।।

जे तू ऐवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ।।

किसी भी भाषा मे ध्वनि का विशेष महत्त्व होता है क्योकि भाषा का आधार और स्वरूप ध्वनि केन्द्रित होता है । फरीद जी की भाषा की अपनी विलक्षण पहचान भी ध्वन्यात्माकता ही है । पूर्ववर्ती भाषाओं मे ध्वनि परिवर्तन के फलस्वरूप ही नवीन भाषाओ का उद्‌गम अथवा भाषा का विकास सम्भव है । फरीद-काव्य का अध्ययन करते समय अनेक स्थानो पर हमें अघोष ध्वनियो के सघोषीकरण की प्रवृति परिलक्षित होती है । यथा

कंटक से कंडा-फरीदा जंगल जगंल किआ
भवहि वणि कंडा मोडिहि ।।

सकल से सगला-कागा करंग ढूंढोलिआ
सगला खाइआ मासु ।।

काक से काग-कागा चूंडि न पिजरा बसै
त डडरि जाहि ।। 92 ।।

कन्दल से गन्दला-फरीदा ए विसु गंदला
धरीआ खडु लिवाडी ।। 37 ।।

भ्रान्ति से भरांदि-फरीदा साहिब दी
करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ।।60।।

कही कहीं सघोष-अघोष ध्वनियो का लोप भी है ।
लोचन से लोइन-

फरीदा जिन लोइन जगु मोहिआ से लोइन मै दिठु ।।14।।

कोकिल से कोइल-

काली कोइल तू कित गुन काली (राग सूही)

नदी से नई-

फरीदा रब खजूरी पकीआ माखिअ नई वहनि ।। 89।।

फरीद जी ने अपने काव्य में अपने युग की प्रादेशिक भाषा लहंदी का प्रयोग इसलिए भी किया था क्योकि यह उस समय की नवीनतम समृद्ध और लोकप्रिय भाषा थी । इस भाषा में पूर्ववर्ती भाषाओ के मूर्धन्यकरण की प्रवृत्ति को स्पष्ट रुप में देखा जा सकता है । अथवा ऋ ध्वनि से प्रभावित मूर्धन्यकरण:

जैसे ग्रन्थि से गंढि-जाणा

लडु छिजणा पीडी पाइ गंढि ।।

दृष्ट से डिठा-फरीदा जिन लाइण

जगु मोहिआ से लोइण मै दिठु ।।

दुभागिनी से दोहागणी-जाइ पुछहु

दोहागणी तुम किउ रैणि बिहाउ ।।

दुर्मना से डुमणा-हुसु चलसी डुमणा

अहि तनु ढेरी थोसी ।।

सुभागिनी से सोहागणी-पिरू बातडी

न पुछई धन सोहागणि नाउ ।।

इसी प्रवृत्ति के अन्तर्गत जो कि लहंदी भाषा की विशिष्ट प्रवृत्ति के अन्तर्गत जो कि लहंदी भाषा की विशिष्ट प्रवृत्ति और लक्षण माना जाता है न के स्थान पर ण का प्रयोग होता है । फरीद-वाणी मे भी पर्याप्त मात्रा मे ऐसे शब्द उपलब्ध है । यथा

वेदना से वेदण–साई बाझहु आपणे वेदण कहिए किसु ।।

रजनी से रैणि–जाई पुछहु दोहागणी
तुम किउ रैणि विहाइ ।।

सज्ज्न से सजण–फरीदा गली सु
सजण वीह इकु ढुढदी न लहा ।।

पवन से पउण–कंनी बुजे दे रहा
किती बगै पउण ।।

वन से वण–फरीदा रूति फिरी
वणु कंबिआ पत झडी पाहि ।।

लोचन से लोइण–फरीदा जिन लोइण मैं जगु मोहिया से लोइण मैं डिठु इसके अतिरिक्त कुछ अन्य ध्वनियों के परिवर्तन भी फरीद वाणी में स्वाभाविक रूप से उपलब्ध है जो उनकी वाणी की पहचान बन गए है । यथा दीप से दीवा (प से व) ध्वनि लवणा से लूण (व से उ) इसी प्रकार ध्वनि का परिवर्तन देखा जा सकता है ।

इसी प्रकार य ध्वनि ज में यौवन से जोबन (34) र् ध्वनि ल् में रजु से लजु (68), व् ध्वनि ब् मे वसे से बसै (92) संयुक्त अक्षर के रूप में आने वाले अग्रिम श् और स् का लोप भी फरीद वाणी में मिलता है । यथा स्कन्ध से कंध (84) स्थान से ठाउ (106) शमशान से मसाण (36) तथा क्ष (कष्) का ख में परिवर्तन भी हुआ है । यथा वृक्ष से रूख (6) आदि । बाबा फरीद जी की वाणी व्याकरण सम्मत होने के कारण ही किसी भी समृद्ध भाषा के समान ही सक्षम और भावो की संवाहिनी हें । फरीद जी ने वाणी के शाश्वत और विश्वव्यापी रूप देने हेतु ही इसे साहित्यिक और व्याकरण सम्मत बनाया संक्षेप में व्याकरण के नियम

अनुसार उनकी वाणी से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं । वर्तमान काल के क्रिया रूप अपभ्रंश से सर्वथा तुलनीय है इनमे अपभ्रंश की संयुक्त क्रिया की प्रवृति की झलक मिलती हे जैसे

वसी- वसी रबु हिआलीअै जंगल किआ ढुढेहि ।। (19)

पुछई - पिरू वीतड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ।।

होई-आपु सवारहि मै मिली मै मिलिआ सुखु होई ।।

भूतकाल के प्रकटीकरण के लिए कर्मवाच्य कृदन्तो का रूप फरीद वाणी मे विविध रूपो मे हुआ है । यथा

तुटा-फरीदा भन्नी घड़ी सवनड़ी तुटा नागर लजु ।।

डिठा-ते जेवडु मै नाहि को जब जग डिठा हंठी ।।

मोहिआ-फरीदा जिन लोउण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ।।

पलिआ-फरीदा सिरू पलिया दाढ़ी पली मुछा भी पलिआ ।।

भविष्यत काल के क्रिया रूपों को दर्शाने के लिए फरीद जी ने सस्कृत के वैदिक भाषा की परम्परा का अनुकरण करते हुए लकार पद्धति का अनुसरण किया है । यथा निम्नलिखित क्रियारूप क्रमश : यासि, भ्वासि, रक्षसि खदासि, (लेट लकार) से तुलनीय हैं ।

जासी-हथु न लाइ कसुमड़े जलि जासी ढोला ।।

होसी-जे सउ वरियां जीवणा भी तनु होसी खेह ।।

रखसी-जे तु ऐवे रखसी जीउ सरीरहु लेहि ।।

खसी-अगै गए सिज्जापसनि चोटा खासी कउण ।।

अन्य कई स्थानो पर भी फरीद वाणी पर अपनी पूर्ववर्ती भाषाओ का प्रभाव परिलक्षित होता है । यथा निम्नलिखित श्लोक में सिजउ, बरसउ, ओर तुटउ शब्द

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ।।
जाह मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ।।25।।

क्रमशः (लोटलकार) आज्ञावृति के सूचक हैं । इनके संस्कृत रूप इस प्रकार हैं – सिञ्चतु, वर्षतु, और त्रुटयतु । कुछ अन्य क्रिया रूपों में
जलै, (22), तुटै (24) तपै (119) निवै (71) आदि शब्द संस्कृत के ज्वलेत, त्रुटयेत, तपेत्, नमत् आदि शब्दो से तुलनीय है इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द जो संस्कृत परम्परा से आगे चलकर लहिंदी भाषा मे प्रचलित हुए फरीद वाणी मे उपलब्ध है । फरीद वाणी में प्रयुक्त क्रमशः भविओहि (20) जनितोहि (73) तथा पतीणोहि शब्द संस्कृत के कर्मवाच्य के वर्तमानकाल के लिए प्रयुक्त हुए है संस्कृत में इनके रूप इस प्रकार है । भ्रमितोस्मि, जनितोसि, तथा प्रतीतोसि ।

क्रिया रूपों के अतिरिक्त फरीद जी की शब्दावली भी तत्कालीन प्रचलित भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी उदारता का परिचय देती है । एक ओर फरीद जी जनभाषा को महत्त्व देते है वही दूसरी और अपनी भाषा की समृद्धि के लिए अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनाते हैं । उनकी भाषा मे संस्कृंत के तत्सम और तद्भव शब्दो के अतिरिक्त अनेक शब्द ऐसे भी है जो प्राकृत अथवा अपभ्रंश से लिए गए हैं । यहाँ तक कि फारसी के भी शब्द यत्र-तत्र उपलब्ध हो जाते है । यही कारण है कि फरीद वाणी प्रत्येक मनुष्य को उसकी अपनी लगती है । फरीद जी का प्रमुख उद्देश्य था अपनी बात जनसामान्य तक पहुँचाना । इसके लिए भाषा दीवार न बने इसी लिए उन्होनें भाषा को दृष्टिगत न करके केवल शब्द और भाव संचार की क्षमता को महत्त्व दिया । यही उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है । अनेक

स्थानो का भ्रमण भी उनकी भाषा मे अनेक प्रकार के शब्दो के सम्मिलित होने का कारण बना । सुयोग्य कलाकार की तरह भाषा के धनी फरीद जी ने प्रत्येक शब्द को अपनी वाणी में रत्न की तरह जड़ दिया है ।

केवल सूफी काव्य में ही नही अपितु भारतीय आध्यात्मिक साहित्य में फरीद काव्य का विशिष्ट स्थान है । रागों में रची गई वाणी में अधिकाशतः हिन्दुस्तानी शब्द रूपो का प्रयोग हुआ है । फरीद वाणी में फरीद जी के दो राग आसा व दो सूही में मिलते है । राग में रचना करने का कवि का अपना उद्देश्य होता है । संगीत वाणी को रस प्रदान करता है । अपभ्रंश भाषा मे कई प्रकार के छन्दो का प्रयोग मिलता हैं । जिसमे दोहा अथवा दोहरा का विशेष स्थान है । बाबा फरीद जी ने भी इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए दोहा-छंद का प्रयोग किया है । यह छन्द प्रबन्ध और मुक्तक दोनो प्रकार की रचनाओं के अनुकूल है । बाबा फरीद के दोहा शैली में रचे मुक्तक श्लोक कहलाते है । श्लोक' संस्कृत साहित्य में सभी छन्दों के लिए उपयुक्त नाम है । फरीद जी के कुछ श्लोको की भाषा शुद्ध लहिंदी है तथा कुछ की केन्द्रीय पंजाबी कहीं कहीं आवश्यकतानुसार अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान हुआ है । इससे छन्द- विधान और भाषा प्रवाह मे सहायता मिलती है । अरबी-फारसी के शब्द आध्यात्मिक बोध कराते है । यथा बन्दगी,परवरदिगार, शेख,मुरीद हयाती, शैतान, अजराइल तथा मुसल्ला आदि ।

प्रायः कहा जाता है कि सामान्य शब्दो में कही गई बात उतना प्रभाव नही डालती जितना कि व्यंग्यार्थ

बोध द्वारा प्रतीकात्मक शैली मे कही गई बात प्रभाव डालती है । यही कारण है कि फरीद जी ने भी अपनी बात को प्रभावोत्पादक ढंग से कहने के लिए अपनी वाणी में अनेकानेक प्रतीको का प्रयोग किया है ।

फरीद जी रहस्यवादी कवि थे । अतः रहस्यात्मकता को प्रतीकात्मकता द्वारा ही समझाया जा सकता है । दूसरी ओर उत्कृष्ट काव्य का लक्षण भी यही है कि बात को सीधे ढंग से न कहकर उसे रोचक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाए । फरीद जी ने आध्यात्मिक विचारधारा के माध्यम के रूप में अनेक प्रतीको का सहारा लेकर अपनी बात को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है।यथा ईश्वर का आश्रय पाने के लिए तथा सांसरिकता का निषेध करने हेतु इन्हों ने मनुष्य को दरिया से मित्रता करने तथा पोखरो (तालाबों) से विमुख रहने की बात कही है । यथा

फरीदा सोइ सरवरू ढुढि लहु जिथहु लभी वथु ।।
छपडि ढुंढ किआ होवे चिकडि डुबै हथु ।।

नदी के किनारे उगा हुआ वृक्ष क्षण भंगुरता का प्रतीक है । कभी भी नदी में गिर सकता है । इसी प्रकार तिल थोडडे मानव की अल्पायु का प्रतीक है । जिसे बहुत संभालने की आवश्यकता है । ऐसे कटु वचन शायद मनुष्य न सहन कर सके । मगर बाबा फरीद जी की भाषा मे ऐसे अनेक प्रतीको का स्थान स्थान पर प्रयोग हुआ जो मनुष्य का सहज ही मार्ग दर्शन कर देते है । फरीद जी ने अपनी वाणी मे अनेक प्रकार के प्रग्य-प्रतीको अथवा विपरीत स्थिति के सूचक शब्दो को चरितार्थ करने वाले प्रतीको का प्रयोग भी

किया है । यथा सुहागिन–दुहागिन, कुसभंडे–मजीठ, सरवर–छपड़ (पोखर) कुआरी–विवाहित, तथा हंस और बगुला । इन सभी प्रतीको के माध्यम से फरीद–वाणी का सन्देश और अधिक स्पष्ट हो जाता है ।

फरीद जी की भाषा में दैत्तिक जीवन के अनेक अनुभव समाहित है । उन्होने अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति हेतु स्थान–स्थान पर अपनी वाणी में बिम्बों का प्रयोग भी किया है । उनकी बिम्बावली प्राकृतिक एवं मानव जीवन के अनेक पहलुओं को चित्रित करती हुई उनके सन्देश को मुखरित करती है । सूफी दरवेश बाबा फरीद जी ने प्राकृतिक दृश्यों का साक्षात्कार करते हुए जो अनुभूति अर्जित की उसका चित्रण उन्होने ने अपनी वाणी मे अंकित बिम्बों के माध्यम से किया है । उन्होने रेगिस्तान, जंगल, कांटे, मैदान, पर्वत, खेती, हंस, बगुले, तालाब, दरिया, कमल, कौआ, कोयल, कुसभंडा, सरोवर, घास, खाक, वर्षा, वृक्ष आदि के बिम्बों को अंकित कर अपनी बात को अत्यन्त सरल ढंग से प्रस्तुत किया है । बाबा फरीद ने गृहस्थी के रूप में अपना जीवनयापन किया था । अतः गृहस्थ जीवन के अनेक अनुभवो की झलक भी उनकी वाणी में अंकित बिम्बों के माध्यम से मिल जाती है । ऐसा लगता है । ये शब्द उनकी भाषा के चक्षु है जिनसे उनकी मान्यताओं और अनुभूतियों को आंका जा संकेता है । प्रियतम, प्रियतमा, वर–दूल्हा, यौवन–बुढ़ापा, जीवन–मृत्यु आदि शब्द उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ ऐसे बिम्ब हे जो गृहस्थ जीवन के अनुभवो को साकार करते है । दैनिक जीवन की घरेलु वस्तुओं का अधिकाँशतः प्रयोग उनके गृहस्थ

जीवन के अनुभवो की पुष्टि करता है । यथा सोहागण, दोहागण, दीपक, नमक, खंउ, कागज, माजल, आटा, तिल, रोटी, पानी, दर, दरवाजा, कुल्हाडा, घड़ा, मंडप, महल, आदि ।

फरीद वाणी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता और लोकप्रियता है । लोकप्रिय होने के कारण ही इनकी वाणी को जनसामान्य लोकोक्तियों के रूप में प्रयुक्त करता है । फरीद जी की वाणी आकार में संक्षिप्त होने पर भी प्रभाव की दृष्टि से बहुत बड़ी है । इनकी वाणी को अगर गागर में सागर कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति न होगी । इनकी वाणी में से कुछ उदारहण देखे ।

1. जिना खाधी चोपड़ी घणे सहणगे दुख ।।28।।
2. अगहु नेडा आइआ पिछा रहिआ दूर ।।9।।
3. आपनड़े गिरीबान महि सिरू नीवा करि देख ।।छ।।
4. फरीदा बुरे दा भला करि गुस्सा मनि न हडाई ।।78
5. फरीदा जे तै मारन मुकीआं तिना न मारे घुमि ।।
6. फरीदा खाकु न निंदीअै खाकु जेड़ न कोई ।।17।।
7. वसी रबु हिआलीअै जंगलु किआ ढुंढेहि ।।19।।
8. फरीदा जिन्नी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े बिसारि ।।

फरीद वाणी का अध्ययन करते समय ऐसा आभास होता है । फरीद जी की भाषा का एक छोर उनकी पूर्ववर्ती भाषाओ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश संस्कृत, अरबी फारसी से जुड़ा हुआ है तो दूसरी ओर उनके युग की प्रचलित जन भाषाओं लहंदा, मुलतानी और पंजाबी से । उनकी भाषा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसका पार पाना सामान्य मनुष्य के वश में नही है । उनकी वाणी

अमर–साहित्य है जो मानव जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है । उनकी वाणी अलौकिक सन्देश है ।भाषा उनकी संवाहक है । उनकी भाषा का प्रत्येक शब्द मानवता के कल्याणार्थ है ।

यही कारण है कि आज भी उनकी वाणी हर जाति, वर्ग, समप्रदाय के प्रत्येक मनुष्य को उसके अनुकूल लगती है । फरीद जी भाषा के धनी थे । उनकी भाषा उनकी अनुभूति को अभिव्यक्त करने में सक्षम है ।

लोकचेतना के उद्घोषक : शेख फरीद

संस्कृत के व्याकरण आचार्यो द्वारा 'चेतना' शब्द की व्युत्पत्ति 'चित्' धातु से न्यासत्रन्येति सूत्र द्वारा ल्युट के आरम्भ एवं 'इ' को गुण होने पर स्त्री लिंगार्थक टाप् (आ) प्रत्यच लगाने से निष्पन्न मानी गई है ।

चेतना चित्त धातु का अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान करना, देखना, समझाना, जानना। अत: चेतना का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है वह-शक्ति जिससे कुछ जाना जाए । कहा भी है चेतयते नया इति चेतना । लोकचेतना से अभिप्राय हुआ लोगो में अर्थात समाज में जागरूकता लाना । उन्हें अपने स्वयं के प्रति जागरूक करना ऐसा काम तो वही व्यक्ति कर सकता है जो स्वयं जाग्रत हो, सचेत हो। उदार वृति के कारण प्रत्येक व्यक्ति को अपना जानकार उसका हित चाहता हो उसे बुराइयों से दूर रहने के प्रति सचेत कर सकता हो । अत: सामाजिक उन्नति के लिए लोकचेतना का होना बहुत लरूरी है । लोक-चेतना व्यकितगत चेतना के बिना सम्भव नही है । अत: फरीद जी अपनी वाणी में व्यक्तिगत चेतना पर ही अधिक बल देते हैं । फरीद जी का मानना है कि किसी भी आदर्श

समाज की स्थापना हेतु सदाचार का होना आवश्यक है । वही व्यक्ति दूसरे को कुछ सिखा सकता है जिसका आचरण अच्छा हो । 'वसुधैव कुटुम्बकं'की भावना. तभी पुष्ट हो सकती है । हर मनुष्य दूसरे का हित समझे । मानव उदार होकर दया, क्षमा, शील संयम, धैर्य और त्याग जैसे गुणो को, धारण कर ' परोपकाराय सतां विभूतय:' अर्थात् सज्जनो के ऐश्वर्य परोपकार के लिए होते है को अपने जीवन का लक्ष्य मान लेता है ।

बारहवी शती मे शेख फरीद जी ने भी अपनी कविता के माध्यम से लोक चेतना की ऐसी ही लहर चलाई जिसके बल पर मानव निर्विरोध सारे विश्व को विजय कर सकता है । उनकी वाणी में आध्यात्मिक बोध के साथ-साथ लोकचेतना का उद्घोष भी स्पष्ट परिलक्षित होता है । उन्होने आत्मालोचन और आत्मबोध को अपनी कविता में महत्त्वपूर्ण माना है । आत्मबल होने पर ही आदमी अपने अवगुणों को जान सकता है ।तभी आदमी नैतिकता के मार्ग पर चल सकता है ।

फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से लोक संस्कृति को और अधिक सदृढ़ किया है । फरीद जी ने सामान्य जन जीवन में धर्मिक एवं नैतिक मान्यताओं की पुनर्स्थापना करना श्रेयस्कर समझा । उन्होने कोई नई परिपाटी अथवा पद्धति की नींव नही रखी । उन्होने लोक प्रचलित मान्यताओ अथवा परम्पराओ को ही जनसामान्य के समक्ष रखने का प्रयास किया । यही कारण है कि उनकी वाणी प्रत्येक व्यक्ति के लिए सहज एवं स्वाभाविक हैं । उनकी शब्दावली भी आम बोल चाल की ही है । उन्होने अपनी वाणी में नैतिक

मान्यताओं को अधिक पुष्ट किया है । नैतिकता का धरातल सुदृढ़ होने से ही व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा के माध्यम से अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है । इसके लिए उन्होने मानवीय गुणों को धारण करने पर अधिक बल दिया है । यथा

- बुरे कर्म न करो ताकि अन्त मे पश्चाताप न करना पड़े ।
- अभिमान रहित होकर अपने अवगुणों को देखो ।
- जो कुछ भगवान ने दिया है उसी मे सन्तुष्ट रहो । दूसरों को देखकर ललचाओ नही ।
- पराधीन जीवन से मृत्यु श्रेष्ठ है ।
- बुराई करने वाले का भी भला करो ।
- परमात्मा जंगलो मे नही हृदय में निवास करता है ।
- इस संसार में कोई बुरा नही है सभी जीवो मे ईश्वर बसता है ।
- खाक (तुच्छ) की भी निन्दा न करो ।
- अपने गुणों को मत देखो अवगुणो को देखो ।
- जो बोओगे वही काटोगे, (जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा । (23)

फरीद जी एक आदर्श व्यक्तितत्व के स्वामी थे । वे उसी आदर्श को व्यक्तिगत चेतना के माध्यम से मानव के मार्गदर्शन हेतु अपनी वाणी में प्रस्तुत करते है। इसके लिए वे 'फरीदा' सम्बोधन का प्रयोग करते है । आत्मबोध के लिए प्रथम शर्त है आत्मालोचन । फरीद जी कहते है मनुष्य दूसरो की आलोचना की अपेक्षा स्वयं की आलोचना करे । अपने अवगुणो को दूर करने का प्रयास करे । अहं का निषेध कर नम्रता को अपनाए । सात्विक एवं सादा भोजन करे । बुरे व्यक्ति के साथ

भी भलाई करो । इसी से मनुष्य अन्य मनुष्यों से ऊपर उठ सकता है । यही सदाचार का मार्ग है । जिस पर चलकर व्यक्ति मानवीय गुणों को धारण करता है । मानवता से ही ईश्वरोन्मुखी मार्ग प्रशस्त होता है । मानव प्रेम ही ईश्वर प्रेम है । सूफी मतानुसार लौकिक प्रेम ही अलौकिक प्रेम का रूप धारण करता है । तब मनुष्य ईश्वरीय प्रेरणा से परोपकार, दया,क्षमा, प्रेम नम्रता, त्याग, सन्तोष, धैर्य, सहनशीलता अहिंसा और सेवा आदि मानवीय गुणों से अलंकृत होकर इहलोक और परलोक मे प्रतिष्ठित होता है । मानव मात्र के प्रति सद्‌भाव रखना ही सच्ची भक्ति है । यह फरीद जी वाणी का सन्देश है और नैतिकता का मूलाधार है । इसी से विश्वबन्धुत्व की भावना पनपती है । फरीद जी की वाणी इन्ही नैतिक मान्यताओं की प्रेरणा स्रोत है ।

फरीद जी ने अपने अनुभवो को ही अपनी वाणी के माध्यम से सम्प्रेषित किया है। उनकी कथनी और करनी मे कही कोई अन्तर नहीं है । उन्होने सामान्य मानव को केन्द्र मे रख कर उसके आचरण को सरल एवं सहज रूप प्रदान करने का प्रयास किया है । खान. पान, रहन–सहन, बोल–चाल, यहाँ तक कि भजन बन्दगी सम्बन्धी सभी प्रकार के आचरण का आदर्श रूप उनकी वाणी मे उपलब्ध है । यही कारण है कि उनकी वाणी हर भाषा, वर्ग, सम्प्रदाय और प्रान्त के लोगो को उनकी अपनी लगती हैं । फरीद जी की शैली की विशिष्ट पद्धति उनकी मौलिक देन है । फरीद जी ने उपदेश भी इतनी मधुर और सहज भाषा मे दिये हैं कि कही भी उपदेशात्मक नीरसता का आभास नही होता ।यही कारण

है कि 'फरीद वाणी' को पढ़कर मनुष्य उसका अमल करने के लिए बाध्य हो जाता है ।

फरीद जी अपनी वाणी में कहते है कि ईश्वर प्रदत्त उपहारो को सहर्ष स्वीकार करो।दूसरो को देखकर सुखों और साधनो के लिए अपने मन को भटकने से रोको । इससे तुझे और अधिक दु:ख होगा ।

रूखी सुखी खाई के ठंडा पानी पीऊ ।।
फरीदा देख पराई चोपड़ी न तरसाए जीउ ।।29।।

फरीद जी ने समाज मे दूसरो को उपदेश देने की अपेक्षा अपने आपको सुधारने पर बल दिया है उनका कहना है कि अगर हर व्यक्ति अपने अवगुणो को दूर कर लेगा तो सारा समाज अवगुण रहित हो जाएगा । इससे बड़ा लोक चेतना का प्रमाण और क्या हो सकता हे ? फरीद जी ने स्वयं का विष्लेषण करके दूसरो के गुणो को अपनाने पर बल देते हुए कहा है । अपने थोथे ज्ञान पर गर्व करने को अपेक्षा अपने अन्दर झांक कर देखो अपने अवगुणो को दूर करो ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु
काले लिखु न लेख ।।
आपनड़े गिरीवान महि
सिरू नीवा करि देख ।।6।।

फरीद जी दूसरो से उम्मीद रखने की अपेक्षा प्रत्येक कार्य का आरम्भ स्वयं ही करते है । उनकी कविता कोरा उपदेश नही है । अपितु अनुभव जन्य ज्ञान है । फरीद जी ने आत्मनिरीक्षण का यह कार्य स्वयं से ही आरम्भ किया है । वे कहते है कि आत्म निरीक्षण से आत्मिक शुद्धि होती है । उनकी लोकचेतना की यात्रा

'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होती है ।

काले मैडे कपड़ काला मैडा वेसु ।।
गुणही भरिया मै फिरा लोक कहे दरवेसु ।।61।।

फरीद जी ने प्रत्येक मानव को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दी है जिससे इहलोक और परलोक दोनो में ही जीव को सम्मान मिलता है । मानव को दुर्गुणों को छोड़ कर सद्गुणो को अपनाना चाहिए और सत्कर्म करने चाहिए । यही कर्म उसको ईश्वर के आगे शर्मिदां होने से बचा सकेंगे ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े बिसारि ।।
मत सरमिंदा थीवहि साई दे दरबारि ।।59।।

फरीद जी ने सामाजिक बुराइयो को दूर करने हेतु बुरे का भी भला करने का सन्देश दिया है । कितनी बड़ी बात है कि जो तुम्हारा बुरा करे उसका भी भला करो । मगर इसके लिए सहनशीलता की आवश्यकता है, क्रोध को त्यागने की आवश्यकता है ।

फरीदा बुरे पर भला करि गुसा मन न हडाई ।।
देहि रोगु न लगई, पलै सभ किछु पाई ।।78।।

फरीद जी समाज में निम्न जातियो के प्रति उपेक्षा भाव को दूर करने हेनु लोकचेतना लाने के लिए कहते है कि संसार में कोई भी वस्तु तुच्छ या हीन नही है । इसलिए सब जीवो से समानता का भाव रखना चाहिए ।

फरीदा खाकु न निन्दीऐ खाक जेडु न कोई ।।
जीवदिया पैरा तले मुइया उपरि होई ।।17।।

अगर समाज मे ऐसी चेतना पैदा हो जाए तो समाज 'सर्वे भवन्तु सुखिनः की स्थिति को पा लेगा । मानव उस अवस्था को पा लेगा जहाँ उसे कोई कष्ट

छू तक न सकेगा । वह महानता की उस स्थिति में पहुंच जाएगा जहा क्षमा उसका आभूषण बन जाती है ।

उक्त विवेचन को ध्यान मे रखते हुए हम यह कह सकते है कि फरीद जी की वाणी मे वे सभी गुण विद्यमान है जो उन्हे लोकचेतना का उद्घोषक कवि सिद्ध करने मे सक्षम हैं। जन जागृति हेतु जिस सम्बल अथंवा उत्साह की आवश्यकता होती है वह फरीद–वाणी में सहज ही उपलब्ध है । फरीद जी व्यक्तिगत चेतना से लोक चेतना पुनः सांस्कृतिक चेतना की ओर अग्रसर होती है । लोकचेतना के बिना कोई भी आन्दोलन सफल नही हो सकता । फरीद जी ने मानव को मानव से जोडंने की, जो लहर चलाई उसके लिए जिस प्रकार के परिवेश की आवश्यकता थी वह उन्होने अपनी अनुभवमयी वाणी के माध्यम से प्रस्तुत किया । उन्होने कटु से कटु सत्य को भी इतनी मधुरता से प्रस्तुत किया कि प्रत्येक व्यक्ति उसे सहज ही स्वीकार कर लेता है । इसी कारण फरीद जी लोक चेतना के सफल उद्घोषक कहे जा सकते है ।

फरीद–वाणी : मानवता का सन्दर्भ

सूफी परम्परा की चिश्ती सम्प्रदाय के प्रसिद्ध प्रचारक शेख फरीदुद्दीन मसऊद शकरगंज का जन्म उस समय हुआ जब भारत राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त संघर्ष के दौर से गुजर रहा था। आक्रमणकारियों ने भारत के साँस्कृतिक गौरव को तहस–नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी । उस समय के निर्दयी और निर्मम शासकों से पीड़ित जनता हाहाकार मचा रही थी । ऐसे समय में बाबा फरीद ने पंजाब की पुण्यशालिनी धरती पर मानव–प्रेम का संचार करने वाली अमर–वाणी की रचना की और भ्रमण करते हुए सन्तप्त मानव को अभय–दान दिया । पंचमेश गुरु अर्जुन देव द्वारा उनकी वाणी को 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में सम्मिलित किया जाना उनकी पावन वाणी की महत्ता और लोकप्रियता का पुष्ट प्रमाण है । यही कारण है कि बाबा फरीद को सूफी और गुरमत परम्परा दोनों में ही समान रूप से सम्मान मिला है ।

फरीद जी ने अपनी वाणी में मनुष्य को उन सभी सद्‌गुणों को धारण करने की प्रेरणा दी है जो एक आदर्श मानव के लिए अनिवार्य होते हैं । नैतिकता

मनुष्य को मानवता की ओर ले जाने का सरलतम साधन है । यही नैतिकता मानव को विषम परिस्थितियों से उबारने में सहायक होती है । नैतिकता प्राणी मात्र के प्रति सहयोग, करूणा, सौहार्द्र, स्नेह, सहानुभुति और संवेदना को विकसित करती है । इन्हीं गुणों के विकसित हो जाने से मनुष्य से मानवता का उदय होता है । वह व्यष्टि से समष्टि की और अग्रंसर होता है । वह निजी जीवन की आकांक्षओं और संकीर्णताओ से ऊपर उठकर विश्व-बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत होकर सम्पूर्ण मानव समाज को एक परिवार समझता है । अपने पराए का भेद समाप्त हो जाता है ।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

अर्थात् यह मेरा है, वह पराया है ऐसा संकीर्ण बुद्धि वाले ही सोचते हैं । उदार हृदय वालों के लिये तो सारी भूमि ही एक परिवार के समान हैं) ऐसी भावना वाला मानव ही महामानव हो जाता हैं । वह सदैव परोपकार की भावना से अपने समूचे जीवन को दूसरों के लिए समर्पित कर देता हैं । वह मानवता की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग सकता हैं । दूसरे की पीडा को हरने के लिए आत्म-बलिदान तक दे सकता है । मानव की यही भावना मनुष्य को श्रेष्उतम मानव बनाने में सक्षम सिद्व होती हैं । मनुष्य दूसरे प्राणियों से ऊपर उठकर सत्य को पा लेता हैं। वह जान लेता है कि मानव-प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम है । अतः मानव-मात्र के प्रति सद्भाव रखना ही सच्ची प्रभु-भक्ति है । यही मानवता का मूलाधार हैं । मानवता ही मनुष्य को सही

जीवन दिशा प्रदान करती है । मानव जीवन को सन्मार्ग प्रशस्त करती है मानव का सद्वृतियों की ओर उन्मुख होना ही मानवता का चरम लक्ष्य है ।

मानवता के सन्दर्भ में जब हम फरीद-वाणी का अध्ययन करते हैं तो हमें लगता है कि सम्पूर्ण फरीद वाणी मानव को मानवता का ही सन्देश देती हैं । फरीद स्वयं एक आदर्श मानव थे । वे मानवीय गुणों,सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, दया, सहयोग, सद्भाव और सहानुभुति की साकार प्रतिमा थे । उनका जीवन समूची मानवता को समर्पित था । अपने युग के मानव की अत्यन्त शोचनीय स्थिति देखकर उनका मन सांसारिक एषणाओं से विरक्त हो गया । उन्होने राजसी भोगों को ठुकरा दिया और परम-तत्व की खोज में निकल पड़े । वे जानते थे कि कोठे-मंडप और माडियां यही रह जाएंगे ।

फरीदा कोठे मंडप माडीआं एतु न लाए चित्त ।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु ।। 57।।

सांसारिकता से विरक्त होने का कारण सांसारिक नश्वरता हैं । फरीद जी ने अपनी वाणी में स्थान-स्थान पर इसका चित्रण किया है । उनका लक्ष्य मानव को भयभीत करना नहीं । न ही उन्होने कहीं संसार से पलायन करने की बात कही है उनका अभिप्राय तो केवल इतना है कि मनुष्य इस संसार में लिप्त होने की बजाय अच्छे कामों की ओर उन्मुख हो । सच्चाई और अच्छाई के मार्ग की ओर चलकर ईश्वर को पा सके । मगर अज्ञानी मानव उस ब्रह्म को बाहर वनों में ढूँढता है । वह नहीं जानता कि वह तो हर प्राणी के अन्दर

विद्यमान है । माया के भ्रम के कारण वह उसे पहचान नहीं पाता । जप-तप करके व्यर्थ ही अपने शरीर को कष्ट दे रहा है । वह हृदय से उसका स्मरण नही करता । इसी लिए उसे प्रभु की प्राप्ति नहीं हो पाती ।

फरीदा जंगलु-जंगलु किआ भवहि वण कंडा मोडेहि,
वसी रबु हिआलिअै, जंगलु किआ ढूंडेहि ।। 19 ।।
फरीदा तन सुका पिंजर थीआ, तलीआ चूंडहि काग,
अजे रब न बाहडिउ, देख बन्दे दे भाग ।। 90 ।।

जब मानव सांसारिक एषणाओं से मुक्त होकर निःस्वार्थ भाव से विचरता है तो सभी प्राणियों को 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' (सभी प्राणियों को अपने ही समान) देखता हैं । वह किसी को बडा छोटा नहीं समझता । वह इस संसार की किसी भी वस्तु को तुच्छ नहीं समझता । फ़रीद जी तो खाक, मिट्टी की भी निन्दा नहीं करते । उनके अनुसार खाक हेय वस्तु नहीं हैं । मरने के बाद खाक ही हमें समेटती है ।

फरीदा खाकु न निंदीअै खाकु जेडु न कोइ ।।
जींवदिआं पैरां तलै मुइआं होइ ।। 17 ।।

जब मनुष्य किसी को छोटा नहीं समझेगा तो निश्चय ही समता का भाव उत्पन्न होगा और मानव समाज में एकता की भावना स्वतः उद्‌भूत होगी ।

मानवता के परिप्रेक्ष्य में नैतिक गुणों का बहुत ही महत्व हैं । नैतिकता ही मनुष्य को सदाचार की और प्रवृत्त करती है तथा संयमित अनुशासनमयी ढंग से जीना सिखाती हैं । फरीद जी की सम्पूर्ण वाणी नैतिकता को आत्मसात् किए हुए हैं । उन्होने कट्टरवाद और संकीर्णताओं

से ऊपर उठकर मानव को एक ऐसा मार्ग दर्शाया जिस पर चलकर वह निःशस्त्र होकर भी पूरे विश्व को जीत सकता हैं । उनकी वाणी का एक एक शब्द विश्व शान्ति और मानव-प्रेम का मूल-मन्त्र हैं । उन्होने अपनी वाणी में मानव को ऐसे उपाय बताये हैं जिन पर 'अमल' करके मानव पल भर में ही सब कुछ पा सकता हैं । मानवता का महान् गुण और क्या हो सकता हैं अगर मनुष्य आत्म संयम और इन्द्रीय निग्रह कर अपने क्रोध को वशीभूत कर ले और बुरा करने वाले का भी भला करे ।

फरीदा बुरे दा भला कर, गुस्सा मन न हडाइ ।।
देही रोगु न लगई, पलै सभ किछु पाई ।।38।।

है तो यह काम बहुत कठिन कि मनुष्य बुरे आदमी का भी भला करे मगर इसी से बदले की भावना समाप्त हो सकेगी । युद्धों का निराकरण हो सकेगा । विश्वशान्ति की स्थापना हो सकेगी और मानवता का उद्धार हो सकेगा । इसी से आत्मभाव की भावना पैदा होगी । जब आत्म-भाव की भावना पैदा होगी तो मनुष्य दूसरे का बुरा सोच ही नहीं सकता । वह महानता की उस अवस्था को पा लेता हैं कि क्षमा उसका आभूषण बन जाती हैं । वह तो दूसरों के प्रहार का भी उत्तर नहीं देता । फरीद जी ने मानव के इस व्यवहार को अपनी वाणी में स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त किया हैं ।

फरीदा जो तै मारनि मुकीयां तिना न मारे घुंमि ।।
आपनडे घरि जाइऔ पैर तिनां दे चुंमि ।।7।।

मानव, समाज में रहतें हुए सदैव दूसरों के

अवगुणों को देखता हैं और अपने गुणों को बड़ा समझता है। इससे मनुष्य में अहं की भावना पैदा होती है। फरीद जी का कथन है कि मनुष्य को दूसरों के नहीं अपने अवगुणों को देखना चाहिए। अपने आपको गुणीं या बड़ा कहने वाला अभिमानी तो हो सकता है महान नहीं। मनुष्य को इन छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर अपने अवगुणों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। आत्मालोचन करने से मनुष्य दूसरों के अवगुण नहीं देखेगा अपितु अपने अवगुणों को परख कर उन्हें दूर करने का यत्न करेगा।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु, काले लिखु न लेख
आपनडे गिरीबान महि सिर नीवां करि देखु ।।6।।

ईश्वर ने सभी मुनष्यों को समान बनाया है। मगर शक्तिशाली जीव दुर्बलों, निर्बलों को अपनी शक्ति द्वारा भयभीत कर अपना अधिकार कर लेते हैं। यही भावना द्वेष, ईर्ष्या को जन्म देती हैं। परिणाम होता है युद्ध। फरीद जी ने आत्मनिर्भरता और स्वतन्त्रता को जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है। आज हम देखते हैं कि एक देश दूसरे को अपनी शक्ति द्वारा पराजित करना चाहता हैं। अमीर गरीब को, बडा छोटे को पराधीन करना चाहता हैं। फरीद जी ने मानव को आत्म निर्भर और स्वतन्त्र रूप से जीने की प्रेरणा की हैं। उनके अनुसार पराधीनता-पूर्ण जीवन से तो मृत्यु अच्छी है।

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझे न देहि ।।
जो तू ऐवैं रखसी, जीउ सरीरहु लेहि ।।42।।

सब्र और सन्तोष से मनुष्य की लोभ वृत्ति स्वत: नष्ट हो जाती हैं। सब्र से मनुष्य को संयमित और नियन्त्रित

रहने की आदत बन जाती है और इच्छाओं पर उसका अधिकार हो जाता हैं । दूसरों से अपनी तुलना करने पर मनुष्य दुःखी होता है अपने से धनी को देखकर वह भी धनी होना चाहता हैं । बुरे काम करता हैं । कभी-कभी अमानवीय हो जाता हैं । उसमें सब्र, सन्तोष और सहनशीलता जैसे गुणों का लोप हो जाता हैं । फरीद जी कहते हैं कि अगर मनुष्य ईश्वर द्वारा दी हुई वस्तुओं पर ही संतोष करके जीवनयापन करे तो उसे दुःखी नही होना पडेगा और संसार में व्याप्त सभी बुराइयां अपने आप ही समाप्त हो जायेगी । अगर मनुष्य अपने आप पर नियन्त्रण रखे और दूसरों की और देखकर अपने मन को न ललचाए तो मनुष्य सुखी रह सकता हैं ।

रूखी सुखी खाइके ठंडा पाणी पीउ ।।
फरीदा देख पराइ चोपडी, न तरसाए जीउ ।। 29।।

मानव प्रेम मानवता का सर्वोपरि गुण हैं । प्रेम से मनुष्य शत्रु को भी अपना बना सकता हैं । प्रेम से अपने इष्ट को रिझाया और पाया जा सकता हैं । प्रेम मिलने का मार्ग प्रशस्त करता हैं । जिनके हृदय में प्रेम पनपता है वह प्रेमी को पाने के लिए आत्म बलिदान तक दे डालते हैं । आत्मसमर्पण प्रेम की प्रथम शर्त हैं और कभी-कभी तो यह भावना इतनी तीव्र हो उठती है कि प्रेमी आंधी, तूफान, वर्षा की भी परवाह नहीं करता । उसके हृदय में उठे सन्देहों का निराकरण भी अपने आप ही हो जाता हैं । फिर तो कोई भी
बाधा उसे अपने 'प्रेमी' से मिलने से रोक नहीं सकती । फरीद जी ऐसी ही स्थिति का चित्रण करते हुए कहते हैं :-

फरीद गलीए चिकड, दूरि घरु नालि पिआरे नेहु।
चलां तां भिजै कम्बली, रहा त तुटे नेहु।।28।।

मगर प्रेम की ललक को दबाया तो नहीं जा सकता। अपने इस संशय को दृढ संकल्प में बदलते हुए फरीद जी कहते हैं :–

भिजउ सिजउ कम्बली, अलह बरसउ मेहु।
जाइ मिलां तिनां सजणा, तुटउ नाहि नेहु।।29।।

अगर मानव में प्रेम की इतनी तीव्र ललक पैदा हो जाए तो फिर द्वेष, ईर्ष्या और विरोध का समूल नाश सम्भव हैं। प्रेम ही सद्‌भावना को जन्म देता हैं। इसी से लोकोपकार की भावना पैदा होती हैं। फिर तो मनुष्य मानव कल्याण के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने को तत्पर हो जाता हैं। वास्तव में मानव का मानव से प्रेम ही मानवता हैं। यहीं प्रेम सद्‌वृत्तियों द्वारा मानवता का क्षेत्र विशाल करता हैं और एक दिन विश्व–प्रेम में परिवर्तित हो जाता हैं।

फरीद जी की सम्पूर्ण वाणी उनके अपने निजी अनुभवों का निष्कर्ष हैं। उन्होने अपनी साधनापरक अनुभूति से जो कुछ अर्जित किया उसे लोकोपकार हेतु अपनी वाणी द्वारा मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। जनता की दुष्वृत्तियों को दूर कर सत्य और प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया। मानव कल्याण के लिए वे निरन्तर संघर्षशील रहें। मानवता की सुरक्षा ही उनके जीवन का लक्ष्य था। वे स्वयं मानवीय गुणों के पुंज थे। अपनी सतत साधना द्वारा जो ज्ञान उन्होने अर्जित किया था उसे मानव समाज में वितरित करनें में उन्होने तनिक भी संकोच

नहीं किया ।

मानव समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए बाबा फरीद ने अपनी वाणी में ऐसे समाधान प्रस्तुत किए है जो सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वलौकिक है । उनकी वाणी मानव के सन्तप्त मन को शान्ति ही प्रदान नहीं करती अपितु लालसाओं को नियन्त्रित कर दु:खों को सदा के लिए समाप्त कर देने के लिए प्रेरित भी करती हैं । उनकी वाणी मानव को एक ऐसा सामाजिक धरातल प्रदान करती है जहां अमीर गरीब, ऊंच–नीच, बडे–छोटे का भेद लुप्त हो जाता है । मानव अपने अस्तित्व को पहचानने में सक्षम हो जाता हैं और दूसरों को भी अपने जैसा जानकर आनन्द विभोर हो उठता हैं ।

फरीद जी ने अपनी वाणी में उन सभी मानवीय गुणों को भली–भांति संजोया है जो एक आदर्श मानव के लिए अनिवार्य होते हैं । उन्होने अपनी वाणी में कटु से कटु सत्य को इतनी नम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया हैं कि कही भी नीरसता और उपदेशात्मकता का आभास ही नहीं होता । उनके अनुसार अगर मनुष्य अपने अवगुणों को दूर करले तो सारा समाज, देश, विश्व मानवीय गुणों से पूर्ण दिखाई देगा । मानवता स्वत: अवतरित हो जायेगी । उनके अनुसार

फरीदा काले मैडे कपडे काला मैडा वेसु ।।
गुनही भरिया मैं फिरां लोक कहे दरवेसु ।।9।।

फरीद जी अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे । उन्होने अपने युग की प्रवृत्तियों को अपनी वाणी में साकारात्मक अभिव्यक्ति दी हैं । वे मनुष्य को

आत्मबोध के लिए प्रवृत करते है ताकि वह दुष्वृत्तियों से उबरने का प्रयत्न करे। मनुष्य दूसरों की अपेक्षा अपने अवगुणों को देखे। अहंकार से दूर रहे। सत्य-मार्ग पर चले। बुरे के साथ भी भला करे। किसी को छोटा न समझे। इन्ही गुणों से मनुष्य ऊपर उठ सकता हैं। मानव से महामानव बन सकता हैं। निःस्वार्थ, परोपकार, दया, क्षमा, प्रेम, नम्रता, त्याग, सन्तोष, धैर्य, सहनशीलता, अहिंसा, सेवा आदि मानवोचित गुणों से सुशोभित होकर समाज में आदर पाता हैं। ऐसा व्यक्ति पूरे विश्व को अपना बना लेता हैं। फरीदवाणी इन्ही मानवीय गुणों की ओर प्रेरित करती हैं आज विश्व में खोई मानवता की पुनर्स्थापना करने के लिए फरीदवाणी सरलतम मार्ग प्रस्तुत करती हैं इसी से मानव कल्याण सम्भव हैं। आज के भटके हुए और कुमार्गगामी मानव के लिए फरीदवाणी प्रकाशस्तम्भ के समान हैं।

आज विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए पूरा विश्व प्रयत्नशील हैं। मगर यह प्रयत्न निरर्थक हैं, क्यों कि शान्ति की स्थापना अस्त्रों-शस्त्रों से नहीं, प्रेम और सद्भावना से ही सम्भव हैं। यह काम फरीद वाणी से और भी सहज-सम्भव है। मगर इसके लिए सतत् साधना और गहन चिन्तन की आवश्यकता हैं। तभी मानव मानवता के हित की बात सोच सकता हैं। यही आज की परिस्थितियों की मांग है। फरीद वाणी हमारे लिए समस्या-समाधान का मार्ग प्रशस्त करती हैं। मानवता का पथ-आलोकित करती हैं। बाबा फरीद की वाणी समूची मानवता के लिए आज भी उतनी ही प्रासंगिक एवं सार्थक है जितनी उनके अपने युग में थी।

युगपुरुष : बाबा शेख फरीद

बाबा शेख फरीद अपने युग के महामानव थे । उन्होने त्याग और सहानुभूति द्वारा अपने समय के मानव समाज को एक नई दिशा प्रदान की । उनका अमर सन्देश आज भी भटके हुए मानव को सान्त्वना प्रदान करता है । संस्कृत की एक उक्ति के अनुसार 'परोपकाराय सतां विभूतयः' अर्थात् सज्जनों के ऐश्वर्य परोपकार के लिए होते हैं । नदियां कभी भी अपना जल स्वयं नही पीती । वृक्ष अपने फल स्वयं नही खाते । महापुरुष भी दूसरों के लिए कष्ट सहकर भी उनके सुखी रहने की कामना करते हैं । अगर उन्हे कोई भूखा मिल गया तो वे अपना भोजन उसे खिला देगें । अगर किसी को कपड़ें की जरूरत है तो अपने तन का कपड़ा उतार कर देने में भी झिझक नहीं होगी । गुरू नानक देव की 'सच्चा सौदा' से बढ़कर परोपकार की कोई दूसरी उदाहरण नहीं है ।

पंजाब की धरती को इस बात का गर्व है कि यहां अनेक साधु, सन्तों पीरों, फकीरों, ऋृषियों, मुनियों और गुरुओं का जन्म हुआ । इन सभी महापुरुषों ने परोपकार हेतु अपना समूचा जीवन समर्पित कर दिया । भटके हुए लोगो को सन्मार्ग बताने के लिऐ भुखे रहकर और पैदल चलकर उन्हे सत्य से अवगत कराया । वे दूसरे की पीड़ा

को अपनी पीड़ा समझ कर अपना सर्वस्व बलिदान करने से भी नही हिचकिचाए । दूसरे की पीड़ा से द्रवित हो जाने वाले मनुष्य को महाकवि तुलसी दास सन्त (सति पुरुष) कहा हैं ।

सन्त हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पै कहा न जाना
निज परिताप द्रवै नवनीता, पर परिताप सुसन्त पुनीता।।

इतिहास साक्षी हैं कि जब-जब भी इस धरती पर अन्याय और अत्याचार बढ़ा हैं तभी किसी न किसी रूप में उस ईश्वर ने अवतरित होकर इस संसार को अत्याचार और अन्याय से मुक्त करके सत्य और न्याय का मार्ग दर्शाया । किसी पुण्यात्मा के रूप में वह सर्वशक्ति मान ईश्वर सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय का अन्तर बताने के लिए पथभ्रष्ट लोगों का मार्ग दर्शन करता हैं और पीड़ित लोगों को मुक्ति प्रदान करता हैं । भले ही इस कार्य के लिए उसे कितना बड़ा त्याग और बलिदान क्यों न करना पड़े । भावी पीढ़ी के लिए वह एक आदर्श बन लाता हैं । उसकी पहचान एक लोकनायक के रूप में होती हैं । उसकी विशेषता यह होती है कि वह अपने आस पास के परिवेश में यथार्थ की तलाश करता हैं । उस यथार्थ को आम आदमी तक पहुँचाने में अपनी पूरी शक्ति लगा देता हैं । मानव को मानव से जोड़ने में उसे एक सार्थक जीवन की अनुभूति होती हैं सामाजिक विषमता को दूर करना उसका उद्देश्य हो जाता हैं । विश्व उसके लिए एक परिवार के समान होता हैं । विश्व शान्ति की स्थापना उसका धर्म हो जाता हैं ।उसके लिए अपने पराए का भेद खत्म हो जाता हैं । कहा भी हैं कि ऐसे महामानव उदारचित्त वाले होते हैं ।

अयं निजः परोवेति समगणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

बाबा शेख फरीद जिस युग में अवतरित हुए उस समय लोग अनेक कुरीतियों की चंगुल में फंसे हुए थे । योगियों और नाथों ने उन्हे अपने जंज़ाल में फंसाया हुआ था। उस समय बाबा फरीद ने समय की नज़ाकत को समझते हुए लोगों के अन्दर सोई हुई मानवता को चेतना प्रदान की । उन्होने किसी नए मत या आन्दोलन को नही चलाया और न ही उन्होने किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय की स्थापना की उन्होने तत्कालीन प्रचलित मतों में जो कुछ मानवता के श्रेयस्कर था उसे अपनी वाणी के माध्यम से जन जन तक पहुँचाया । उन्होने जो मानव मूल्य स्थापित किए वे आज के युग में भी मानव के लिए उतने ही सार्थक है जितने उनके अपने युग में थे । बाबा फरीद ने एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए प्रेम, सद्‌भावना, नम्रता, सेवा, त्याग, सहयोग और परोपकार जैसे गुणों को धारण करने पर बल दिया ।

शेख फरीद संसार में रहकर ही उस ईश्वर की प्राप्ति के लिए आत्मिक शुद्धि पर बल देते हैं । वैसे भी अगर देखा जाए तो उनकी सम्पूर्ण वाणी में मानवीय गुणों और सदाचार के लिए बार-बार प्रेरणा दी गई है । यथा "बुरे कर भी भला कर" "रूखी सूखी खाओं", खाक की भी निन्दा न करो आदि बातें मानव के अन्दर सत्य, नम्रता, मित्रता, आत्म संयम, आत्म-निर्भरता, त्याग और सहनशीलता जैसे गुण पैदा करती हैं । ये सभी गुण मनुष्य को एक ऐसा धरातल प्रदान करती हैं जहाँ वह सार्वभौमिक और सार्वकालिक सीमाओं को पार कर

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दृष्टिकोण को धारण कर जीवनयापन करता हैं । सारा संसार उसे अपना लगता हैं और वह सारे संसार के लिए जीता हैं । वह दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा जानकर उसे दूर करने के लिए दिन–रात तत्पर रहता हैं । बाबा फरीद जी ने भी आजीवन भटके हुए मानव को सही दिशा प्रदान करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया । अपनी मधुरवाणी द्वारा लोगों को प्रभावित करके उन्हें पथभ्रष्ट होने से बचाया । उन्होने अपने अनुयायियों को भी यही उपदेश दिया कि मधुर–वाणी बोलनी चाहिए । उन्होने बताया कि सभी जीवों में उसी ईश्वर की ज्योति विद्यमान हैं । अत: कटुवचन के लिए प्रेरित करते हुए उन्होने कहा हैं ।

इक फिका न गालाइ, सभना में सच्चा धनी।।
हिआउ न कैहि ठाहि, माणक सभ अमोलवे।।29।।

फरीद जी ने मानव को सावधान करते हुए इस संसार में रहकर ही सद्कर्म करने की प्रेरणा दी हैं । उन्होने सांसारिक अस्थिरता और नाशवान शरीर की दुहाई देकर मनुष्य को उस ईश्वर को स्मरण करने की प्रेरणा भी दी हैं । उन्होने वृद्धावस्था को मृत्यु का संकेत बताते हुए कहा हैं कि मानव को अपने अमूल्य जीवन को सार्थक बनाना चाहिए । उनकी वाणी के अनुसार

फरीदा जे जाणा तिल थोड़डे, संभलि बुकु भरी ।।
जे जाणा सहु नढडा, थोडा मान करी ।।4।।

मानव जीवन के महत्त्व को दर्शाने हेतु फरीद जी ने अनेक बार अपनी वाणी में मृत्यु का उल्लेख किया है । उनका उद्देश्य मानव को मृत्यु से भयभीत करना कदापि नहीं

हैं अपितु मनुष्य को सचेत करना है ताकि मानव समय का सदुपयोग कर अपने जीवन को सन्मार्ग पर ला सके । वे मनुष्य को संसार में रहते हुए सांसारिकता से दूर रह कर परमात्मा को स्मरण करने के लिए प्रेरित करते हैं । फरीद जी स्वयं गृहस्थी थे लेकिन उन्होने आजीवन एक दरवेश के रूप में मानवता की सेवा की । संसार के अन्दर रहकर मानवता की सेवा करना एक उदारवादी जीवन साधना हैं । उन्होने संसार को नही सांसारिकता को त्यागने पर बल दिया है । उनके अनुसार वह ईश्वर सृष्टि के प्रत्येक कण में विद्यमान हैं । उसे पाना हैं तो उसके जीवों से प्रेम करो सभी जीवों के हृदयों में उसी का निवास है उसे पाने के लिए जंगलों में भटकने की कोई आवश्यकता नही । उन्होने कहा है ।

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भंवहि, वणि कहां मोडेहि
बसी रबु हिआलीऔ, जंगलु किआ ढूंढेहि ।।91।।

शेख फरीद अपने युग के आदर्श मानव थे । उन्होने अपने युग के भटके और निराश मनुष्य को सांसारिक वास्तविकता का ज्ञान करवा कर पारस्परिक प्रेम और सौहार्द्र का पाठ पढाया । उन्होने जल में कमल के समान विकारों से निर्लेप रहकर संसार में विचरने का मार्ग दर्शाया । उन्होने मानव को सदाचार के गुणों से अवगत करवाया तथा मानवीय गुणों नम्रता, सन्तोष, मैत्री, त्याग, सेवा और परोपकार जैसे गुणों से पारस्परिक प्रेम बढ़ाने की प्रेरणा दी ।

फरीद जी ने कहा कि इन गुणों को अपना कर मनुष्य सब को अपना बना सकता हैं ।फरीद जी का सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश हैं कि सभी जीवों से प्रेम करो ।

उनके अनुसार ईट का जवाब पत्थर से देना जरूरी नही । उन लोगों से भी प्रेम करो जो तुम्हें हानि पहुँचाते है अथवा शारीरिक कष्ट देते है । क्षमावान होना महानता का गुण है । फरीद जी का कथन है ।

फरीदा जे तै, मारन मुकीआं तिनां न मारे घुंमि ।।
आपनड़े घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंमि ।।7।।

फरीद वाणी का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद हम देखते है कि फरीद जी ने अपनी सम्पूर्ण वाणी में उन सभी मानंव मूल्यों को संजोया है जो एक आदर्श मानव समाज के लिए अनिवार्य हैं । उन्होने कटु से कटु सत्य को भी इतनी विनम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कही भी नीरसता का आभास नही होता । उनकी वाणी कोरा उपदेश नही है अपितु उनके काव्य में उनकी निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई हैं । मनुष्य अपने अवगुणों को दूर करने का प्रयत्न करे तो समाज स्वतः सुधर जाएगा । उनका कथन हैं ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख।।
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देख ।।6।।

सदाचार का आचरण करने वाला मनुष्य समाज के लिए आदर्श बन जाता हैं । फरीदवाणी की विशेषता हैं कि सम्पूर्ण काव्य लोक-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हैं । मानव जीवन में सब्र और सन्तोष बहुत महत्त्व है । इससे मनुष्य अपनी तृष्णा पर काबू पाने में सक्षम होता है । ईश्वर ने जो दिया है उसी से सन्तोष करो । दूसरो का धन देख कर ललचाने से कोई लाभ नही । इससे केवल इच्छाओं में वृद्धि होगी । ईर्ष्या और द्वेष जैसे विकार पैदा होंगे । अपने मन को तरसाने का क्या लाभ ?

फरीद जी ने कितने सुन्दर शब्दों में इस बात को कहा है ।

रूखी सूखी खाई के ठंडा पानी पीउ ।।
देख पराई चोपड़ी न तरसाई जीउ ।।29।।

संसार के भटके हुए जीवों का मार्ग दर्शन करना तथा मानव जीवन की सार्थकता दर्शाना ही फरीद वाणी का मुख्य प्रयोजन हैं । फरीद जी की वाणी एक आदर्श मानव और संरचनात्मक समाज के निर्माण का मानचित्र प्रस्तुत करती हैं । उनका काव्य उदारवादी दृष्टिकोण को अपना कर चला है । कही भी संकीर्णता या कट्टरवादिता के दर्शन नही होते । समन्वयवादी फरीद हिन्दू और मुस्लिम दोनों के लिए समान रूप से सम्मान के पात्र थे । उनकी सम्पूर्ण वाणी पारस्परिक प्रेम और सौहार्द्र का सन्देश देती हैं ।

सिक्ख गुरु परम्परा के पंचमेश गुरु अर्जुन देव जी द्वारा उनकी वाणी को 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में सम्पादित किया जाना हमारे लिए गौरव की बात हैं । इसी से फरीद वाणी का महत्त्व स्पष्ट हो जाता हैं । उनकी वाणी मानवीय-प्रेम और विश्व बन्धुत्व की भावना को दर्शाती हैं । भाषा की दीवार को हटा कर भावनाओं के धरातल पर आज भी फरीद वाणी प्रत्येक वर्ग, सम्प्रदाय और देश के लोगो को अपनी ही भासित होती हैं । यही वाणी युग पुरुष बाबा शेख फरीद जी की पहचान को और अधिक सुदृढ़ करती हैं ।

महान सूफी साधक
बाबा शेख़ फ़रीद व मलिक मुहम्मद जायसी

मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी के आस पास हुआ । कुछ विद्वान इनका जन्म 1494 ई. को तथा जन्म स्थान गाजीपुर उत्तर प्रदेश में जायस नामक स्थान को माना हैं । जिससे इनका नाम जायसी प्रसिद्ध हुआ । जायसी बचपन से ही एक आंख वाले थे और कुरूप थे । कुछ विद्वानों ने इन्हें लूले और कुबड़े भी बताया हैं । एक जनश्रुति के अनुसार कहा जाता हैं कि एक बार शेरशाह उनके इस रूप को देखकर हंस पडा था । जायसी ने यह देखकर बादशाह को सम्बोधित करते हुए कहा –

'मोहि का हंससि कि कोहारहि'

अर्थात मुझ पर क्या हंसते हो, मेरे उस कुम्हार पर हँसो । इस पर शेरशाह ने लज्जित होकर जायसी से क्षमा याचना की । अमेठी के महाराजा रामसिंह इनका विशेष आदर करते थे क्योंकि इनके आशीर्वाद से ही उनके घर सन्तान हुई थी । कहा जाता है कि इनकी शादी भी हुई थी और कई सन्ताने थी जिनका गुरु शाप के कारण अन्त हो गया था लेकिन कुछ विद्वानों के अनुसार इनके वैवाहिक जीवन की प्रामाणिकता सन्दिग्ध हैं । इनका

निधन सन् 1542 में अमेठी दरबार के एक बहेलिए द्वारा उस समय हुआ जब रात्रि में एक जंगल में बैठकर शेर जैसी आवाज में 'पीरे मुगां' का जाप रहे थे। अमेठी के राजमहलों के निकट इनका मजार आज भी विद्यमान हैं । अभी तक उपलब्ध रचनाओं में चित्ररेखा, अखरावट, आखिरी कलाम, महरी बाईसी (अपूर्ण) कान्हावत और पद्मावत ही प्रामाणिक मानी गई हैं । 'पदमावत्' महाकाव्य ही उनकी प्रसिद्धि का आधार हैं पदमावत् की रचना सूफी-भक्ति के सिद्धान्तों पर हुई । इसमें भारतीय समाज में प्रचलित रत्नसेन और पद्मावती की लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम का चित्रण किया गया है ।

जायसी ने आपने जीवन काल में दो गुरु धारण किए । सैयद अशरफ और मोहदी । उनकी रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि सैयद अशरफ उनके दीक्षा गुरु थे और मोहदी उनके काव्य गुरु थे । उन्होने अपनी काव्य-रचना के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रति सच्ची निष्ठा, धर्म के प्रति आस्था और हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वय के प्रति अपना हृदय ही उंडेल कर रख दिया है । जायसी जाति से मुस्लमान और सूफी कवि होते हुए भी हिन्दी-साहित्य में सूर, तुलसी और कबीर के समान महत्त्व रखतें हैं

पंजाबी साहित्य के 'पितामह' के रूप में जाने जाने वाले शेख फरीद गंज-ए-शकर का जन्म जायसी से जगभग 300 वर्ष पूर्व सन् 1175 ई: को गांव कोठीवाल (खोतवाल) जिला मुलतान (पंजाब) में हुआ । कुछ ग्रन्थों में इनका जन्म सन् 1173 ई: भी बताया

गया है । फरीद ने अपनी आरम्भिक शिक्षा अपने गांव में ही प्राप्त की । इसके बाद मुलतान के मौलाना मिनहाजुद्दीन तिरमिजी से मस्जिद के मदरसे में आपने औपचारिक शिक्षा ग्रहण की । इस समय तक आपको कुरानशरीफ जुबानी याद हो गया था । इसी बीच आपका सम्पर्क एक सुयोग्य मुरशद ख्वाजा बख्तियार काकी के साथ हुआ । फरीद जी ने उन्हे अपना गुरु धारण कर लिया । ख्वाजा मुइउनुद्दीन चिश्ती ने आप पर असीम कृपा करके आपको असीम ज्ञान का भण्डार दिया तथा काकी ने आपको तपस्या करने के लिए प्रेरित किया । आपके हृदय में छिपी ईश्वरीय लगन को महापुरुष शीध्र ही भांप लेते थे । आप सब कुछ त्याग कर तपस्या के लिए हांसी आ गए । लगभग 20 वर्ष तक साधना की । इसी तप के प्रभाव के कारण आपके मुरशद, बख्तियार काकी के परलोक सिधारने पर आपको चिश्ती सम्प्रदाय का नेतृत्व सम्भाला गया । आप हांसी छोड कर पुनः अपने पैतृक गांव में आ गये । कुछ समय रहने के बाद आप पुनः आयोधन नामक स्थान पर आ गए जिसका नाम आजकल पाकपटन है । यह स्थान आप को भजन बन्दगी के लिए अनुकूल लगा । अतः आप यही रहने लगे । आप गृहस्थी थे । आपने एक से अधिक विवाह किए थे । आप की आठ सन्ताने भी थी । आपने गृहस्थी होते हुए भी सांसारिकता से निर्लेप रहकर जप तप करके अपनी आत्मा को उस दिव्य प्रकाश से आलोकित किया । कहा जाता है कि एक दिन आप ईशा की नमाज तीन बार अदा करने के बाद बेहोश होकर गिर पडे ।. और 'या हई या कयूम' (अर्थात् ऐ सदा रहने वाले अभिलाषी खुदा') कहकर 15

अक्तूबर सन् 1265 ईस्वी को परलोक सिधार गए । स्वर्ग सिधारने के पूर्व आपने शेख निजामुद्दीन ओलिया को अपनी गद्दी का वारिस बना दिया था ।

बाबा शेख फरीद और मलिक मुहम्मद जायसी दोनों महान सूफी साधक थे । शेख फरीद अरबी, फारसी, पंजाबी में रचना करते थे तो मलिक मुहम्मद जायसी
अवधी हिन्दी में । दोनो अपने समय के प्रतिष्ठित विद्वान थे । फरीद जी को पंजाबी साहित्य का पितामह माना जाता है तो जायसी हिन्दी सूफी काव्यधारा (प्रेम-मार्गी शाखा) के प्रतिनिधि कवि के रूप में जाने जाते हैं । उनका पद्मावत इस काव्यधारा का प्रतिनिधि काव्य है । भले ही फरीद और जायसी का रचना काल भिन्न है मगर उनका कार्य और लक्ष्य एक ही है सूफी विचारधारा का प्रचार । फरीद बारहवीं शती में हुए थे और जायसी पन्द्रहवीं शती में । मगर इस 300 वर्ष के अन्तर में भी सूफी विचारधारा का प्रचार रुका नही निरन्तर आगे बढता रहा । यह फरीद जैसे सूफी साधकों की एक निष्ठा और प्रचार पद्धति का ही परिणाम हैं । भले ही दो सूफी साधको का एक साथ अध्ययन एक विचित्र बात लगती हैं । तो भी द्रष्टव्य है कि 300 वर्षो के अन्तर के बाद भी भाषा में भिन्नता होते हुए भी, स्थानगत भिन्नता के रहते भी उनकी विचारधारा सूफी सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल थी । फरीद का जन्म पंजाब में हुआ था । जबकि जायसी का जन्म राय बरेली- उत्तर प्रदेश में हुआ था । फरीद वाणी पंजाबी में हैं । जबकि जायसी की सम्पूर्ण रचना

अवधी (हिन्दी) में हैं । फरीदजन कवि हैं जायसी अभिजात्य वर्ग के निकट हैं । फरीद ने अपनी वाणी मुक्तक रचना के रूप में रची । जबकि जायसी ने प्रबन्ध ा काव्य और खण्ड काव्यों की रचना की । फरीद सूफी होकर भी इस्लाम में आस्था रखते थे जायसी सूफी होकर भी उदार प्रवृति के स्वामी थे । वे समन्वयात्मक विचार धारा रखते थे । इन्ही भिन्नताओं के आधार पर उनकी रचनाओं में भी मौलिक अन्तर हैं । जो उनके परिवेश और भाषा सम्बन्धी प्रभाव को लक्षित करता हैं । फिर भी उन्होने अपनी रचनाओं में सूफी सिद्धान्तों को निरूपित किया हैं ।

दोनों महान सूफी साधक आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ-साथ साहित्य जगत के भी लब्धप्रतिष्ठ विद्वान हैं । फरीद पंजाबी साहित्य के आदि कवि और जायसी मध य युगीन-भत्कि काल की प्रेमाश्रयी शाखा में हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि हैं । दोनो शासन सम्मानित कवि थे । फरीद को गुलाम बादशाह बलबन का दामाद होने के कारण राज्य में विशेष सम्मान प्राप्त था । उधर अमेठी के राजा रामसिंह जायसी का विशेष आदर करते थे क्योंकि इनके आशीर्वाद से ही उनके घर सन्तान पैदा हुई थी । दोनो मानवतावादी कवि थे । दोनो स्वाभिमानी हैं । दोनों सूफी प्रचारक व साधक हैं । दोनों कवियों ने अपने मत की स्थापना हेतु किसी अन्यमत का खण्डन नहीं किया । दोनों निर्गुण ब्रह्म में आस्था रखते हैं । दोनों ने प्रेम के महत्त्व को पहचानते हुए 'विरह' को महत्त्व पूर्ण माना । दोनों ने 'दोहा' छन्द को अपनी कविता के लिए उपयुक्त माना हैं ।

फरीद और जायसी के काव्य में भले ही परिस्थितियों

और शैलीगत परिवर्तन के फलस्वरूप कोई अन्तर स्पष्ट नजर आता हो तो भी सूफी-दार्शनिकता दोनों की रचनाओं में समान रूप से झलकती हैं । दोनो गुरु के महत्त्व को पहचानते है । सूफी इसे 'मुर्शिद' की संज्ञा देते है । इस माया-जाल से निकलने के लिए गुरु ही जीवात्मा का मार्ग दर्शन करता हैं । फरीद जी के अनुसार यह संसार रंग स्थली है विषय वासनाओं का विषैला बाग बहुत ही आकर्षक है । जिन पर गुरु या पीर की नजर पड़ती हैं वे ही इन विषय-वासनाओं से बच सकते हैं ।

फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ।
जो जन पीरि निवाजिआ तिना अंच न लाग।। ।।

इसी प्रकार जायसी भी गुरु को सांसारिकता से ऊपर उठकर मार्ग दर्शक मानते हैं । उनके पद्मावत में जो प्रतीकात्मक कथा सूत्र हैं जो जीवात्मा (राजा रत्नसेन)को पद्मावती (ब्रह्म) को पाने का मार्ग दर्शाता है वहा हीरामन नामक तोता है वह गुरु ही का प्रतीक हैं ।

"गुरु सूआ जेहि पन्थ दिखावा
बिन गुरु जगत को निरगुण पावा"

गुरु ही मानव को आत्मज्ञान के द्वारा ब्रह्म ज्ञान तक पहुँचाता हैं । दोनों सूफी साधक प्रेम को अपने काव्य में एक लौकिक नहीं अपितु अलौकिक तत्त्व मानकर चले हैं । फरीद जी की तो यह धारणा हैं कि प्रेम जीवन की सबसे अमूल्य वस्तु हैं वे तो प्यार विहीन यौवन को निरर्थक मानते हैं । वे ईश्वर से उनके साथ प्यार न टूटने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं । और स्थानीय सन्दर्भो के प्रभाव के कारण तथा भाषागत

जोबन जांदे न डरां जे सह प्रीति न जाई ।
फरीदा कितनी जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाहि।।

उधर जायसी तो 'प्रेम' को आधार मान कर ही मुक्ति का मार्ग ढूँढते हैं । वे तो 'प्रेम' की प्रधानता के कारण ही हिन्दी साहित्य में मध्ययुगीन प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि माने गए हैं । उन्होने भारतीय प्रेमाख्यानों को सूफी कथानको में ढ़ाला है । उनकी मान्यता हैं कि लौकिक प्रेम ही अलौकिक प्रेम की ओर ले जाने का मार्ग हैं । उनके पात्रों का प्रेम जीवात्मा और परमात्मा का ही प्रेम हैं । जायसी ने पद्मावत में इसी 'प्रेम ' को चित्रित किया है ।

"कहा मुहम्मद प्रेम कहानी, सुनि सो ग्यानी भए धियानी
कहै प्रेम कै बरनि कहानी ।जो बूझै सो सिद्ध गिआनी।"

जायसी ने अपने इस महाकाव्य में जिस प्रेम की अभिव्यक्ति की है वह आध्यात्मिक कोटि का ही है ।

प्रेम और विरह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । जहां प्रेम का चित्रण होता हैं वहां विरह का होना अनिवार्य हैं । जायसी के अनुसार प्रेम में अपार विरह होता हैं । जायसी के पद्मावत् में नागमती अपने पति के पद्मावती को पाने के प्रयास में योगी होकर घर से निकल जाने पर जिस विरह में जलती हैं वह साहित्य जगत में अपनी समता नही रखता । उसके विरह के ताप के कारण ही स्वर्ग और पाताल जलते रहते हैं । सूर्य भी उसी के विरह की अग्नि में जल कर कांप रहा हैं और रात दिन जलता रहता हैं । नक्षत्र और तारागण भी उसी के विरह में जलते हैं और उल्काएँ भी इसी कारण टूट कर धरती पर गिर रही हैं ।

विरह की आगि सूर जरि कांपा,
रातिहि दिवस जरे ओहि तापा
औ सब नखत तराई जरही
टूटहि लूक धरति महं परही ।।

फरीद जी भी विरह को प्रेम की परिपक्वता के लिए अनिवार्य मानते हैं जिस तन में विरह की तड़प नहीं वह तन शमशान के समान हैं । विरह तो विकसित हो रहे प्रेम की वह अनूठी अवस्था हैं जिसमें प्रेमी प्रेम का रसिया बन जाता हैं । फरीद जी विरह को श्रेष्ठ मानते हुए कहते हैं ।

''बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ।।
फरीदा जितु तन विरहा न उपजै सो तनु जानु मसानु'।।36।।

विरह की वेदना में फरीद का अंग-अंग जलने लगता हैं । वे अपने प्रियतम के विरह को सहन नहीं कर सकते भले ही उसे पाने के लिए कितने ही कष्ट क्यों न सहन करने पडें । वे कहते हैं :-

''तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलन्हि
पैरी थका सिरि जुला जे मू पिरी मिलन्हि' 119।।

अर्थात् मेरा जिस्म तंदूर की भांति जल रहा हैं, हड्डियां ईधन की तरह जल रही हैं अगर मेरा मालिक मुझे मिल सके तो मै पांव थके होने पर सिर के बल चलने लगूं । मगर मैं प्रियतम का विरह सहन नहीं कर सकती ।

दोनों महान कवि रहस्यवादी सूफी साधक हैं । दोनो का रहस्यवाद उच्च कोटि का हैं । रहस्यवाद एक भावात्मक अनुभूति हैं जिसकी अभिव्यक्ति क्षेत्र में अधिक होती हैं । दोंनों साधकों की अनुभूति काव्य के रूप में प्रकट होती रही और लोक कल्याण हेतु उसका प्रचार

और प्रसार होता रहा । दोनो का रहस्यवाद आत्मा परमात्मा प्रेम की और प्रेरित करता है । मगर आत्मा परमात्मा का मिलन तभी हो सकता हैं सूफी साधको के अनुसार अगर 'शैतान' उसमें बाधा न डाले । भारतीय साधको ने इसी शैतान को 'माया' कहा हैं । शैतान जीवात्मा को भटकाता है ताकि वह परमात्मा से न मिल सके ।

फरीद जी कहते हैं कि जिन लोगों को शैतान ने कुमार्ग पर डाल दिया हैं, वे वास्तविक मार्ग पर नहीं चल सकते । लाख समझाने पर भी उनका मन परमात्मा का ध्यान नहीं करता ।

"फरीदा कूकेदियां चांगेदियां मती देदीयां नित।।
जो सेतानि वझांइयां से कित फेरहि चित"।।15।।

जायसी ने भी परमात्मा रूपी पद्मावत को पाने के लिए जीवात्मा रत्नसेन के मार्ग में राघव चेतन जैसे (शैतान) पात्र को बाधक दर्शाया हैं पद्मावत् के अन्त में कवि ने जो इस महाकाव्य का अन्योक्ति परक अर्थ दिया हैं उससे यह बात और भी अधिक स्पष्ट हो जाती हैं । भले ही आज इस अंश को प्रक्षिप्त माना जा रहा हैं तो भी यह उपसंहार इस ग्रन्थ की कई महत्त्वपूर्ण गुत्थियों को सुलझाने में सफल सिद्ध हुआ हुआ हैं । एक दो पंक्तियां यहां प्रस्तुत हैं :-

नागमती यह दुनिया धंधा
बांचा सोई न जो एहि चित बंधा,
राघव दूत सोई सैतानू
माया अलादीन सुलतानू ।।

इस प्रकार जायसी ने शैतान को ब्रह्मप्राप्ति में बाधक माना हैं । उन्होने सांकेतिक रूप में जीवात्मा परमात्मा के मिलन को एक लौकिक प्रेम न कह कर अलौकिक प्रेम बताया हैं । कही-कहीं जायसी के काव्य में रत्नसेन को बाधाओं का सामना करते हुए भी दिखाया हैं । फरीद जी स्वयं गृहस्थी थें लेकिन उन्होने आजीवन एक दरवेश के रूप में मानवता की सेवा की । संसार के रहकर मानवता की सेवा करना एक उदारवादी जीवन साधना हैं । उन्होने संसार को नही सांसारिकता को त्यागने पर बल दिया हैं । उनके अनुसार वह ईश्वर सृष्टि के प्रेंत्यक कण में विद्यमान है । उसे पाना हैं तो उसके जीवों से प्रेम करो सभी जीवों के हृदयों में उसी का निवास है उसे पाने के लिए जंगलों में भटकने की कोई आवश्यकता नही । उन्होने कहा हैं ।

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भंवहि, वणि कहां मोडेहि।।
बसी रबु हिआलीऔ, जंगलु किआ दूंढेहि ।।19।।

शेख फरीद अपने युग के आदर्श मानव थे । उन्होने अपने युग के भटके और निराश मनुष्य को सांसारिक वास्तविकता का ज्ञान करवा कर पारस्परिक प्रेम और सौहार्द्र का पाठ पढाया । उन्होने जल में कमल के समान विकारों से निर्लेप रहकर संसार में विचरने का मार्ग दर्शाया । उन्होने मानव को सदाचार के गुणों से अवगत करवाया तथा मानवीय गुणों नम्रता, सन्तोष, मैत्री, त्याग, सेवा और परोपकार जैसे गुणों से पारस्परिक प्रेम बढ़ाने की प्रेरणा दी ।

फरीद जी ने क़हा कि इन गुणों को अपना कर

सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश हैं कि सभी जीवों से प्रेम करो । उनके अनुसार ईट का जवाब पत्थर से देना जरूरी नही । उन लोगों से भी प्रेम करो जो तुम्हें हानि पहुँचाते है अथवा शारीरिक कष्ट देते है । क्षमावान होना महानता का गुण है । फरीद जी का कथन है ।

फरीदा जे तै, मारन मुकीआं तिनां न मारे घुंमि ।।
आपनडे़ घर जाईअै पैर तिनां दे चुंमि ।।7।।

फरीद वाणी का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद हम देखते है कि फरीद जी ने अपनी सम्पूर्ण वाणी में उन सभी मानव मूल्यों को संजोया है जो एक आदर्श मानव समाज के लिए अनिवार्य हैं । उन्होने कटु से कटु सत्य को भी इतनी विनम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कही भी नीरसता का आभास नही होता । उनकी वाणी कोरा उपदेश नही है अपितु उनके काव्य में उनकी निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई हैं । मनुष्य अपने अवगुणों को दूर करने का प्रयत्न करे तो समाज स्वत: सुधर जाएगा । उनका कथन हैं ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख।।
आपनडे़ गिरीवान महि सिरू नीवां करि देख ।।6।।

सदाचार का आचरण करने वाला मनुष्य समाज के लिए आदर्श बन जाता है । फरीदवाणी की विशेषता हैं कि सम्पूर्ण काव्य लोक-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हैं । मानव जीवन में सब्र और सन्तोष बहुत महत्त्व है । इससे मनुष्य अपनी तृष्णा पर काबू पाने में सक्षम होता है । ईश्वर ने जो दिया है उसी से सन्तोष करो । दूसरो का धन देख कर ललचाने से कोई लाभ नही । इससे केवल इच्छाओं में वृद्धि होगी ।

ईर्ष्या और द्वेष जैसे विकार पैदा होंगे । अपने मन को तरसाने का क्या लाभ ? फरीद जी ने कितने सुन्दर शब्दों में इस बात को कहा हैं ।

रूखी सूखी खाई के ठंडा पानी पीउ ।।
देख पराई चोपड़ी न तरसा ज़ीउ ।।29।।

संसार के भटके हुए जीवों का मार्ग दर्शन करना है । ऐसा व्यक्ति पूरे विश्व को अपना बना लेता है । फरीदवाणी इन्ही मानवीय गुणों की ओर प्रेरित करती हैं आज विश्व में खोई मानवता की पुनर्स्थापना करने के लिए फरीदवाणी सरलतम मार्ग प्रस्तुत करती हैं इसी से मानव कल्याण सम्भव हैं । आज के भटके हुए और कुमार्गगामी मानव के लिए फरीदवाणी प्रकाश स्तम्भ के समान हैं ।

आज विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए पूरा विश्व प्रयत्नशील हैं । मगर यह प्रयत्न निरर्थक हैं, क्योंकि शान्ति की स्थापना अस्त्रों-शस्त्रों से नहीं, प्रेम और सद्भावना से ही सम्भव हैं । यह काम फरीद वाणी से और भी सहज-सम्भव है । मगर इसके लिए सतत् साधना
और गहन चिन्तन की आवश्यकता हैं । तभी मानव मानवता के हित की बात सोच सकता हैं । यही आज की परिस्थितियों की मांग है । फरीद वाणी हमारे लिए समस्या-समाधान का मार्ग प्रशस्त करती हैं । मानवता का पथ-आलोकित करती हैं । बाबा फरीद की वाणी

शेख फरीद : विलक्षण व्यक्तित्व

मध्य युग में विदेशी आक्रमणकारियों के कारण भारत की दशा अत्सन्त शोचनीय हो गई थी । जिस समय मुसलमान शासकों ने भारत में अपना शासन स्थापित किया, उसी समय से भारत में सूफी, पीरों, फकीरों, दरवेशों का आगमन आरम्भ हो गया था । इस सम्प्रदाय ने भारत में तत्कालीन प्रचलित धार्मिक कट्टरवाद के स्थान पर समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाकर मानवीय एकता और समता का प्रचार किया । परिणाम स्वरूप दो संस्कृतियों (हिन्दु और मुस्लिम) का मणिकांचन योग हुआ । शेख फरीद ने इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अपनी वाणी के द्वारा विश्वबन्धुत्व का सन्देश दिया । प्यारा सिंह पदम के अनुसार फरीद की वाणी का मूलाध ार महात्मा बुद्ध का शुद्ध शिष्टाचार, बाबा गोरख का तप, त्याग, हजरत मोहम्मद साहिब का सब्र–सन्तोष और भारतीय ढंग की प्रेमाभक्ति हैं । सब से बढ़कर विशेषता वाली बात तो यह हैं कि यह बन्दगी, यह फकीरी, यह ज्ञान, यह शिक्षा पंजाबी रंग ढंग में उजागर होती हुई अपनी अलग झलक के साथ दिखाई देती हैं । हिन्दुस्तानी वेदान्त और इस्लामी सूफीवाद का यह अनोखा संगम हैं ।

शेख फरीद का जन्म शेख जमालुदीन सुलेमान के घर बीबी कुरशूम की कोख से 571 हिजरी (1175 ईस्वी) को गांव कोठीवाल (कोतवाल) जिला मुलतान में हुआ । कुछ ग्रन्थों में इनका जन्म 569 हिजरी (1173 ईस्वी) कों बताया गया हैं । फरीद जी ने आरम्भिक शिक्षा अपने ही गांव में प्राप्त की । इसके बाद मुलतान के मौलाना मिनहाजुदीन तिरमिजी की मस्जिद के मदरसे में आपने औपचारिक शिक्षा ग्रहण की । इस समय तक आप को कुरान शरीफ जुबानी याद हो गया था । आप 24 घण्टें में एक बार कुरान शरीफ का सम्पूर्ण अध्ययन कर लेते थे । इसी बीच आपका सम्पर्क एक योग्य मुरशद ख्वाजा बख्तिआर काकी के साथ हुआ । फरीद जी ने उनके पवित्र चरणों में अपने आपको समर्पित कर दिया । आपने उन्हे अपना गुरु धारण कर लिया । उनकी सेवा करते हुए आप कुछ समय मुलतान रहे और बाद में शिक्षा पाने हेतु कन्धार चले गये । इस समय आपका सम्पर्क अनेक सूफी, सन्तों, फकीरों से हुआ, जिनसे आपको आत्मिक तृप्ति के लिए अमूल्य खजाना मिला । ख्वाजा मुइउदीन चिश्ती ने आप पर अपार कृपा करके आपको असीम ज्ञान का भण्डार दिया तथा शेख बख्तिआर काकी ने अपको तपस्या करने के लिए प्रेरित किया । आपके हृदय में ईश्वरीय प्रेम और अद्भुत दिव्य प्रकाश को महापुरुष शीध्र ही भांप लेते थे । आपको ईश्वर के प्रति अटूट लगन थी । आप सब कुछ त्याग कर तप करने के लिए हांसी आ गए । हांसी में आप लग्भग 19-20 वर्ष रहे ।

आपकी तप–साधना और योग्यता के कारण आपको मुरशद ख्वाजा बख्तिआर काकी के परलोक सिधारने के उपरान्त चिश्ती सम्प्रंदाय का नेतृत्व सम्भाला गया । जब आपकी प्रसिद्धि चारों और फैलने लगी तो आप हांसी छोडकर पुनः अपने पैतृक गांव कोठीवाल आ गए । कुछ समय वहां रहने के बाद आयोधन आ गए । जिसका नाम आजकल पाकपटन हैं । यह स्थान आपको भजन–बन्दगी के अनुकूल लगा । अतः आप यहीं पर रहने लगे ।

आप गृहस्थी थे । आपने एक से अधिक विवाह किये थे ।आपकी आठ सन्ताने थी । जिनमें पांच बेटे ख्वाजा, नसीरूदीन, ख्वाजा शहाबुदीन, शेख बदरूदीन ,शेख निजामुदीन, शेख याकूब और तीन बेटियां बीबी मसतूरां, बीबी शरीफां और बीबी फतिआं थी । आपने गृहस्थी होते हुए भी सांसारिकता से निर्लेप रह कर जप–तप करके अपनी आत्मा को उस दिव्य प्रकाश से आलौकित किया । आपने अपने जीवन को इस प्रकार ढाल लिया था कि आपको ईश्वर (अल्लाह) के नाम के बिना कुछ न लुभाता था । आपकी प्रसिद्धि को देखकर कुछ अज्ञानी लोग आप से ईर्ष्या, द्वेष भाव रखने लगे थे, लेकिन शेख फरीद ने उनकी कभी प्रवाह नही की । आपको कई बार मारने की कोशिश भी की गई । आपके अनेक श्रद्धालु शिष्य थे । जिनमें शेख बदरूदीन इसहाक, ख्वाजा अहमद सविसतानी के नाम प्रसिद्ध हैं । कहा जाता हैं कि एक दिन आप ईशा की नमाज़ तीन बार अदा करने के बाद बेहोश होकर गिर पडे और 'या हई या कयूम' (ऐ सदा रहने वाले अभिलाषी खुदा)

कहकर 5 मुहर्रम 664 हिजरी अर्थात 15 अक्तूबर, 1265 ईस्वी को परलोक सिधार गए । परलोक सिधारने से पूर्व आपने शेख निजामुदीन औलीयां को अपनी गद्दी का वारिस बना दिया था ।

आप अरबी, फारसी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे । आपने लगभग इन सभी भाषाओं का अपनी रचनाओं में प्रयोग किया है । आपने अपनी कविता में तत्कालीन प्रचलित सभी धर्मो में समान रूप से लोकप्रिय हुए । यही कारण है कि आपकी वाणी को "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब" में सम्मिलित किए जाने का गौरव प्राप्त हुआ । इस दृष्टि से उन्हे पंजाबी का प्रथम सर्वश्रेष्ठ कवि (आदि कवि) कहा जाता है ।कुछ हिन्दी के विद्वान इस महान् कवि को प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) का कवि मानते हैं । डा. विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार "लोकभाषा मुलतानी अथवा हिन्दी का प्रयोग करने वाले बाबा फरीद से पूर्व साहित्य में अपभ्रंश का प्रयोग हो रहा था । सम्भवत उस समय हिन्दी बोलचाल में आ चुकी थी, जिसका आभास नाथ साहित्य अथवा अर्धअपभ्रंश में मिल जाता हैं । परन्तु हिन्दी में निश्चित रूप से रचना करने वाले बाबा फरीद शंकरगंज का नाम सबसे पहले आता हैं । यदि शेख फरीद की वाणी को प्राचीन हिन्दी का रूप माना जाये तो हिन्दी साहित्येतिहास लेखकों का
ध्यान इस और आकृष्ट करना परमावश्यक होगा । और यदि इनकी वाणी को प्राचीन हिन्दी का गौरव प्राप्त हो सका तो इतिहास लेखकों को नये सिरे से अपनी स्थापनाओं पर विचार करना होगा ।"

फरीद जी की सम्पूर्ण रचना उनके अनुभवों का

ही परिणाम हैं । ऐसी रचनाएं ही जीवन के कटु यथार्थ को अभिव्यक्त करने में सक्षम होती हैं । इसी कारण सार्वभौमिक एवं सार्वलौकिक प्रसिद्धि की अधिकारिणी होती हैं । ऐसी कालजयी रचनाएँ ही महान् साहित्य या अमर साहित्य कहलाती हैं । ऐसी रचनाओं का कर्त्ता भी देश, जाति, धर्म की सीमाओं का अतिक्रमण कर पूरे विश्व का हो जाता हैं । शेख फरीद जी को एवं उनकी रचनाओं को भी इसी कोटि में सम्मिलित किया जाता हैं । जैसा कि पहले कहा जा चुका हैं कि आपकी वाणी को "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब" में सम्मिलित होने का गौरव प्राप्त हैं । आपके 118 श्लोक और 4 शब्द (दो सूही राग में और दो आसा राग में)गुरु अर्जुन देव जी द्वारा "आदि ग्रन्थ" में शामिल किए गए हैं । इसके अतिरिक्त आपकी अन्य अनेक रचनाएं है जो अभी तक विवाद का विषय बनी हुई है ।

आपका जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार' का जीवन्त उदाहरण हैं । आपकी वाणी में इतनी मधुरता थी कि लोग स्वत: आपकी और आकृष्ट हो जाते थे । आप निर्धनों के लिए अपना सब कुछ दे देते थे । अपने तन पर कपड़ा तक भी नहीं पहनते थे । नम्रता, दया, त्याग, सेवा, सहनशीलता के साक्षात् रूप शेख फरीद की वाणी में यह गुण यत्र-तत्र देखे जा सकते हैं । प्रभु की भक्ति में लीन रहना, दरवेश की पदवी को पाने का सरलतम मार्ग हैं । यही मनुष्य का चरम लक्ष्य हैं । गुरु के बिना इस मार्ग पर चलना कठिन हैं । झूठ का आश्रय लेकर पर नहीं चला जा सकता । अत: सत्य बोलना चाहिए ।

बोलीऔ सचु धरमु झुठ न बोलीऔ ।।
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऔ ।। 3 ।।

फरीद जी के अनुसार, जो मनुष्य उस ईश्वर को याद नहीं करते, वे इस संसार में तो कष्ट सहते ही हैं, आगे भी उन्हे मुक्ति नहीं मिलती अतः मुक्ति के लिए उस ईश्वर करना बहुत जरूरी हैं ।

फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिउनु नाऊ।।
अैथे दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ।। 106 ।।

फरीद जी ने इस भौतिक संसार के प्रति अनासक्त रहने और सुन्दरता की ओर से मन को हटा कर दरवेश जैसा जीवन बिताने की प्रेरणा दी हैं । वे कोठे, मंडप, माडियां आदि की इच्छा रखने वालों को उपदेश देते हुए कहते हैं ।

फरीदा कोठे मंडप माडीआं, उसारेदे भी गए ।
कूडा सउदा करि गए गोरी आइ पए ।। 46।।

तथा

फरीदा कोठे मंडप माडीआं ऐतु न लाए चितु
मिटी पइ अतोलवी कोई न होसी मितु ।। 57।।

समाज सुधारक के रूप में फरीद जी ने तत्कालीन सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए ऊंच-नीच अमीरी-गरीबी पैदा करने वालों को ईश्वर के दरबार में चोट खाने से सावधान रहने को कहा है ।

फरीदा रोटी मेरी काठ की, लावणु मेरी भुख।।
जिना खाधी चोपडी घणे सहणिगे दुख ।।28।।

इतना ही नही, वह दूसरों को अमीर देखकर सब्र, सन्तोष, सहनशीलता का उपदेश देते हैं । वे ईश्वर के दिए में ही गुजर कर लेने में विश्वास रखते हैं । बेकार में तरसते रहने से क्या फायदा ?

रूखी सुखी खाइकै ठंडा पानी पीउ ।।
फरीदा देखि पराई चोपडी न तरसाए जिउ ।।29।।

फरीद जी ने दूसरों को सुधारने या उपदेश देने की अपेक्षा अपने अवगुणों को दूर करने की प्रेरणा दी है । आदर्श मानव ही दूसरे को उपदेश दे सकता हैं । उन्होने ने कहा हैं ।

फरीदा काले मैडे कपडे काला मैडा वेसु ।।
गुनही भरिया मैं फिरां लोक कहैं दरवेसु।।6।।

तथा

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख
आपनडे गिरीबान महि सिरू नीवां करि देखु ।।6।।

शरीर नाशवान् हैं, बुढापा मृत्यु का संकेत हैं । पंचभूत शरीर अन्त में नष्ट होना हैं अतः जीवन के प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए । सौ वर्ष जीकर भी अन्त में मिट्टी ही होना हैं ।

बुढा होआ शेख फरीद कंबनि लगी देह ।।
जे सऊ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह।।41।।

अतः मनुष्य को लम्बी आयु की कामना करने की अपेक्षा सत्कार्यो की और प्रवृत्त होना चाहिऐ । अच्छे कर्मो से ही पुण्य मिलता है, तभी ईश्वर प्रसन्न होता हैं । गुणहीन कर्मो का परित्याग करना चाहिय अन्यथा ईश्वर के सामने जाकर लज्जित होना पडता है ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमडे विसारि ।।
मतु सरमिंदा थीवही सांई दे दरबारि।। 59 ।।

शेख फरीद की कविता भावों विचारों की गहराई के साथ कलात्मक दृष्टि से भी श्रेष्ठ रचना हैं । आपने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिस भाषा से अनुकूल शब्द मिला, उसे भाषा की सीमा अतिक्रमण

करके भी ग्रहण किया । प्रचलित अंलकारों और मुहावरों का प्रयोग आपकी कविता की अनन्य विशेषता हैं । यमक,उत्प्रेक्षा,उपमा, रूपक, दृष्टांत आदि अॅलंकारो का आपने खुलकर प्रयोग किया हैं । चिन्हों और प्रतीको के माध्यम से भी आप अपने भावों को सम्प्रेषित करने में सफल रहे हैं । छन्द की दृष्टि से प्राकृत में गाथा, अपभ्रंश में दूहा और संस्कृत में श्लोक का विशेष स्थान रहा हैं । अनेक परिर्वतनों के बावजूद भी संस्कृत की जन्म भूमि पंजाब में श्लोक की आत्मा मर नहीं सकी । यह किसी न किसी रूप में विविध भाषाओं में प्रयुक्त होता रहा हैं । शेख फरीद ने भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए इस लोकप्रिय छन्द (श्लोक) को ही अपनाया । इसके अतिरिक्त आपने सोरठा, चौपाई, दोहा और अनेक रागों में भी पदों की रचना की हैं । अत: आपकी रचना (वाणी) भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से उत्तम साहित्य की कोटि में आती हैं । संगीतात्मकता आपकी वाणी का अनन्य गुण हैं ।

शेख फरीद का व्यक्तितत्व और कृतित्व निश्चय ही प्रेरणापुंज हैं । आपने अपने जीवन के कटु अनुभवों का अपनी वाणी में यथार्थाकिंन करके जन सामान्य को सही जीवन दिशा प्रदान की । आज भी आपकी वाणी अशान्त मानव को शान्ति प्रदान करनें में सक्षम हैं । आपकी इस अमर रचना के लिए साहित्य और मानव समाज सदा आपका ऋणी रहेगा ।

फरीद काव्य में नैतिकता

नैतिकता मानव में सद्वृत्तियों एवं सद्गुणों का विकास करती है । सदाचार मानवीयता का प्रथम गुण है । आदर्श जीवन के लिए सदाचारी होना अनिवार्य है । अच्छे आचरण चाला व्यक्ति ही समाज में आदर पाता है । निश्चयात्मक रूप से नैतिकता ही मानव को सद्व्यवहार, नियम, अनुशासन, परोपकार, दया, क्षमा, धैर्य जैसे सद्गुणों की और अग्रसर करती है । अत: नैतिकता मानव को सही जीवन दिशा प्रदान करती है । मानव को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होने के लिए नैतिकता को अपनाना पडता है । वह अपने निज कार्यो की अपेक्षा अपने नैतिक कर्त्तव्यों सहयोग, सेवा त्याग, परोपकार, प्रेम आदि के द्वारा दूसरों के प्रति उदार हो जाता है । "परोपकाराय सतां विभूतय:" की उक्ति के अनुसार (सज्जनों के ऐश्वर्य परोपकार के लिए होते हैं) उसका सब कुछ दूसरों के लिए हो जाता है । वह अपने और पराए का अन्तर भूल जाता है । सारा विश्व उसका अपना हो जाता है । अपने और पराए का भेद मिटा कर वह उदार मन में विश्वबन्धुत्व की कल्पना को साकार करता है । कहा भी है :-

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम् ।
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।"

(अर्थात् यह मेरा है, वह पराया है, ऐसा तुच्छ हृदय वाले सोचते हैं । उदार हृदय वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार के समान है) यही प्रवृत्ति उस महापुरुष के जीवन का अंग बन जाती है । उसका व्यवहार असाधारण (विशेष) ही जाता है । वह सदा शुभ, कल्याणकारी एवं परोपकार की भावना से अपने को दूसरों के प्रति समर्पित समझता है । वह दुर्गुणों से बचकर सद्गुणों की और प्रवृत्त होता है । अतः नैतिकता मनुष्य को संयमित और नियोजित कर श्रेष्ठतम मानव बनने के मार्ग की और अग्रसर करती है ।

नैतिकता का मूल शब्द 'नीति' है । संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम के अनुसार 'नीति' शब्द संस्कृत के नी (धातु) + नितंन् (प्रत्यय) से बनता है । 'नीयन्ते संलम्यन्ते उपायादयः एहिकामुष्मिकाथा वा अनया' जिस का अर्थ है ले जाने की क्रिया पथ प्रदर्शन, चालचलन, आचार पद्धति । भाई कान्ह सिंह नाभा (गुरु शब्द रत्नाकर) महानकोष में लिखते है । 'वह नीति जिसके द्वारा आदमी सन्मार्ग पर चल सके । धर्म और समाज को चलाने का नियम । हिन्दी शब्द सागर के अनुसार नीति या नैतिकता का अर्थ है लोक व समाज कल्याण के लिए उचित ठकराया हुआ आचार व्यवहार, लोक मर्यादा के अनुसार व्यवहार सदाचार । मानविकी परिभाषिक कोष के अनुसार नैतिकता दर्शन का एक उपभाग है जो मनुष्य को आदर्शो की और ले जाती है । दर्शन का वह पद जिसमें मानवीय व्यवहार का मूल्यात्मक विवेचन

किया जाता हैं । इस विवेचन में औचित्य, अनौचित्य तथा शुभाशुभ का विचार विशेष रूप से होता हैं । यथा सम्भव नैतिक व्यवहार को नियमबद्ध करने का प्रयास भी किया जाता हैं । नैतिकता का प्रमुख तत्त्व सद्व्यवहार अथवा सदाचार है । जिसे दूसरे शब्दों में आचरण कहा जाता हैं । अच्छे आचरण से ही मनुष्य पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति, अहिंसा, समता, एकता की कल्पना कर सकता हैं ।

नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में जब हम फरीद काव्य का अध्ययन करतें हैं तो ऐसा लगता हैं कि मानों फरीद का सम्पूर्ण काव्य नैतिकता को ही आत्मसात् किए है । शेख फरीद स्वयं नैतिक गुणों की तपो मूर्ति थे । उन्होने अपने काव्य में भी कट्टरवादी अथवा संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाया । उन्होने तत्कालीन प्रचलित सम्प्रदायों और धर्मो का विरोध करने की अपेक्षा उनके आदर्शो को अपनाकर मानव को एक ऐसा मार्ग दर्शाया जिस पर चलकर वह निर्विरोध सारे विश्व को जीत सकता हैं । शेख फरीद ने अपनी कविता द्वारा पारस्परिक प्रेम, त्याग, दया, सेवा, बलिदान, उपकार और सहनशीलता का सन्देश दिया।मानव प्रेम और विश्वबन्धुत्व की भावना को जन-जन तक पहुँचाया । इन्ही गुणों के कारण शेख फरीद आपने काव्य को जन-जन के हृदय में बिठा सके । उनका काव्य उनकें कटु एवं यथार्थ अनुभवों की अभिव्यंजना है । यही कारण है कि उनका काव्य नैतिकता की कसौटी पर आज भी खरा उतरता हैं और आज के जीवन में भी उतना ही सार्थक है जितना उनके अपने जीवनकाल में था। इससे महान् और गुण क्या हो सकता हैं कि आत्म-संयम और

इन्द्रीय निग्रह कर मनुष्य अपने क्रोध को वशीभूत कर ले और बुरा करने वाले का भी भला करे ।

फरीदा बुरे दा भला कर, गुस्सा मन न हडाई
देही रोग न लगाई, पलै सभ किछु पाइ ।।78।।

प्रेम की दुहाई देने वालों ने प्रेम के महत्त्व को जाना है तो आत्मबलिदान देकर । आत्मसमर्पण प्रेम की प्रथम शर्त है । अपने इष्ट को पाने हेतु अगर प्राण भी देने पड़् तो भी कम हैं । कबीर जी ने लिखा हैं :

प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेही रुचे, सीस देई ले जाय ।।

फरीद जी ने भी प्रेम के इस महत्त्व को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है ।

जोबन जांदे ना डरां, जे सहु प्रीति न जाइ ।।
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाई।।34।।

इतना ही नहीं प्रेम की ललक इतनी तीव्र हो जाती है कि आंधी, तूफान, वर्षा में भी नहीं दबती । अपने अन्तर मे उठे संशय का उत्तर इन पंक्तियों मे देखे ।

फरीदा गलीए चिकड, दूरि घरू नालि पिआरे नेहु ।।
चलां त भिजै कंबली, रहा ता तुटै नेहु ।।24।।
भिजउ सिजउ कंबली, अलह वरसउ मेहु ।।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाहि नेहु ।।25।।

अपने आप को ऊँचा उठाने, महान् बताने के लिए दूसरों के नही अपने अवगुणों को देखना चाहिए । अपने को बड़ा कहने वाला व्यक्ति अहँकारी तो हो सकता हैं महान् नहीं । फरीद जी के शब्दों में अपने गिरेबां में झाँक कर देखो (आत्मालोचन करो)

फरीदा जे तु अकलि लतीफु, काले लिखु न लेख
आपनड़े गिरीबान महि सिरु नीवां करि देखु ।। 6।।

आत्मालोचन के लिए आत्मनियन्त्रण का होना जरूरी है जो मनुष्य दूसरों की ओर देख कर उनसे अपनी तुलना करता रहता हैं वह हमेशा दुःखी होता हैं । उसमें सब्र, सन्तोष व सहनशीलता का अभाव रहता हैं । यह गुण तभी आ सकते हैं अगर मनुष्य अपने आप पर नियन्त्रण रख सके । ईश्वर के दिए हुए साधनों पर ही विश्वास रखे दूसरों के ऐश्वर्यो की और देख कर मन न ललचाए ।

रूखी सुखी खाईके,ठंडा पाणी पीउ ।।
फरीदा देख पराई चोपडी, न ललचाए जीउ ।।29।।

इतना ही नहीं

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ।।
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ।।74।।

आत्मनियन्त्रण करने वाला व्यक्ति कभी दूसरे पर निर्भर नहीं करता और न ही करना चाहता हैं । आत्मनियन्त्रण से ही संयमित होने की आदत बनती हैं । आत्मसंयम और आत्मनिर्भरता दोनों का काफी निकट सम्बन्ध हैं । सदाचारी मानव में इन दोनो गुणो का होना बहुत जरूरी हैं । 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहि' की उक्ति के अनुसार मानव दूसरों की अधीनता स्वीकार नहीं करता । वह इससे तो मृत्यु को बेहतर समझता हैं । फरीद जी ने भी पराधीनता को नकार कर अपने इष्ट से स्वीधीनता पूर्ण जीवन की माँग की हैं ।

फरीदा बारि पराइअै बैसणा सांई मुझे न देहि ।।
जो तू ऐवैं रखसी, जीउ सरीरहु लेहि ।। 42 ।।

सदाचारी मनुष्य आडम्बरों से मुक्त जीवन में

विश्वास रखता हैं । कपटी मनुष्य को कभी भी अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिल सकती । जो मनुष्य (कपटी वेश में) आडम्बर युक्त पूजा करते हैं । उन्हें कभी भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती । एक कपटी भक्त का बगले के रूप में चित्रण देखे ।

फरीदा दरीआवै कंने बगला बैठा केल करे ।।
केल करेदें हंस नो अचिते बाज पए ।। 99 ।।

अज्ञानी मानव उस ब्रह्म को बाहर वन में ढूंढता है जब कि वह उसके अन्दर ही विद्यमान हैं । जप तप करके अपने शरीर से अन्याय कर रहा हैं । मगर तो भी उस प्रभु की प्राप्ति नही हुई ।

फरीदा तन सुका पिंजर थीआ, तलीआ चूंडहि काग ।।
अजे रब न बाहुडिउ, देख बन्दे दे भाग ।। 90 ।।
फरीदा जंगलु-जंगलु किआ भवहि वंण कंडा मोड़हि
वसी रबु हिआलिऐ, जंगलु किआ ढूंडेहि ।।19।।

उदारमना सदाचारी मानव सब में उस एक ईश्वर को ही देखता हैं । वह किसी को बड़ा छोटा नहीं समझता । उसके विचार में हर मनुष्य को अपने कर्मो का फल अपने आप मिल जाता हैं । अगर कोई आदमी किसी से विषमता भाव रखता हैं । तो उसे उसका फल अवश्य मिलेगा । फरीद की दृष्टि में कोई भी वस्तु इस संसार में तुच्छ नहीं हैं । वह तो खाक (धूल) को भी महान् मानते हैं ।

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकु जेडु न कोई ।।
जीवदिआं पैरों तले मुइआं उपरि होइ ।। 17।।
फरीदा रोटी मेंरी काठ की लावणु मेरी भुख।।
जिना खादी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ।।28।।

सभी प्रणियों को एक समान जान लेने के बाद आत्मभाव पैदा हो जाता हैं । फिर मनुष्य किसी का बुरा कैसे सोच सकता हैं । फिर तों उसमें ऐसे गुण आ जाते हैं कि अगर कोई उस पर प्रहार भी करता हैं तो वह उसका उतर भी देना ठीक नहीं समझता । वह महानता की उस अवस्था पर पहुँच जाता है कि क्षमा उसका आभूषण बन जाता हैं । वह उसे अज्ञानी समझकर क्षमा कर देता हैं । फरीद जी के अनुसार :-

फरीदा जो तै मारनि मुकियां तिनां न मारे घुंमि ।।
आपनड़े घरि जाइऔ पैर तिनां दे चुंमि ।। 7 ।।

नम्रता सदाचारी मनुष्य का सर्वोपरि गुण है । लोग भले ही उसे महान् कहें मगर वह अपने आपको सदा अवगुणों से भरपूर और एक सामान्य जीव से अधिक कुछ नहीं समझता । अहं को पास न आने देना ही नम्रता की कसौटी हैं । फरीद जी आजीवन इससे बचे रहे । लोग उन्हें दरवेश कहते थे लेकिन उन्होनें अपने आपकों इस भयंकर रोग से बचाए रखा । वे अत्यंत नम्रता से कहते हैं :-

फरीदा काले मैंडे कपड़े काला मैंडा वेसु ।।
गुनही भरिआ मै फिरां लोक कहै दरवेसु ।।91।।

सांसारिक नश्वरता का चित्रण करते हुए अनेक सिद्ध साधक पुरुषों ने इस संसार से लिप्त न होने की बात कही हैं । यही कारण है कि सभी महापुरुष अपने अनुभव के बल पर मनुष्य को अच्छाई और सच्चाई के मार्ग पर चलने का सन्देश देते हैं । फरीद जी ने भी अपने काव्य में यत्र-तत्र संसार की नश्वरता का चित्रण किया हैं । वहां उसका प्रयोजन भय पैदा करना नहीं संसार से पलायन की प्रेरणा देना भी नहीं ।

नका अभिप्राय तो अच्छे कामों की और उन्मुख करना है। वे विलासिता से विमुख होने की और संकेत करते हुए कहते हैं :-

फरीदा कोठे मंडप माडीआं एतु न लाए चितु ।।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु ।। 57 ।।

अन्यत्र वे लिखते हैं

जे जाणा मरि जाईऐ घुंमि न आईऐ ।।
झूठी दुनिआ लगि ना आप वंझाईऐ ।।2।।

फरीद जी अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे उन्होने अपनी लेखनी के द्वारा जनता को सन्मार्ग दर्शाया । अज्ञान के तिमिर को दूर करके ज्ञान की और प्रेरित किया । इसके लिए किसी न किसी गुरु पीर की शरण में जाना पडता हैं । गुरु ही माया अथवा विषय विकारों के पर्दे को हटा कर और ज्ञान का दीपक जला कर मनुष्य के लिए सदाचार का पथ आलोकित करता हैं जिस पर चल कर मनुष्य सांसारिक कष्टों से मुक्ति पा कर अपने जीवन को सफल करता हैं । गुरु ही ईश्वर प्राप्ति में सहायक हैं । कबीर जी ने कहा है :-

कबिरा ते नर अन्ध है गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु ठौर है , गुरु रूठे नहीं ठौर ।।

फरीद जी ने भी गुरु की शरण में जाने और गुरु के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त करने वाले व्यक्ति को संकटों से मुक्त कहा है । गुरु ही इस भव-सागर से पार लता सकता है । जो गुरु की शरण में जातें है और उसे अपनी सेवा से प्रसन्न करते हैं उन्हे किसी प्रकार की आंच नहीं आती ।

फरीदा भूमि रंगावली मंझि बिसूला बाग ।।
जो जन पीर निवाजिआ तिनां अंच न लाग ।।82।।

फरीद जी ने सब्र और सन्तोष को अच्छे गुणों में सर्वश्रेष्ठ माना हैं । लेकिन यह भावना तभी आ सकती है अगर मनुष्य ईश्वर की इच्छा को सर्वोयरि मानकर उसी की इच्छा अनुसार कार्य करता हुआ प्रसन्न रहे । उसका हुक्म माने । उसकी रजा में राजी रहे इसी में मनुष्य में सहनशीलता और सन्तोष की भावना प्रबल होती है । फरीद जी कहते हैं कि जो मनुष्य उस ईश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करता है वह अपने जीवन में कभी भी भटक नहीं सकता । इतिहास साक्षी है जिसने भी अपने आपको उसकी (प्रभु की) रजा के आगे समर्पित किया उसी को सांसारिक विषयों से मुक्ति मिली । वह सादगी से जीवनयापन करके भी महानता को प्राप्त हुआ । यही सच्चा मार्ग हैं । यह सदाचार का मार्ग हैं । साधक के लिए उसकी (ईश्वर की) इच्छा (हुकम) ही सर्वोपरि है । फरीद जी के अनुसार :-

कंधी वहण ना ढाहि, तउ भी लेखा देवणा ।।
जिधरि रब रजाइए वहणु तिदाऊ गंउ करे ।।74।।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम देखते हैं कि फरीद जी ने अपने काव्य में उन सभी मानवीय गुणों को भली प्रकार संजोया हैं जो एक आदर्श मानव के लिए अनिवार्य होते हैं । उन्होने अपनी कविता में कटु से कटु सत्य को भी इतनी नम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कहीं भी उपदेशात्मक नीरसता का आभास नहीं होता । अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति भी उनकी कविता में सहज ही हो गई हैं । वे स्वयं नैतिक गुणों

की प्रति मूर्ति थे । सादा जीवन उच्च विचार के धारक शेख फरीद का जीवन नैतिक गुणों से ही ओत प्रोत था । उनके नैतिक गुण व्यष्टि से समष्टि की और अग्रसर होते हैं । उनके अनुसार अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने अवगुणों को देख कर अपने को सुधार ले तो सारे समाज का सुध ार करने की क्या जरूरत हैं ? समाज स्वतः सदाचारी हो जाऐगा ।

फरीद व्यक्तिगत चेतना पर बल देते हैं । वे मनुष्य को आत्मबोध के लिए प्रवृत्त करते हैं । आत्मालोचन सबसे अनिवार्य तत्त्व हैं आत्मबोध के लिए । मनुष्य दूसरों की अपेक्षा अपनी आलोचना स्वयं करे। अपने अवगुणों को दूर करे । अहं से दूर रहे । सत्य का मार्ग अपनाए । हिंसा का मार्ग त्यागे । बुरे के साथ भी भला करे । इसी से मनुष्य अपने को अन्य मनुष्यों से ऊपर उठा सकता हैं । यही गुण सदाचार की नींव बनते हैं । जिस पर नैतिकता के आदर्शो का प्रासाद निर्मित होता हैं । तब ईश्वरीय प्रेरणा से मनुष्य निःर्स्वाथ भाव से परोपकार, क्षमा, दया, प्रेम नम्रता, त्याग, सन्तोष, धैर्य सहनशीलता, अहिंसा, सेवा आदि मानवीय गुणों का अनुसरण स्वयं करने लगते हैं क्योंकि सत्य स्थाई होता हैं । मानव प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम हैं । अतः मनुष्य मात्र के प्रति सद्वृति रखना ही सच्ची भक्ति हैं । यही नैतिकता का मुख्य आधार हैं । ऐसे आदर्शो को अपनाने वाला व्यक्ति ही सार्वभौमिक एंव सार्वकालिक ख्याति प्राप्त कर सकता -हैं । इसी से विश्वबन्धुत्व एवं मानव-एकता की भावना पनपती हैं ।

फरीद जी की कविता इन्ही नैतिक आदर्शों का प्रेरणा स्रोत हैं । फरीद जी ने नितान्त निजी अनुभवों से पूर्ण नैतिक आदर्शों को ही अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है जो आज भी भटके हुए लोगों का पथ-प्रदर्शन करते हैं ।

शेख फरीद की वैराग्य–भावना

अनासक्ति सामान्य अर्थो में सांसारिक पदार्थो विषय–विकारों एवं एषणाओं से विरक्ति की अवस्था है । भोगो के प्रति आकृष्ट न होना आत्मनियन्त्रण द्वारा संयमित जीवन व्यतीत करना ही अनासक्त होना है । अनासक्ति कदापि कायरतापूर्ण अथवा पलायनवादी प्रवृति नही है, न ही यह निवृत्ति मार्ग है । इसका मार्ग अनुशासित होता है जो मन की चंचलता पर नियन्त्रण करता है।इसमे सदाचार की भावना नितान्त अपेक्षित है। संसार के लगभग सभी धर्मो ने वैराग्य की स्थिति को साधना और इष्ट की प्राप्ति में सरल एवं श्रेष्ठतम मार्ग बताया है । जो मनुष्य अनासक्त भाव से कर्म करता है वह निरन्तर कर्म करता हुआ परमात्मा को पाने में सक्षम होता है । इसके विपरीत जो कर्मो मे आसक्त होता है वह संसार के कार्यो में उलझ कर रह जाता है। गीता में इस भाव को इस प्रकार कहा गया है ।

"तस्मादासक्तः सनतं कार्य कर्म समाचार ।
असक्तों ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः ।।"।। 3/19

भगवान कृष्ण अर्जुन को निरन्तर कर्म करने और फल की इच्छा न रखने का उपदेश देते हुए कहते है कि हे

अर्जुन! तू अनासक्त हुआ निरन्तर कर्म करता हुआ अच्छी प्रकार आचरण कर क्योंकि अनासक्त पुरुष, कर्म करता हुआ, परमात्मा को प्राप्त होता है ।''

शेख फरीद की वैराग्य भावना का अध्यात्मवाद के अन्तर्गत रहस्यवादी भावना की एक अवस्था के रूप में अध्ययन किया जाए तो यह विरह के रूप में आत्मा और परमात्मा की संयोंगावस्था के अधिक निकट ले जाने में सहायक है । फरीद की वैराग्य-भावना अनासक्ति की सी स्थिति तो पैदा करती है इसके साथ ही विरह या वियोग की टीस भी अनुभव होती है जो अपने प्रियतम से मिलने की तीव्र आकांक्षा बन जाती है । यही विरह प्रियतम से मिलने का मार्ग प्रशस्त करता हैं । जीवात्मा को संसार की कोई वस्तु नही लुभाती । यही भावना मानव मन मे विरक्ति पैदा करती है । यही विरह मिलन मे सहायक सिद्ध होता है । इसीलिए शेख फरीद ने विरह को सुलतान कह कर सम्बोधित किया है ।

''बिरहा बिरहा आखीऔ, बिरहा तु सुलतानु,
फरीदा जितु तनि बिरहु न उपजे
जो तनु जानु मसानु ।।36।।

फरीद जी के अनुसार मृत्यु निश्चित है और शरीर नाशवान । कर्मो का फल हर मनुष्य को मिलना है । अन्त में मनुष्य इसीलिए निराश और उदास होता है क्योंकि उसका शरीर मिट्टी हो जाएगा । ऐसी स्थिति मे फरीद जी मनुष्य को सावधान करते हुए कहते है कि अगर मृत्यु निश्चित है तो फिर इस झूठे संसार और नाशवान शरीर से मोह करने की अपेक्षा ईश्वर से प्रीति करो ।

"जोबन जादे न डरां जे सह प्रीति न जाइ ।।
फरीदा किती जोबन प्रीत बिनु सुकि गए कुमलाइ ।।34।।

संसार जिस जवानी का इतना अभिमान करता है । फरीद जी प्रभु के आगे उसे तुच्छ और त्याज्य मानते है उनकी जवानी भले चली जाए मगर प्रभु प्रेम न जाए ।

शेख फरीद की वाणी सांसारिक क्षण-भंगुरता मर मृत्यु की निश्चितता और वृद्धावस्था का एहसास कराते हुए विरक्ति का वातावरण बनाने के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार करती है । आयु कितनी भी लम्बी हो अन्त में शरीर ने मिट्टी ही होना है । बुढ़ापा मृत्यु का संकेत है मनुष्य के लिए चेतावनी है ।

बुढा होआ शेख फरीद कंबणि लगी देह, ।।
जे सउ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ।।41।।

अत: दीर्घायु की अपेक्षा इस संसार में आनन्द दायक जीवन बिताने की कामना न करते हुए अपनी मंजिल को पहचानने की कोशिश कर । अपने जीवन को सार्थक बना । ईश्वर ही तेरा उद्धार कर सकता है । उसे याद रख । अन्त में तुझे उसी की शरण में जाना है । काल सबसे शक्तिशाली है उससे तू बच नही सकता । अत: अपने धन और ऐश्वर्य का अभिमान मत कर ।

फरीदा मंडप मालु ना लाइ मरग सताणी चिति धरि
साई जाइ समालि जिथै ही तउ वंझणा ।।58।।

फरीद जी ने अपने को अहं से सदैव मुक्त रखने पर अंकुश लगा कर संसार मे रहते हुए भी विकारों में संलिप्त होने से बचाया । उनका समूचा जीवन एक दरवेश (फकीर) का जीवन है । जिसमें संयम, सब्र,

सन्तोष, सहनशीलता का प्राधान्य है । दरवेश संसार में रहते हुए भी विरक्त भाव से रहता है । वह वस्तुओ के संग्रह में विश्वास नही करता । दरवेश का (फकीर) का जीवन कठिन होता है । वस्तुओं के रहते भी उनका उपयोग न करना । मन की चंचलता पर नियन्त्रण, इच्छाओं का दमन करना, ईश्वर के प्रति आश्वस्त रहना सचमुच कितना कठिन है । कथनी और करनी का अन्तर मिटा कर फरीद जी ने आजीवन इस संकल्प को निभाया । मार्ग में आने वाली प्रत्येक कठिनाई को साहस से झेला लेकिन विचलित नही हुए वे लिखते हैं ।

फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनियां भति।। ।।
बन्नि उठाई पोटली किथै वंझा घति ।।2।।

इस दरवेश के वेश को धारण करना प्रत्येक मनुष्य के वश की बात नही है कोई अत्यन्त विरक्त, सहनशील और विनम्र प्रकृति वाला व्यक्ति ही इसे ध ारण कर सकता है ।

फरीदा साहिब की करी चाकरी दिलदी लाहिभरांदि।।
दरवेसां नो लोड़ीअै रूखा ही जीरांदि ।।6।।

निश्चय ही दरवेश अपने निस्वार्थ भाव से दूसरों के परोपकार में जुट जाता है । वह निज से पर की और अग्रसर होता है । वह अपने लिए नहीं दूसरों के लिए

मांगता है । अपने पराए का भेद मिटा कर वह तद्‌रूप हो जाता है । यहीं अहं का नाश हो जाता है । वास्तव में देखा जाए तो अहँ भाव ही संसार में आसक्ति पैदा करता है । अगर मनुष्य इस से मुक्त हो सके तो मनुष्य के मन में विरक्त भाव अपने आप पैदा हो जाते हैं । फरीद जी ने स्थान–2 पर अपनी वाणी में अपने आप को गुणहीन बताया है ।

फरीदा ने तू अकलि लतीफ काले लिखु न लेख ।। ।।
आपनड़े गिरीवान महि सिरू नीवा करि देख ।।6।।

शेख फरीद ने अपनी वाणी में स्थान–स्थान – पर सांसारिक अस्थिरता, शरीर की नश्वरता तथा प्रभु के स्मरण का वर्णन किया है । फरीद जी बार–बार कहते है कि हे मनुष्य यह जीवन बीतता जा रहा है ।

फरीदा जा तउ खटण वेल ता तू रता दुनी सिउ।।
मरग सवाई नीहि जा मरिया ता लदिआ ।।8।।
देख फरीदा जु थीआ दाढ़ी होई भूर ।।
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिया दूरि ।।9।।

फरीद जी ने मनुष्य को सावधान करते हुए मृत्यु के अनेक सन्दर्भो से अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है । उन्होने वृद्धावस्था को मृत्यु का संकेत बताया है और कहा है जीवन क्षणभंगुर है अतः मनुष्य को जीवन का गर्व नही करना चाहिए ।

फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े संमलि बुकु भरी ।।
जे जाणा सहु नंढडा तां थोड़ा माणु करी ।। 4 ।।

अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित करना चाहिए । स्नेह भाव से बचने के लिए यहाँ के भोग विलासो मे लिप्त नही होना चाहिए । सांसारिक वस्तुओ मे रहकर उनका

उपभोग न करना ही सच्चा वैराग्य है । फरीद जी के अनुसार इच्छाएँ ही विरक्ति मे बाधक है और सांसारिक आसक्ति का मुख्य कारण है । भोग विलास मे लिप्त न रहने वाले व्यक्ति ही सदा दुखी रहते है ।

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावण मेरी भुख ।।
जिन्हां खाधी चोपड़ी घने सहिणगे दुख ।।28।।

फरीद जी के अनुसार मनुष्य को सब्र और सन्तोष से जीवन–यापन करना चाहिए । दूसरो की ऐश्वर्यपूर्ण जिन्दगी देखकर छटपटाना नहीं चाहिए । जो ईश्वर ने दिया है उसी में सन्तोष करना चाहिए ।

रूखी सुखी खाई के ठंडा पानी पीउ ।।
फरीदा देखि पराई चोपडी न तरसाए जीउ ।।29।।

सारा संसार ही दु:खो का घर है अत: मनुष्य को इस भ्रम मे नहीं रहना चाहिए कि केवल मै ही दुखी हूँ प्रत्येक प्राणी दूसरे को सुखी समझता है मगर देखने से उसका भ्रम दूर हो जाता है । दूसरो का दुख देखकर अपना दु:ख कम हो जाता है । फरीद जी मनुष्य को आश्वस्त करते हुए कहते है कि सारा संसार ही इस दुख की आग में जल रहा है ।

फरीदा मैं जानिया दुख मुझ कू दुख सबाइए जगि ।।
ऊंचे चढ़ि के देख़िआ ता घरि घरि एहा अगि ।।81।।

इस दुख से मुक्त होने के लिए फरीद जी ने संसार के भोग विलासो से मुक्त रहने का उपदेश दिया है । फरीद जी स्वयं गृहस्थी थे । आजीवन दरवेश का जीवन व्यतीत किया । वे जल मे कमल के समान निर्लेप भाव से अनासक्त रहे ।

भौतिक पदार्थो से मोह त्याग ही उनका वैराग्य सम्बन्धी सन्देश है । सब महल, माडीया यही रह जाते है साथ कुछ नही जाता ।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीया ऐतु न लाए चित ।।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु ।।57।।

तथा

फरीदा कोठे मंडप माड़ीया उसारेदे भी गए ।।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ।।46।।

फरीद जी ने मृत्यु का चित्रण करते हुए मनुष्य को सावधान किया है कि अपने जीवन के महत्त्व को पहचानो । जीवन का समय निर्धारित है जो बीतने पर लौट कर नही आता । उनका लक्ष्प मनुष्य को मृत्यु से भयभीत करना कदापि नही है । वे मनुष्य को मोह माया और विषय विकारों से मुक्त रहने की प्रेरणा देते है । मनुष्य को अच्छे कर्म करने का उपदेश देते है और बुरे कर्म से दूर रहने के लिए कहते है ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमडे विसारि
मतु सरमिंदा थीवही सांई दे दरबारि ।।59।।

फरीद जी की वैराग्य भावना अत्यन्त उदारवृति की पक्षधर है । उन्होने संसार के त्याग की अपेक्षा संसारिकता के त्याग पर अत्यधिक बल दिया है । उन्होने जंगलो मे जा कर जप-तप करने की अपेक्षा अपने आपको उस ईश्वर के प्रति समर्पित करना श्रेष्ठ माना है जो मनुष्य के हृदय मे निवास करता है । उनके अनुसार संसार में रहते हुए उदासीन भाव से विचरण ही सच्चा वैराग्य है ।

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वण कंडा मोडेहि ।।
वसी रब हिआलीअै जंगलु किआ ढूढेहि ।।19।।

सभी प्राणियो मे उसी ईश्वर का निवास है । वह सृश्ष्टि के कण-2 मे विद्यमान है । अत. उसे ढूंढने की आवश्यकता नही है । किसी से भी दुर्व्यवहार न करो किसी का दिल न दुखाओ क्योंकि

इक फिका न गालाइ सभना मै सचा धनी ।
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ।।29।।

जब वह ईश्वर कण-कण मे विद्यमान है तो उसे पाने के लिए मात्र अपने हृदय को ही टटोलने की आवश्यकता है भटकने की नही अंहकार का त्याग, नम्रता, सद्भाव आदि गुणों से उसकी प्राप्ति सम्भव है तो फिर संसार का त्याग नही सांसारिकता के त्याग की आवश्यकता है । वास्तव में यही वैराग्य है । सब कुछ होते हुए भी किसी वस्तु की इच्छा न करना । पांचों विकारो से दूर रहना । आत्म नियन्त्रण रखना ।
संयम से जीवन-यापन करना ही वास्तव में वैराग्य है । शेख फरीद ने अपनी वाणी में कहीं भी संसार से पलायन की बात नहीं कहीं । उन्हाने हमेशा सांसारिकता से दूर रहने का उपदेश दिया हे । शेख फरीद की वैराग्य भावना जल मे कमल के सामान संसार मे रहते हुए भी अनासक्त रहने, भोग विलासो से दूर रहने तथा सब्र सन्तोषपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए अपने इष्ट (प्रेमी) से मिलने का प्रयत्न करते हुए जीवन व्यतीत करने का सन्देश देती है । उनकी सम्पूर्ण वाणी इसी सद्भावनापूर्ण वैराग्य भावना से ओतप्रोत है ।

काले लिखु न लेख

(लघु नाटक)

पात्र

1	अतीत	वृद्ध पुरूष
2	जिज्ञासा	नवयुवती
3	नत्था	(पांच–छः लडके)
4	रामू	आयु 10–12 वर्ष
5	अब्दुल्ला	
6	पहली लडकी	नवयुवतियां
7	दूसरी लडकी	,,
8	मजदूर एक	युवा
9	मजदूर दो	
10	मजदूर तीन	प्रौढ़
11	सुभद्रा	
12	गुरमीतो	प्रौढ़ स्त्रियां
13	साजदा	

एक साधारण ग्रामीण नवयुवती मंच पर धीरे–2 चलते हुए कुछ ध्यान पूर्वक सुनने का प्रयास करती हुई आगे बढ़ रही है । फिर घूम कर कभी इधर कभी ऊधर मुड़कर सुनने समझने का अभिनय करती

हुई किसी को ढूँढने की कोशिश में लीन दिखाई देती हैं ।
गुरुवाणी का शब्द :

फरीद गलीए चिकडु दूरि घरि ....

पूर्व पीठिका

जिज्ञासा : (स्वगत कथन) सचमुच कितनी मधुरवाणी हैं । मानों कानों में मिश्री की सी मिठास घुल गई हैं । हृदय की गहराईयों को छूने वाली यह वाणी किसकी है ? किससे पूछूँ ? कोई है भी तो नही यहाँ...........

अतीत का प्रवेश

(इतने में एक वृद्ध पुरुष नजर आता है । वह भी फरीद वाणी गुनगुना रहा है और अपने ध्यान में चला जा रहा हैं ।

जिज्ञासा : (देखकर) बाबा बाबा (सुनता ही नही)

अतीत : ओहो कौन है भई – तुमने पुकारा मुझे

जिज्ञासा : हां बाबा, मैने ही पुकारा हैं

अतीत : कौन ? तुम जिज्ञासा हो न ?

जिज्ञासा : हां बाबा (आश्चर्य से) लेकिन आप ?

अतीत : मुझे नहीं जानती – मैं हूँ अतीत। मेरी अवस्था से ही अनुमान लगा लिया होगा । जो तुम पूछना चाहती हो वह मैं सब जानता हूँ । वैसे जानती तुम भी हो मगर जिज्ञासा हो न इस लिए कभी तृप्त नहीं होती ।

जिज्ञासा : तुमने ठीक पहचाना अतीत बाबा, मैं जिज्ञासा हूँ

अतीत : हाँ जानता हूँ कुछ न कुछ पूछते रहना तुम्हारा स्वभाव बन गया है ।

जिज्ञासा : ठीक क़हते हो – आप यह मधुर स्वर सुन रहे हो न ।

अतीत : हाँ सुन रहा हूँ बेटी ।

जिज्ञासा : किसकी है यह इतनी मधुर वाणी जो कानों में रस घोल रही हैं । हृदय को स्पर्श कर रही है ।

संगीत : वही स्वर गुरुवाणी-गलीए-चिकडु दूरि घारि

अतीत : यह पंजाब के प्रसिद्ध सूफी संत बाबा शेख फरीद की अमर वाणी है जो 12वी शती में हुए हैं ।

जिज्ञासा : वही फरीद जिन्हें गंज-ए-शकर कहा जाता हैं।

अतीत : हाँ गंजे-शकर यानि मिठास का खजाना । फरीद का अर्थ ही बेजोड़ होता हैं फरीद सचमुच बेजोड़ थे । अनुपम अद्भुत । अब तो पता चल गया न तुझे ।

जिज्ञासा : नही बाबा और बताओं, कुछ बाबा फरीद के बारे में बताओं न जरा विस्तार से ।

अतीत : सुन-शेख फरीद का जन्म गांव कोतवाल जिला मुल्तान में हुआ था । वही एक मदरसे में आरम्भिक शिक्षा पाई । बचपन में ही इन्हे कुरान शरीफ याद हो गया था ।

जिज्ञासा : ऐसा लगता हैं जैसे आरम्भ में ही इनके मन में ईश्वरीय प्रेम को ज्योति आलोकित थी ।

अतीत : बिल्कुल ठीक समझा तूने बेटी, मगर अभी तेरी जिज्ञासा शान्त नही हुई होगी ।

जिज्ञासा : जब आप जानते है तो और विस्तार से बताईए न बाबा फरीद जी के जीवन के बारे में ।

अतीत : बाबा फरीद ने उस समय के प्रसिद्ध सूफी फकीर ख्वाजा बख्तियार काकी को अपना गुरु धारण किया और प्रसिद्ध सूफी ख्वाजा मीअनुदीन चिश्ती के सम्पर्क मै आए । इस के बाद इन

के जीवन में कुछ घटनाएँ भी घटी । कुछ कष्ट भी सहन किए ।

जिज्ञासा : वह क्या बाबा ?

अतीत : बेटी ! (खाँसने लगता है) तू तो जानती है मैं बूढा और कमजोर हो गया हूँ और ज्यादा बोल नहीं सकता । मैं तुम्हे अपने साथ अतीत में ले चलता हूँ - तू खुद समझ जाएगी ।

जिज्ञासा : चलो बाबा ....चले जाते है ।

दृश्य - एक

नत्था : एक लड़का उदास बैठा है, दूसरा (रामू) आकर उसे बुलाता है ।

रामू : उए नत्था सिंह! कैसे बैठा है तू यहाँ मुरझाया हुआ सा पिचके हुए गेंद की तरह मुहँ बनाकर । तेरे साथी सब कहां गए ?

नत्था : क्या बताऊँ यार रामू कल मेरा उनसे झगड़ा हो गया मेरे से उनकी गेंद गुम हो गई बस नाराज हो गए ।

रामू : बस इतनी सी बात है ? इसका हल मैं बताता हूँ । तू उनकी गेंद लौटा दे वे सब मान जाएगें ।

नत्था : लेकिन मैं गरीब आदमी गेंद कहा से लांऊ ? हमारे घर में तो पहने को कपड़ा नही मिलता मैं गेंद किससे बनाऊँ ? उसके लिए तो बहुत सा कपड़ा चाहिए ।

रामू : लगता है तुम्हारे साथी इधर ही आ रहे है ।

अब्दुल : लो-वह बैठा है राझां बन के योगी । क्या ओए-गेंद नही दे सकता तो न सही हँस के बोल तां सई ।

नत्थू : कल तो सारे अकड़ रहे थे आज क्या करने आए हो ?

अब्दुल : छोड़ यार गुस्सा ।
(सभी लड़के एक दूसरे को संकेंत करते है –आँखों से) मेरी बात सुन, हम तुम से गेंद नही मागते । तू हमारा एक काम कर दे ।

नत्था : क्या ?

अब्दुल : पहले बोल करेगा ?

नत्था : बता तो सही ।

अब्दुल : तू गेंद नही न दे सकता, हम खुद बना लेंगे

नत्था : क्या मूर्खो जैसी बातें करता हैं । मेरे पास कपड़ा होता तो मैं दे देता ।

अब्दुल : तू भी बुद्धु ही है । तू बात समझा नहीं । एक दरखत पर कपडा लटक रहा है लेकिन उस पेड पर केवल तू ही चढ़ सकता हैं ।

नत्था : कौन सा पेड ?

अब्दुल : वही पेड जिस पर तू रोज चढ़ता हैं और तुझे कोई पकड़ नही सकता क्योंकि उस पर हममें से कोई चढ़ ही नहीं सकता ।

नत्था : दिखाओ ज़रा । (उठ कर खड़ा हो जाता है) सभी चले जाते हैं
(स्टेज पर दो चार चक्कर लगाकर)

दृश्य : एक पेड़ पर कपडा लटक रहा हैं गोदड़ी जैसा ।

अब्दुल : यह देखो (पेड़ की और हाथ करके)

नत्था : वाह ! इसकी तों बहुत सुन्दर गेंद बनेगी। इसमें पेड़ पर चढ़ने की जरूरत ही नहीं तुम

जरा घोड़े बनों, मैं दो मिंट में उतार देता हुँ (बच्चे घोड़े बनते है, ऊपर तीन मंजिल पर चढ़ कर कपडा उतार लेता हैं)

रामू : चलों अब इसकी गेंद बनाते हैं ।

अब्दुल : ओए ! गेंद नही होती तुम्हे कितनी बार समझाया है कि यह खुद्दो होती है खुद्दो, याद रखना ।

रामू : अच्छा , खुद्दो ।

अब्दुल : ओए ! मुझे खुद्दो कहता हैं ।

रामू : नही खुद्दो ।

अब्दुल : (आँखे दिखा कर) फिर वही ।

रामू : नही भाई खुद्दो मैंने खुद्दो को खुद्दों कहा हैं। (रामू भाग जाता हैं) (रामू के पीछे भागता है) और सभी खुद्दो बनाने में मस्त हो जाते हैं । सभी अभिनय करते हुए लकडी तोड कर खुंड्डियां बनाते हैं और खेलते है)

दो युवा लडकियों का प्रवेश

दो लडकियाँ : सिर पर रोटियों का टोकरा और मटकी उठाए गुजर रही है । एक लड़के की उस से टक्कर हो जाती है । लड़की गुस्से से कहती है।

लड़की : ''दिखता नही है क्या ? तेरी सरपंच से शिकायत कर दूँगी, तुमने जानबूझ का टक्कर मारी है ।

लड़का : ''जा जा मैं नही डरता सरपंच से, चाचा सरपंच है तो रोब दिखाती हैं ।

लड़की : ''जब सारी पंचायत के सामने बहन कहकर माफी माँगनी पड़ी तो नानी याद आ जाएगी ।

लड़का : "यह धमकियां किसी और को देना"

दूसरी लडकी "इनके मुंह क्यों लगती हो, हमें पहले ही देर हो चुकी है ।"

पहली : (गोदड़ी की और देखकर)
"हाय री! ये तो उसी फकीर की गोदड़ी हैं जिसके हम ने उस दरखत के नीचे दर्शन किए थे, ये उस के कन्धे पर थी"

दूसरी : "हां, यह तो सचमुच वही है, बडे बदतमीज है ये लडके ।"

पहली : "चलों हमें क्या, फकीरों से मज़ाक करने वालों को वाहिगुरु खुद सजा देगा ।"

दूसरी : "बड़ी करनी वाला फकीर है, पता नहीं इन्होने कैसे छीन ली होगी उस से यह गोदड़ी और खुद्दों बना कर खेल रहे हैं ।

पहली : "फकीर मौजी होता है, हो सकता है वह खुद ही दरखत पर छोड़ कर कही चला गया हो"

दूसरी : चल री मुझे भी बातों में लगा लेती है
(दोनो चली जाती है ।)

गुरबानी शब्द: फरीदा जे तै मारिनि मुकीआ तिनां न मारे घुम्म ।

आकाशवाणी

हे फरीद । तूने अपनी प्यारी गुरु प्रदात्त गोदडी को यहाँ सुनसान में अकेले छोड कर बहुत बडी भूल की है । मैं यहा तेरे वियोग में तड़प रही हुँ । देखे तेरे बिना मेरी क्या दशा हो रही है । हे प्यारे फरीद ! देखो तुम्हारे विरह में मेरे शरीर के टुकडे-2 हो गए है ।

कहां चले गए हो मेरे फरीद-लौट-आओ मेरे फरीद --------पर्दा

शब्द : बिरहा - 2 आखीऐ
बिरहा तू सुलतानु

दृश्य-दो

दो मजदूर आपस में बाते कर रहे हैं । दरोगा दो मिन्ट भी चैन नहीं लेने देता । सिर पर ही सवार रहता हैं । यहां दो मिन्ट आराम नहीं है । उनके हाथ में टोकरे पकडे है । मुँह और कपडों पर मिट्टी-गारा है। एक मजदूर भागा हुआ हांफतें हुए आता है - अरे अरे

दोनो मजदूरः क्या है ? (एक साथ)

तीसरा : कुछ सुना तुमने

दोनो : नहीं (एक साथ)

तीसरा : अरे कल जो फकीर पकड कर लाए थे न वगार (अवैतनिक काम) के लिए

दोनो : हां, उसे क्या हुआ ? (एक साथ)

तीसरा : नही, मै नही बता सकता ।

दोनो : पागल हो गया है । (एक साथ) बता क्यों नहीं सकता, क्या हो गया है उसे?

तीसरा : वह कोई आम आदमी नही दरवेश है दरवेश, सच्चा दरवेश ।

दोनो : तुझे कैसे मालूम ? (एक साथ)

तीसरा : कल जब राजा मोकलसी ने उसे मिट्टी गारा लाने के लिए मजदूरों के साथ भेजा और मजदूरों ने उसके सिर पर मिट्टी का टोकरा रखा तो, वाह अल्लाह, मेरे मौला, तेरी कुदरत! टोकरा उसके सिर पर तैरने लगा पर दूसरों

से ज्यादा दुगने वजन वाला टोकरा बिना किसी कठिनाई से उठाता रहा ।

नो : हैरान होकर, अच्छा ।
फिर क्या हुआ । (एक साथ)

ीसरा : बस फिर क्या होना था किसी ने राजा को बताया । राजा ने खुद महल से देखा । फिर क्या था ।

ोनो : फिर क्या हुआ ? (दोनो)

ीसरा : राजा , उस दरवेश के पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा । मुझे माफ कर दो । कह कर बार बार बिलखने लगा ।

ोनों : फिर उसने माफ कर दिया क्या ?

ीसरा : दरवेश बडे कृपालु होते हैं । वह किसी का बुरा नहीं सोचते । वे तो बुरा करने वाले का भी भला चाहते हैं । राजा को माफ करने के बाद वह दरवेश एक दम चला गया ।

दोनो : कहां चला गया ? (दोनों)

तीसरा : असल वे अपने गुरु की दी हुई गोदडी किसी दरखत पर भूल आया था उसी के कारण शायद दसे यह कष्ट मिला जब उसे याद आया तो वे गोदड़ी लेने चला गया ।

दोनो : लौट कर आएगा वह ? (दोनो)

तीसरा : अवश्य आएगा–राजा ने उसे कुछ दिन यहां रहने की प्रार्थना की है । उन्होने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली हैं ।

दोनों : चलो हम लोग भाग्यशाली हैं जो हम उस महान दरवेश के दर्शन कर सकेगें । भाग्यशाली तो है ही । जो ऐसे करनी वाले महात्मा के चरणों की धूल अपने मस्तक को लगाने को मिलेगी ।

तीसरा : सुना है गोदडी को त्यागने का पश्चाताप करने के लिए उस दरवेश ने चालीस दिन तक किले के सामने कठिन तप करने का दृढ़ संकल्प किया हैं ।

दोनो : धन–2 वाहिगुरु
सत्तनाम श्री वाहिगुरु
तेरी लीला अपरमपार -------
अच्छा भाई चलो –2
वो देखो सामने दरोगा
इधर ही चला आ रहा है
चले जाते हैं (पर्दा)

शब्द ध्वनि : फरीदा बुरे का भला करि
गुस्सा मन न हडाई ।

दृश्य–तीन

अतीत और जिज्ञासा का प्रवेश

जिज्ञासा : सचमुच सह तो बडी शिक्षाप्रद घटना है कि शिष्य को गुरु का सम्मान करना चाहिए और उसकी दी हुई भेंट को भुलाना नही चहिए ।

अंतीत : नहीं इसके साथ ही यह भी शिक्षा मिलती है कि कोई व्यक्ति धन से कितना भी बड़ा हो उसे अल्लाह का नाम लेने वालों का भी सम्मान करना चाहिए । ईश्वर के बंदे भी ईश्वर का ही स्वरूप होते हैं । दूसरे मेहनत का मूल्य अवश्य चुकाना चाहिए । किसी से बिना मूल्य चुकाए मेहनत नहीं करवानी चाहिए ।

जिज्ञासा : अच्छा बाबा फरीद जी आम लोगों के बीच घूमते–फिरते थे या फिर समाधि लगाकर ही बैंठे रहते थे ।

अतीत : नहीं बेटी फरीद जी स्वयं गृहस्थी थे । जंगलों में जाकर भक्ति करने में उनका विश्वास नहीं था । वे तो स्थान-2 पर जाकर लोगों को अपने अनुभवों से अवगत कराते थे और दूसरे साधारण लोगों से भी शिक्षा ग्रहण करते थे ।

जिज्ञासा : कोई ऐसी घटना सुनाइए न बाबा जिसमें कोई शिक्षा मिलती हो ।

अतीत : हां बेटी फरीद जी जन साधारण से भी अच्छी बातों को ग्रहण करने में संकोच नहीं करते थे ।

जिज्ञासा : वह कैसे बाबा ?

अतीत : मैं तुम्हे उनके समय की एक महत्त्वपूर्ण घटना दर्शाता हूँ ।

जिज्ञासा : अच्छा बाबा बहुत मजा आ रहा है । फरीद जी के जीवन के बारे में जानकर ।

अतीत : बस अब आज इसके बाद और नहीं बताऊँगा !

जिज्ञासा : अच्छा बाबा एक घटना और फिर मैं नहीं कहूँगी ।

अतीत : इस घटना से अनके जीवन में अहम् के नाश और नम्रता की झलक मिलती है । चल आँखे बंद कर -----

जिज्ञासा : लो बाबा, दोनों चले जाते हैं ।

शब्द : फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकु जेड न कोई -- (एक घर के आंगन में कुछ लड़कियां व औरतें काम करते-2 बातें कर रही थी । ग्रामीण संस्कृति की वेशभूषा हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख सभी धर्मो की औरतें एक चर्खा कात रही है । एक चक्की पीस रही थी । एक

अटेरन किए है । ,d pkVh eadk ढूँढ रही है । एक छाज में कुछ छांट रही है ।

सुमद्रा : अरी सुन री गुरमीतों तूने सुना है कि एक दरवेश हमारे गांव में आया है ।

गुरमीत : हाँ सुना क्या, मैंने तो उनके दर्शन भी किये है । क्या नूर है उसके चहरे पर,लम्बा कद चमकीली नूरानी आंखे । जैसे खुदा ने उसे अपनी रोशनी देकर भेजा हो ।

सुभद्रा : सच मैं भी दर्शन करूँगी कहाँ रहता है ?

गुरमीत : रहता कहां है ? रमता जोगी है सच्चा दरवेश है साधना में लीन रहता है, बडा करनी वाला है ।

सुभद्रा : हां सच मैने तो उसके बारे में सुना जो वह कहता है वह सच्च हो जाता है । फरीद नाम है उसका । फरीद का अर्थ होता है अनुपम, अद्‌भुत, बेजोड । वह सचमुच ही बेजोड़ है ।

गुरमीत : तुमने ठीक ही सुना है । अभी कुछ दिनों की बात है । वह जिस पेड़ के नीचे तप कर रहे थे । उस पर कुछ चिड़ियों के घोसलें थे । दोपहर के समय चिड़ियों ने शोर मचाया शुरु कर दिया ।

सुभद्रा : फिर क्या चिड़ियों का तो काम ही हैं शोर मचाना सुना नहीं तुमने लड़कियां और चिड़ियां कभी चुप नहीं बैठती ।

गुरतीम : सुन तो सही, बीच में कहावते डालती रहती है । उस दरवेश को गुस्सा आ गया । उसकी समाधि भंग हो रही थी ।

सुभद्रा : फिर क्या हुआ ?

गुरमीत : बस फिर क्या था । दरवेश ने कहा मर जाओ चिड़ियों । उसी वक्त चिड़ियां पटक पटक जमीन पर गिरती रही और मर गई ।

सुभद्रा : ये तो बहुत बुरा हुआ ।

गुरमीत : यही उस दरवेश ने भी सोचा । उसे बहुत दु:ख हुआ । फिर उसने खुदा से माफी मांगी कि ऐ ईश्वर! यह मुझ से क्या हो गया ?

सुभद्रा : फिर क्या हुआ ?

गुरमीत : उस ने खुदा को याद करके कहा जी जाओ चिड़ियों चिड़ियां पुनः जीवित हो गई ।

सुभद्रा : वाह वाह फिर तो सचमुच अल्ला का पैगम्बर है ।

साज़दा : किस पैगम्बर की बात करती हो । मुझे भी बताओ न कुछ धर्म कर्म की बातें ।

सुभद्रा : आ साजदा बहन, बस कुछ नहीं उस फकीर की बातें कर रहे थे । जो कुछ दिनों से कहीं पुरानी गोदड़ी कों सीने से लगाए घूम रहा है ।

गुरमीत : हां वही जिस ने राजा ने वगार में पकड़ लिया था और बाद में राजा ने चरणों में गिर कर माफी मांगी थी ।

साजदा : सचमुच वह तो बहुत ही करनी वाला है । मैंने तो एक बात और भी सुनी हैं वह कोई साधारण फकीर नही है । सच्चा दरवेश है । रब की बातें भी जानता है ।

सुभद्रा : कोई बात सुना न उस फकीर की मैं तो जरूर उसके दर्शन करने जांऊगी ।

साजदा : ले सुन उसकी करनी की बात ।

सुभद्रा : सुना (काम छोड देती हैं)

साजदा : एक बार वह दरवेश कही जा रहा था । रास्तें में उसे प्यास लगी । उसने देखा कि एक औरत पानी की बालटी कुँए से भर-भर कर बाहर गिराती जा रही है । दरवेश ने वहां पहुंचकर कहा! देवी मुझे पानी पिला दो ।

गुरमीत : फिर उसने पानी पिला दिया ? वह औरत कितनी भाग्यशाली होगी जिसने फकीर को पानी पिलाने का पुण्य कमाया ।

साजदा : नहीं ! उसने ऐसा कुछ नहीं किया । वह पानी की बालटीयां भर-2 कर बाहर गिराती रही ।

सुभद्रा : फकीर को क्रोध नहीं आया ?

गुरमीत : नहीं, वह तो चुपचाप चला गया होगा ।

साजदा : नही, वह गया नहीं, उस औरत की इस क्रिया को ध्यान पूर्वक देखता रहा। उसने एक बार फिर कहा ! मुझे पानी पिला दो ।

सुभद्रा : अबके उसने पानी पिलाया ?

साजदा : नहीं ! उसने कहा ठहरी तुम्हें मालूम नहीं-मैं काम कर रही हूँ ।

गुरमीत : क्या काम कर रही थी ? पानी व्यर्थ ही गंवा रही थी ।

साजदा : यही तो बात रहस्य वाली थी । बस फिर क्या था । फकीर को कुछ समझ नहीं आ रहा था । उसे क्रोध आ रहा था ।

सुभद्रा : उसने श्राप दे दिया उसे ?

साजदा : नही ! उस औरत ने कहा बाबा क्रोध मत कर । मैं चिड़ियां नहीं हूँ जो तेरे कहने पर मर जाऊंगी, और जी पड़ूँगी ।

सुभद्रा : अच्छा उसे कैसे मालूम था । वह फकीर को पहले से जानती थी ।

साजदा : नहीं । इसी बात से तो फकीर भी हैरान था कि इसे चिडियों वाली रहस्यमयी बात का पता कैसे चला । उसने पूछ ही लिया ।

गुरमीत : क्या पूछ लिया ?

साजदा : उसने औरत से पूछा कि तुम ये सब कैसे जानती हो ?

गुरमीत : उस औरत ने क्या कहा ।

साजदा : उस ने कहा मैं पतिव्रता सती स्त्री हूँ मैने पति को सेवा और मोहब्बत के बल पर दूसरों के मन की बात जानने की शक्ति पाई है ।

सुभद्रा : फिर तो सचमुच वह औरत नादान थी जिसने उस दरवेश को पानी नही पिलाया ।

साजदा : नहीं उस दरवेश ने ऐसा नहीं सोचा उसने उससे पूछा कि तुम पानी बाहर क्यों फैंक रही हो ? तो उस औरत ने कहा, मैं पानी ऐसे ही नही फैंक रही थी दूर कहीं मेरी बहन के घर को आग लग गई थी, मैं उसे बुझाने के लिए पानी डाल रही थी ।

गुरमीत : क्या वह फकीर बना पानी पीये ही वहा से चला गया ।

साजदा : नहीं उसने फकीर को पानी भी पिलाया और अपनी साधना का रहस्य भी बिताया ।

दोनो : वह क्या ?

साजदा : उसने कहां 'श्रद्धा और निष्ठा से की गई सेवा वर्षो के तप और साधना से कहीं श्रेष्ठ होती हैं । प्रेम और, नम्रता ही मानव के सर्वोतम आभूषण है ।

सुभद्रा : फिर तो सचमुच वह बहुत महान है ।

साजदा : ओ-हो आप लोगो ने तो मुझे बातों में ही

उलझा लिया, दोपहर सिर पर आई है, मैने तो अभी खाना भी बनाना है ।

दोनो : अच्छा, हम भी चलती है । (पर्दा)

शब्द :

फरीदा जे तू, अकलि लतीफ, काले लिखु न लेख,
आपनड़े गिरीवान महि सिरू नीवां करि देख ।

अतीत और जिज्ञासा का प्रवेश

जिज्ञासा : सचमुच, फरीद जी की अजस्र विचारधारा का प्रभाव व्यापक रूप में फैल रहा है । बाबा इतना और बता दीजिए कि आज के युग में फरीदवाणी का क्या महत्व हैं ।

अतीत : बेटी फरीद जी ने अपने युग में जिस मानवतावादी विचारधारा का सूत्रपात किया था वह आज भी मानव के लिए उतनी ही सार्थक है जितनी उनके अपनी युग में थी । आज के भटके हुए मानव को दिशा निर्देश देती है यह वाणी ।

जिज्ञासा : वह कैसे बाबा मैं कुछ समझी नहीं ।

अतीत : ओहो सीधी सी तो बात हैं । वह ऐसे कि उस समय में भी मानव पारस्परिक वैमनस्य द्वेष और ऊँचनीच जैसी भावनाओं का शकार था और आज भी । फरीद वाणी संतप्त हृदय को शांति प्रेम दया और समता का संदेश देती है । उसके प्रत्येक शब्द मूलमन्त्र के समान हैं । संक्षेप में फरीदवाणी गागर में सागर हैं ।

जिज्ञासा : बहुत अच्छा बाबा आज से मैं भी फरीदवाणी का नियमित पाठ करूँगी और उसपर अमल करने का प्रयास करूँगी । वाणी पढ़ने का

तभी फायदा है जब उसपर अमल किया जाए ।

अतीत : तू बहुत अच्छी बांते करती हैं । इस लिए तू मुझे बहुत भाती हैं । जिज्ञासा वरना आज कल अतीत के लिए समय किसके पास है । जिज्ञासा के बिना मुझे कौन पूछता । तू है तो मेरा भी सम्मान है ।

जिज्ञासा : 'घड़ी देखकर' ओहो बाबा मैं तो बातों में ही खो गई थी सचमुच अतीत भी कभी-2 कितनी अच्छी बातें करता हैं । 'अच्छा बाबा चलती हूँ नहीं तो वर्तमान नाराज़ हो जाएगा' फिर भविष्य का भी तो ध्यान रखना पडता है न बाबा ।

अतीत : अच्छा बेटी कभी-2 वृद्ध अतीत को भी याद कर लिया कर ।

जिज्ञासा : जरूर बाबा, चलती हूँ । पर्दा -------

शब्द : फरीदा काले मेंड़े कपडे काला मैडा वेसु ।

****

था कहा फरीद ने

स्वयं को समझता हैं
आज भी तू ब्रह्मज्ञानी
ऐ मानव ! संभल जरा
यही है तेरी नादानी
शायद इसी लिए था कहा फरीद ने
फरीदा जे तू अकलि लतीफ काले लिखु न लेख
प्राणी सब एक हैं
सभी को समान जान
गुण दूसरों ही के
अपने औगुण पहचान
शायद इसी लिए था कहा फरीद ने
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देख
दूसरे का महल देख
झोंपड़ी न गिराइए
गरीब, मज़लूम को भी
गले से लगाइए
शायद इसी लिए था कहा फरीद ने
जिन्ना खाधी चोपड़ी घने सहिणगे दुःख
सभी में है विद्यमान
सदैव वह सर्वेश
जो यह जान ले
वही सच्चा दरवेश
शायद इसी लिए था कहा फरीद ने
काले मैंडे कपड़े काला मैंडा वेसु
गर लगन हो सच्ची
और दृढ़ हो प्रेम
वर्षा हो, आंधी हो
तो भी टूटे नाही नेम
शायद इसी लिए था कहा फरीद ने
'जाई मिला तिना सज्जणा तुटे नाही नेहु'

बाबा शेख फरीद की अमूल्य शिक्षा

1. बुरे कर्म न करो ताकि अन्त में पश्चाताप न करना पड़े । ।।59।।
2. अभिमान रहित होकर अपने अवगुणों को देखो ।।6।।
3. जो कुछ भगवान ने आपको दिया है उसी में सन्तोष करो ।।29।।
4. पराधीन जीवन से मृत्यु श्रेष्ठ है ।।42।।
5. बुरा करने वाले का भी भला करो ।।78।।
6. परमात्मा जंगलों में नहीं हृदय में निवास करता है ।।19।।
7. खाक (तुच्छ) की भी निन्दा न करो ।।17।।
8. इस संसार में कोई बुरा नहीं है, सभी जीवों में ईश्वर रहता है ।।75।।
9. जैसा कर्म करोगे, वैसा ही फल मिलेगा ।।23।।
10. प्रहार करने पर भी नम्रता का व्यवहार करना चाहिए ।।7।।



डॉ. निर्मल कौशिक

एम.ए., (हिन्दी–संस्कृत–पंजाबी)
एम.फिल.,पी.एच.डी. (हिन्दी)
आयुर्वेदरत्न, संगीतभूषण

सम्प्रति : विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सरकारी बृजेन्द्र कालेज, फरीदकोट

कृतियाँ

(क) १. भाई गुरदास : व्यक्तित्व और कृतित्व २. सिद्ध संस्कृत व्याकरण ३. इन्दु इक बिन्दु दो (पंजाबी भाषानुवाद) ४. सिद्ध जीवन गाथा ५. युग पुरुष : बाबा शेख फरीद ६. कबित्त–सवैये : भाई गुरदास ७. साहित्य विविधा ८. शब्दों की अर्चना (काव्य संकलन) ६. रघुप्रिया (खण्डकाव्य) १०. सूफी दरवेश : बाबा शेख फरीद (पंजाबी) ११. हिन्द रक्षक : श्री गुरु तेग बहादुर जी १२. शुभ चिन्तक (निबन्ध संकलन) प्रैस में १३. वाणी श्री गुरु तेग बहादुर जी १४. सिद्ध हिन्दी शीघ्र बोध – प्रैस में १५. श्री गुरु गोबिन्द सिंह और निर्मल सन्त परम्परा १६. आस्था के फूल (काव्य संकलन) १७. भगवान परशुराम : जीवन और संदेश १८. सूफी साधक : शेख फरीद

(ख) पाण्डुलिपियाँ

१. निर्मल सन्तों की हिन्दी साहित्य को देन २. मेरी पांच कहानियाँ ३. साहित्य सुगन्ध (पंजाबी निबन्ध) ४. टहकदें फुल्ल – (पंजाबी कविताएँ) ५. साहित्य सौरभ (हिन्दी निबन्ध) ६. हिन्दी साहित्य : इतिहास और विकास ७. एकांकी चतुष्टय

(ग) विभिन्न संस्थाओं एवं संस्थानों द्वारा सम्मानित

(घ) विभिन्न पत्रिकाओं और संकलनों में कविताएँ और आलेख प्रकाशित ।



कामायनी कौशिक

एम.ए.,बी.एड., एम.फिल
सम्प्रति :– अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
केन्द्रीय विद्यालय, फरीदकोट ।

कृतियां

(क) १. संक्षिप्त जीवन : गुरु तेग बहादुर (अनूदित) दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी सीसगंज, चांदनी चौक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित । २. रजनी पनिकर की उपन्यास कला (प्रैस में) ३. कनुप्रिया का शैली – वैज्ञानिक अध्ययन (शोध प्रबन्ध) ४. हिन्द–रक्षक : श्री गुरु तेग बहादुर जी ५. हिन्दी शिक्षण और अशुद्धि संशोधन ६. सूफी साधक : शेख फरीद

(ख) विभिन्न पत्रिकाओं और संकलनों में आलेख प्रकाशित ।

(ग). विभिन्न कार्यक्रमों में रेडियो–वार्त्ता प्रसारण ।

कामायनी कौशिक